



दिसम्बर, 2021 □ वर्ष : 67 □ अंक : 03 □ पृष्ठ : 60 □ मूल्य : ₹50

अहिंसक - नातिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अपुत्रत

स्वस्थ व्यक्ति
स्वस्थ समाज...



Nationwide campaign to encourage creativity and positivity in the new generation



COMPETITIONS

WRITING

DRAWING

SINGING

SPEECH

THEME

Protection of Environment Our Responsibility Every Moment

Last date for first phase of school level competition

15 January, 2022

Attractive Awards at National Level

Group-1 : Class 3-5, Group-2 : Class 6-8, Group-3 : Class 9-12

For more information

<https://anuvibha.org/acc>

acc@anuvibha.org

+91-91166-34514

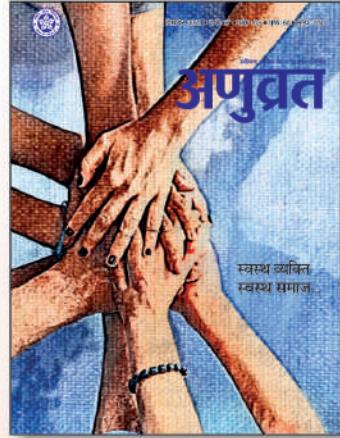


अनुव्रत
विश्व भारती

Anuvrat Vishwa Bharati Society

Associate
Partners





वर्ष 67 • अंक 03 • कुल पृष्ठ 60 • दिसम्बर, 2021

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम



आचार्य श्री तुलसी ने
मानव के
चरित्र-उत्थान को
लक्ष्य बनाकर अणुव्रत
का संदेश दिया। मैं
मानता हूँ, आपने
मानव-कल्याण के लिए
बहुत कुछ किया है।
आप जैसे संत पुरुष ही
मानव-कल्याण की
बात सोच सकते हैं।

— नारायणदत्त तिवारी

• संयोजकीय टीम •
प्रभोद घोड़ावत (संयोजक, प्रकाशन), शांतिलाल पटावरी (संयोजक, पत्रिका प्रसार)
ललित गर्म (संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच), रजनीकांत शुक्ल (सह संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच)
इन्द्र वैंगानी (संयोजक, समाचार संपादन)

टाइपसेटिंग व लेआउट - मनीष सोनी कवर क्रिएटिव - आशुतोष राय चित्रांकन - मनोज त्रिवेदी

कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org

www.anuvibha.org

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512

॥ सदस्यता शुल्क विवरण ॥

एक अंक	— ₹ 50	₹ 350
एकवर्षीय	— ₹ 600	का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर
त्रैवर्षीय	— ₹ 1500	आप अपनी प्रति कोरियर से
पंचवर्षीय	— ₹ 2500	मंगवा सकते हैं।
दसवर्षीय	— ₹ 5000	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
योगक्षेमी (15 yrs.)	— ₹ 11000	केनरा बैंक

A/c No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन-मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गई प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। छाटसेप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।



अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

* स्वस्थ व्यक्ति : स्वस्थ समाज आचार्य तुलसी	06
* अध्यात्म और नैतिकता आचार्य महाप्रज्ञ	08

आलेख

* क्या भारत विश्वगुरु बन सकता है? प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार	10
* धार्मिक स्थानों में अनिवार्य है अणुव्रत प्रो. डॉ. अनेकांत जैन	12
* आजादी की ऊर्जा का अमृत प्रो. संजय द्विवेदी	14
* मुक्ति की पावन दिशा में... विजय सिंह नाहटा	20
* विरासत के कैनवास में... सेवाराम त्रिपाठी	26
* पर्यावरण संरक्षण का मूल मंत्र डॉ. एन.के. खीचा	28
* खिलौने हैं अनमोल पूनम पांडे	34
* 'Anuvrat' a way to respect... Ashok Jain	36

कहानी

* खाली होता शब्दकोश! सुधांशु गुप्त	16
---------------------------------------	----

कविता

* जीते जी मर जाना क्या? डॉ. राकेश चक्र	35
❖ संपादकीय	05
❖ कदमों के निशां	11
❖ अतीत के झारोखे से	22
❖ नशामुक्ति अभियान	30
❖ बरार का शराबबंदी आंदोलन	31
❖ परिचर्चा	32
❖ संवेदन	33
❖ अणुव्रत दिवस	38
❖ अणुव्रत सम्पर्क यात्रा	
* असम-बिहार-बंगाल	42
* बीकानेर संभाग	45
❖ परिणाम Q10 प्रतियोगिता	48
❖ जीवन विज्ञान दिवस	49
❖ इंको-फ्रेंडली अभियान	50
❖ अणुव्रत समाचार	56
❖ पत्रिका उपहार योजना	58



नववर्ष में प्रवेश

अणुव्रत का संदेश

नया वर्ष कुछ ही दिन की दूरी पर है। हम सब किसी न किसी रूप में नये वर्ष का उत्सुकता से इंतजार करते हैं। मन में नये वर्ष को लेकर कुछ कल्पनाएँ होती हैं, कुछ योजनाएँ होती हैं और उन्हें साकार करने के लिए संकल्प होते हैं। ये संकल्प न केवल आने वाले वर्ष की बल्कि हमारे आने वाले जीवन की दिशा भी तय करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

वैसे तो संकल्प लेने के लिए किसी अवसर का इंतजार करना बेमानी होता है, लेकिन नववर्ष या जन्मदिन जैसे अवसर हमें इस ओर सोचने को प्रेरित अवश्य करते हैं। यदि छोटे-छोटे संकल्प लेते रहना आपके स्वभाव में है तो आप अवश्य अनुभव करेंगे कि ये अवसर हमें अपने संकल्पों की दिशा को देखने, समझने और उनकी समीक्षा करने का बहाना देते हैं।

हम अपने संकल्पों को दो कसौटियों पर कस सकते हैं – अभीप्सा और समीक्षा। हमारी कल्पना, योजना और संकल्प हमारी अभीप्सा के प्रकाश में ही आकार लेते हैं। जीवन-लक्ष्य की रोशनी के अभाव में कुछ भी करना अंधेरे में हाथ मारने से अधिक कुछ नहीं। इस तरह कुछ सार्थक भी हाथ लग जाये तो बिना जीवन-लक्ष्य के वह निरर्थक ही साबित होगा।

अभीप्सा को परिष्कृत करने के लिए समीक्षा आवश्यक है। जो लक्ष्य पहले बनाया था वह कितना सार्थक था? उस लक्ष्य की दिशा में गति हुई या नहीं? हुई भी तो कितनी? नहीं हुई तो क्यों नहीं? क्या बाधाएँ उपरिथित हुई? भविष्य में उन बाधाओं को कैसे दूर किया जा सकता है? क्या कहीं संशोधन की जरूरत है? लक्ष्य बना लेना मात्र महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि लक्ष्य को कसौटी पर तौलते रहना और अपनी गति को लक्ष्य की दिशा में केन्द्रित रखना ही सफलता की सुनिश्चितता तय करता है।

आइए, एक जनवरी से पहले कुछ समय हम स्वयं के लिए निकालें। अपने जीवन-लक्ष्य को कांच की भाँति पारदर्शी बना लें और अपने हर एक संकल्प को लक्ष्य की दिशा में मोड़ दें। निश्चय मानिए, स्वयं को समझने और स्वयं को गढ़ने का यह उपक्रम अथाह सुकून देने वाला होगा।

इस प्रक्रिया में ‘अणुव्रत’ में अंतर्निहित दो शब्द ‘अणु’ और ‘व्रत’ हमारे लिए पथदर्शक हैं। हमारा लक्ष्य बड़ा हो और उस ओर बढ़ने के पड़ाव छोटे हों, व्रत छोटे हों और उन्हें निभाने का जज्बा बड़ा हो, अणुव्रत का अनुपम दर्शन बहुत खूबसूरती से यह कला हमें सिखाता है। अणुव्रत हमें यह भी सिखाता है कि अपने व्यक्तित्व को बनाने का जिम्मा हम स्वयं संभालें, न कि इसे किसी और के हाथों में सौंप दें। हम अपनी दुनिया स्वयं गढ़ें, न कि खुद दुनिया के हाथों का खिलौना बन जायें। अपने सुख और चैन की चाबी अपने हाथ में रखें, न कि अपने आसपास की परिस्थितियों के हवाले कर दें।

आइए, नववर्ष में अणुव्रत को अपना हमसफर बनायें और एक सफल सार्थक जीवन की ओर कदम बढ़ा दें, हार्दिक शुभकामनाएँ।

सं.जै.
sanchay_avb@yahoo.com





स

माज, व्यक्ति या राष्ट्र कोई भी हो, स्वस्थ होना सबके लिए आवश्यक है। स्वरिमन् तिष्ठतीति स्वस्थः—जो अपने आप में रहता है, वह स्वस्थ है। सुशोभनानि अरथीनि यस्य सः स्वरथः—जिसकी अस्थियां मजबूत होती हैं, वह स्वस्थ है। अध्यात्म शास्त्र और शरीर शास्त्र की इन दो परिभाषाओं का समन्वित रूप स्वस्थता की संक्षिप्त एवं सारगर्भित व्याख्या है।

स्वस्थ कौन हो ? व्यक्ति का स्वास्थ्य बुनियाद है। व्यक्ति—व्यक्ति के योग से समाज बनता है। यहां समाज का स्वास्थ्य अभिप्रेत है। समाज हो और वह व्यवस्थित न हो तो उसकी संरचना नहीं हो सकती। स्वस्थ समाज संरचना की कल्पना जितनी सुखद है, उस रूप में काम हो जाये तो मनुष्यों का लोक बहुत सुन्दर हो सकता है। समाज व्यवस्था में उभरने वाली विकृतियों को देखकर स्वस्थता की बात आकाश कुसुम बन रही है। ऐसी स्थिति में इस विषय पर सोचना भी आश्चर्य जैसा लगता है।

स्वस्थ समाज संरचना — तीन सकारादि शब्दों के योग से बना यह शब्द या वाक्य शब्द संयोजना की दृष्टि से मन को लुभाने वाला है। पर इसकी चिन्ता किसको है? सब लोग अपनी दाल-रोटी में मरते हैं। बहुसंख्या भारतीय जनता का चिन्तन वैसे भी बहुत संकीर्ण है। वह जिस स्थिति में रह रही है, उसी में संतुष्ट है। उसकी दाल-रोटी में कोई व्यवधान नहीं आता है तो देश की सुव्यवस्था या दुर्व्यवस्था की उसे कोई चिन्ता नहीं होती।

इस देश के फुटपाथों पर जिंदगी बसर करने वाले व्यक्ति को सरकार से कोई शिकायत नहीं होती, जब तक उसे वहां से हटाया नहीं जाता है। 'गाड़िया लुहारों' की पूरी जाति कहीं घर बाँधकर नहीं रहती। इस जाति के लोगों का जन्म, मरण, शादी—विवाह, उत्सव, जीविका, विश्राम आदि सब कुछ उनकी गाड़ियों के आस-पास घटित होता है। उन्हें स्थायी आवास देने की बात कोई

सोचता भी है तो उनके गले नहीं उतरती। घुमकड़ जिन्दगी में ही उनको सुख का अनुभव होता है।

बात गाड़िया लुहारों, फकीरों या भिखमंगों की नहीं, मानसिकता की है। जब तक व्यक्ति की मानसिकता नहीं बदलती, बेहतर स्थिति भी उसे बदतर लगती है। ऐसी स्थिति में स्वस्थ समाज के निर्माण की चिन्ता कौन करेगा और क्यों करेगा?

आकर्षण के दो बिन्दु

जो लोग समाज में अपनी जड़ें जमाकर खड़े हैं, जिनके सामने जीविका की समस्या नहीं है, जो पर्याप्त सुख-सुविधाओं का भोग कर रहे हैं, वे लोग भी समाज-निर्माण की चिन्ता से मुक्त हैं। उनके सामने मुख्यतः दो आकर्षण हैं—काम और अर्थ। मनुष्य की कामनाओं और वासनाओं का जंगल इतना बड़ा है कि उनमें घुसने के बाद निकलने का रास्ता ही नहीं मिलता। यह एक प्रकार की भूल-भुलैया है। इसमें प्रवेश करते समय व्यक्ति सोचता है कि भटकेगा नहीं, किंतु कुछ दूर चलने के बाद ही वह दिग्मूढ़ बन जाता है। वहां निकलने का दूसरा रास्ता खोज पाना तो और भी कठिन है, वह लौटकर प्रवेश द्वार तक भी नहीं पहुँच पाता।

मनुष्य की प्रवृत्ति के केन्द्र में दूसरा तत्त्व है अर्थ। अर्थ जीवन की आवश्यकता है, पर उसका दर्जा चरित्र से ऊँचा नहीं हो सकता। जहां अर्थ के लिए चरित्र शून्य में चला जाता है, वहां व्यक्ति अपने निर्माण की बात भी भूल जाता है। अर्थप्राप्ति की लक्ष्यहीन प्रतिस्पर्धा चरित्र के कद को बौना बनाकर मनुष्य को पशुता की दिशा में ले जा रही है। उसके विवेक पर पर्दा ढाल रही है। ऐसी स्थिति में समाज को स्वस्थ बनाने की चिन्ता कौन करेगा?

जरूरी है बेचैनी

चिन्तन के स्तर पर चिन्ता एक बात है और भीतर से निकली हुई चिन्ता दूसरी बात है। उससे व्यक्ति बेचैन हो



जाता है। जो कुछ करणीय होता है, उसे किये बिना वह रह नहीं सकता। सोते—जागते, खाते—पीते, उठते—बैठते उसे वही दिखायी देता है।

शिष्य गुरु के पास जाकर बोला—“गुरुदेव! मुझे साधना का मार्ग बतायें।” गुरु ने कहा, “कल आना।” दूसरे दिन शिष्य आया। गुरु ने उसको अगले दिन आने का निर्देश दिया। एक—एक कर सात दिन बीत गये। शिष्य को साधना का रास्ता नहीं मिला। वह थोड़ा अधीर हुआ तो गुरु उसे साथ लेकर तालाब पर गये। शिष्य को पानी में डुबोकर गुरु ने उसके सिर पर हाथ का दबाव रखा ताकि वह वहाँ से निकलकर बाहर न आ सके। वह छठपटाने लगा। श्वास लेने में कठिनाई हो गयी। वह दो क्षण भी प्रतीक्षा करने की स्थिति में नहीं था।

तालाब से बाहर निकलने के बाद गुरु ने शिष्य से पूछा—“तालाब के भीतर तुम क्या अनुभव कर रहे थे?” शिष्य बोला, “गुरुदेव! उस समय मुझे इतनी घुटन हो रही थी कि बाहर निकलने की भावना के अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प ही मेरे मन में नहीं रहा।”

गुरु ने कहा, “जिस दिन साधना के लिए इतनी बेचैनी पैदा होगी, उसी दिन साधना का मार्ग बताऊँगा।”

कौन होता है स्वस्थ

जिस दिन मनुष्य के मन में स्वस्थ समाज की संरचना के लिए बेचैनी जाग जायेगी, उस दिन समाज—निर्माण का सपना अधूरा नहीं रहेगा। समाज—निर्माण की बुनियाद है व्यक्ति—निर्माण। जब तक व्यक्ति स्वस्थ नहीं होगा, वह समाज को स्वस्थ नहीं होने देगा। स्वस्थ कौन होता है? इस सन्दर्भ में एक प्राचीन अवधारणा है—

नित्यं हिताहारविहारसेवी, समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः। दाता समः सत्यपरः क्षमावान् आप्तोपसेवी स भवत्यरोगः॥

अर्थात् जो व्यक्ति सदा हितकर भोजन करता है, भ्रमण करता है, विचारपूर्वक काम करता है, इन्द्रिय के विषय में आसक्त नहीं होता, उदार हृदय होता है, समभाव में रहता है, सत्यनिष्ठ होता है, सहिष्णु रहता है और आप्तपुरुषों के सान्निध्य से लाभान्वित होता है, वह स्वस्थ होता है।

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक — तीनों दृष्टियों से स्वस्थ होना स्वस्थता की सर्वांगीण पहचान है। व्यक्ति—व्यक्ति इस रूप में स्वास्थ्य लाभ करेगा तो स्वस्थ समाज की संरचना अपने आप घटित हो सकती है।

गांधी के सपनों का भारत

महात्मा गांधी ने एक सपना देखा था। स्वतन्त्र और सुन्दर भारत का सपना। उनके द्वारा देखे गये सपने के भारत में कोई व्यक्ति नशाखोर नहीं था। किसी के मन में छुआछूत की भावना नहीं थी। कोई निरपराध प्राणी को सताने वाला नहीं था। कोई किसी को धोखा देने वाला

नहीं था। देश की आजादी के साथ—साथ मैंने अणुव्रत का अभियान शुरू किया। अणुव्रत की आचार—संहिता गांधी के स्वप्न को आकार देने वाली आचार—संहिता है। काश! गांधी कुछ समय और रहते। हम उनसे मिलते। अणुव्रत के बारे में चर्चा करते और भारत को नये रूप में ढालने के लिए संयुक्त रूप में प्रयास करते। अचानक गांधी की हत्या हो गई। पार्थिव रूप में वे हमारे सामने नहीं हैं, पर उनकी आत्मा भारत के कण—कण में बसी हुई है। गांधी के नाम पर जिनको गौरव है, जो गांधी के स्वप्न को साकार करना चाहते हैं और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में योगभूत बनना चाहते हैं, उनका दायित्व है कि सबसे पहले अपने आपको स्वस्थ बनायें। स्वस्थ और सुन्दर बनने की आकांक्षा से बहुत लोग केवल शरीर पर ध्यान दे रहे हैं। वे शरीर को सजा रहे हैं और उसी की चिकित्सा करा रहे हैं। बाह्य सौन्दर्य व्यर्थ नहीं होता, पर वही सब कुछ नहीं होता।

तुम्हारे हाथ बहुत सुन्दर हैं

सौन्दर्य सामने दिखायी देता है, इसलिए उसके प्रति आकर्षण हो जाता है। आन्तरिक सौन्दर्य को पहचानने वाली आँख सबके पास नहीं होती। इस स्थिति में उसका मूल्यांकन करना कठिन हो जाता है। जीवन में कोई क्षण ऐसा आता है, जब व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि खुलती है और वह अन्तः सौन्दर्य की झलक पाता है। उस समय उसका चिन्तन और व्यवहार बदल जाता है।

एक किशोर अपनी मां के टेढ़े—मेढ़े हाथ देखकर बोला, “मां! तुम कितनी सुन्दर हो। तुम्हारे हाथ ऐसे कैसे हो गये? ये बहुत भद्दे लगते हैं। इनकी प्लास्टिक सर्जरी करवा लो।” मां ने हँसकर बात टाल दी। किशोर ने चार—पाँच बार यह बात दोहरा दी। मां टालती रही। एक दिन उसने बहुत आग्रह किया तो मां बोली, “बेटा! तुम छोटे थे। पालने में सो रहे थे। सहसा घर में आग लग गयी। तुम आग में घिर गये। मैं दौड़कर आयी। आग की लपटों में हाथ डालकर तुझे पालने से बाहर निकाला। मेरे हाथ झुलस गये, पर तुम बच गये। मेरा पुरुषार्थ सफल हो गया।”

अपनी मां के मुँह से हाथों के टेढ़ेपन या भद्देपन की कहानी सुन किशोर की आँखें खुल गयीं। उसने एक गहरी नजर डालकर मां के हाथों को देखा। वहाँ मां की ममता खेल रही थी। किशोर के मुँह से अनायास ही बोल फूट पड़े, “मां! तम्हारे हाथ बहुत सुन्दर हैं।” मां से बार—बार प्लास्टिक सर्जरी का आग्रह करने वाले पुत्र ने उस दिन के बाद कभी कुछ नहीं कहा, क्योंकि उसका अन्तः सौन्दर्य से साक्षात्कार हो गया था।

समाज को स्वस्थ बनाने के लिए उसके आन्तरिक सौन्दर्य को निखारना जरूरी है। अणुव्रत की आचार—संहिता एक ऐसी सर्जरी है, जो मनुष्य के जीवन को सुन्दर बना सकती है। ■





अध्यात्म और नैतिकता

आचार्य महाप्रज्ञ

ने

तिकता का दर्शन पारस्परिक संबंधों में होता है। यदि एक ही आदमी हो तो नैतिकता की कोई आवश्यकता नहीं होती। दो हैं और उन दोनों के बीच में संबंध है तो वह संबंध कैसा होना चाहिए, यह नैतिकता का मूल आधार है। यह संबंध—विज्ञान नैतिकता का विज्ञान है।

दो व्यक्तियों के बीच परस्पर संबंध अच्छा होता है, उसके अनेक आधार हो सकते हैं। एक आधार होता है पारस्परिक हितों का। हित की चेतना जागती है तो व्यक्ति अनुभव करता है कि दूसरे का अहित करने में मेरा अपना भी हित नहीं है। यहीं नैतिकता का बीज अंकुरित होता है। जितने संगठन बने हैं, उन संगठनों में व्यक्तियों का हित समाहित होता है। एक संस्था, एक परिवार, एक समाज, एक राष्ट्र— जितनी ये इकाइयां हैं, उनमें भी हित का संबंध जुड़ा हुआ है। हर व्यक्ति सोचता है कि दूसरे का हित करना है, अपने समाज और राष्ट्र का हित करना है। समाज या राष्ट्र का नुकसान मेरा भी नुकसान है। जहां हित के संबंध जुड़ जाते हैं, वहां नैतिकता पल्लवित होती है।

राष्ट्र प्रेम, समाज का प्रेम, जाति का प्रेम— ये सारे नैतिकता को प्रोत्साहन देते हैं और इनके आधार पर नैतिकता विकसित भी होती है। इसे मैं अस्वीकार नहीं करता। इतना होने पर भी एक बात कहना चाहता हूँ और वह मूल बात यह है— हितों के आधार पर जो नैतिकता होती है, वह तब तक नैतिकता रहती है, जब तक हितों का संबंध है। जिनके साथ हित का संबंध नहीं है, वहां अनैतिक व्यवहार करने में भी संकोच नहीं होता।

नैतिकता का सार्वभौम आधार

एक राष्ट्र के नागरिक का अपने राष्ट्र के प्रति नैतिक व्यवहार करने में हित होता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम होता है। वह अपने राष्ट्र के प्रति अनैतिक व्यवहार नहीं करता,

किंतु दूसरे राष्ट्र से उसका हित संबंध जुड़ा हुआ नहीं है, इसलिए दूसरे राष्ट्र के प्रति अनैतिक व्यवहार करने में उसे तनिक भी संकोच नहीं होता।

नैतिकता का सार्वभौम आधार केवल आध्यात्मिकता ही बन सकती है। अध्यात्म हितों का संबंध नहीं है, स्वार्थों का संबंध नहीं है। वह मानवीय चेतना की उदात्तता, पवित्रता और परमार्थ चेतना का जागरण है। जहां परमार्थ की चेतना जाग जाती है, वहां किसी भी व्यक्ति को, किसी भी प्राणी को नुकसान पहुँचाना, अपनी आत्मा को नुकसान पहुँचाना है। इतनी विराट चेतना होती है, जिसमें 'पर' जैसे शब्द के लिए कोई अवकाश ही नहीं होता।

उदात्त चेतना, अध्यात्म चेतना ही नैतिकता का आधार बनती है। जहां कोई परिवार का भेद नहीं होता, समाज का भेद नहीं होता। न भौगोलिकता का, न चिंतन की धारा का, न मान्यताओं का, न जीवन की प्रणालियों का, किंतु एक अभेदानुभूति जाग जाती है। इस आधार पर जो व्यवहार फलित होता है, वह अनैतिक कभी हो ही नहीं सकता और नैतिकता का व्यवहार वास्तव में अध्यात्म के धरातल पर ही हो सकता है। इसमें यह नहीं होता कि अमुक का हित और अमुक का अहित। अमुक के प्रति अच्छा व्यवहार और अमुक के प्रति बुरा व्यवहार। यह भेद समाप्त हो जाता है। अध्यात्म—चेतना नहीं जागती तो सबके प्रति बुरा व्यवहार हो जाता है। अध्यात्म—चेतना जाग जाती है तो किसी के प्रति भी बुरा व्यवहार नहीं होता।

बहुत से लोग राष्ट्रीय चेतना को नैतिकता का आधार मानते हैं। मुझे कोई आपत्ति नहीं, मानें, हो भी सकता है, किंतु वह सार्वभौम आधार नहीं है। वह स्थायी आधार नहीं है, देश—कालातीत आधार नहीं है। यह अपेक्षाओं से जुड़ा हुआ और संकीर्ण सीमाओं से जुड़ा हुआ आधार है। आज है, कल नहीं भी हो सकता, किंतु

आध्यात्मिकता की भित्ति एक ऐसा आधार नैतिकता को प्रदान करती है कि एक बार उस चेतना के जाग जाने पर अनैतिक आचार और व्यवहार सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं।

अणुव्रत आंदोलन का आधार

धर्म—संप्रदायों ने अध्यात्म की चेतना को जगाने का उतना प्रयत्न नहीं किया, जितना करना चाहिए था। आध्यात्मिक चेतना जागे बिना धर्म भी शून्य है, संप्रदाय की चेतना भी निष्ठाण है। उन दोनों में प्राण—प्रतिष्ठा करने वाला अध्यात्म है। कोरा बल्ब है, करंट नहीं है तो बल्ब से क्या होगा? प्रकाश जो है, वह सारा अध्यात्म का है, हमारी एक विराट चेतना का है। हम प्रयत्न करते हैं कि नैतिक जागरण हो, नैतिकता का विकास हो। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया, नैतिकता की आचार—संहिता प्रस्तुत की। प्रारंभ में बहुत चर्चाएं होती रहीं आधार की। एक—दो वर्ष में यह चिंतन बहुत स्पष्ट हो गया कि अणुव्रत आंदोलन का आधार है—आध्यात्मिकता। इसकी भित्ति पर ही नैतिकता को संभव बनाया जा सकता है। दूसरी सारी भित्तियां कमजोर भित्तियां हैं, किंतु यह इतनी सुरित्तर, सुदृढ़ और मजबूत भित्ति है, जो किसी प्रकम्पन या भूचाल से भी इधर—उधर नहीं होती। हिमालय की भाँति अडोल है।

अणुव्रत के साथ जुड़ा है प्रेक्षाध्यान का अभ्यास

अणुव्रत का साधना—पक्ष है प्रेक्षाध्यान का अभ्यास। नैतिकता का आंदोलन प्रारंभ हुआ। उसका विकास होते—होते, चिंतन होते—होते एक स्थिर धारणा बन गयी कि अणुव्रत का कार्यक्रम आध्यात्मिकता के आधार पर पल्लवित हो सकता है, सुरित्तर बन सकता है और उसका आधार है प्रेक्षाध्यान।

नैतिक शिक्षा का विकास कैसे?

न्यायाधीश ने एक पक्ष के व्यक्ति से पूछा—“तुम दुर्घटनाग्रस्त हुए, पर तुम दुर्घटना होने के बाद चल सकते हो या नहीं?”

व्यक्ति बोला—“मैं चल भी सकता हूँ और नहीं भी चल सकता। डॉक्टर कहता है कि तुम चल सकते हो, किंतु मेरा वकील कहता है कि तुम नहीं चल सकते।”

यह एक निर्णयात्मक उत्तर नहीं है। यही बात नैतिक शिक्षा के बारे में भी लागू होती है। स्कूलों और कॉलेजों में मनुष्य की शास्त्रीय—चेतना जाग्रत होती है। शास्त्र और व्यवहार के सहारे नैतिकता आ जाये, ऐसा संभव कम लगता है। जो देश अत्यधिक विकसित हैं, वहां पर भी जब करोड़ों डॉलर की चोरी उच्च स्तरीय पदाधिकारी कर लेते हैं तो हम कैसे कह सकते हैं कि सामाजिक व्यवहार से नैतिकता का विकास हो जायेगा?

धर्म के द्वारा नैतिक चेतना का विकास हो सकता है, किंतु कठिनाई यह है कि धर्म के क्षेत्र में सांप्रदायिकता

नैतिकता का सार्वभौम आधार

केवल आध्यात्मिकता ही बन सकती है।

अध्यात्म हितों का संबंध नहीं है,

स्वार्थों का संबंध नहीं है।

वह मानवीय चेतना की उदात्तता,

पवित्रता और परमार्थ चेतना

का जागरण है।

अपना स्थान बना लेती है। सांप्रदायिकता को लोग धर्म मान लेते हैं। वे धर्म से कोसों दूर हट जाते हैं। आज लोग समझने लगे हैं कि धर्म और पढ़े—लिखे लोगों का तो कोई संबंध ही नहीं है। धर्म तो रुद्धिवादी लोगों के लिए है। यह धारणा आजकल के पढ़े—लिखे लोगों में बन गयी है। धर्म की बात करने में भी ऐसे लोग संकोच करने लगे हैं। यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि धर्म और सांप्रदायिकता का कोई संबंध नहीं है।

जुड़नी चाहिए अध्यात्म की बात

नैतिकता पढ़ायी नहीं जा सकती, पाठ पढ़ाया जा सकता है, किंतु अध्यात्म की बात पाठ्यपुस्तकों के साथ अवश्य जुड़नी चाहिए। उसके माध्यम से बच्चे का विकास होगा, एक दिशा तो मिलेगी ही। शिविरों का संचालन भी इसके लिए आवश्यक है। शिविर के माध्यम से भी नैतिक शिक्षा का विकास बच्चों में हो सकता है। अध्यात्म—चेतना जाग्रत होने पर नैतिकता अपने आप फलित होगी।

सप्राट श्रेणिक ने आदेश दिया— इस मुर्ग को लड़ाकू बनाना है, किंतु दूसरा मुर्ग सामने नहीं होना चाहिए। एक बुद्धिमान विद्यार्थी ने कहा—ठीक है, चिंता की कोई बात नहीं। मुर्ग मुझे संभला दीजिए। मुर्ग उसके पास लाया गया। उसने तत्काल मुर्ग के पास एक कांच लगा दिया। अब दूसरे मुर्ग की जरूरत नहीं थी। मुर्ग अपने आप लड़ाकू बन गया।

यदि नैतिक शिक्षा को विकसित करना है तो आपको कांच की आवश्यकता होगी। विद्यार्थी के सामने कांच उपस्थित करना होगा। एकाग्रता का अभ्यास, संकल्प—शक्ति का अभ्यास — इनके माध्यम से नैतिक शिक्षा का विकास किया जा सकता है। मनुष्य में अनंत शक्ति मौजूद है, किंतु अपनी शक्ति से कौन परिचित होता है? आवश्यकता इस बात की है कि लोगों को उनकी शक्ति से परिचित कराया जाये। इसके लिए अध्यात्म—चेतना को जाग्रत करना होगा। ■





कथा भारत विश्वगुरु बन सकता है?

■ प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ■

एक संत ने भौतिकता की चकाचौंध का मुकाबला कर कैसे युगधारा को शांति, अहिंसा एवं पारस्परिक सौहार्द की दिशा में मोड़ा जा सकता है – इस पर अपनी प्रज्ञाप्रसूत मनीषा से एक मार्ग निकाला, जिसका नाम दिया गया – अणुव्रत आंदोलन। वे संत थे—आचार्य तुलसी। स्वतंत्रता के बाद जब देश विकास के अभिनव आयामों में अग्रसर होने के लिए उद्यत था, तब उन्होंने सन् 1949 में अणुव्रत आंदोलन का शंखनाद किया, जिसका मूलभूत आधार था—वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में आत्म-संयम का विकास।

दरअसल, मनोविज्ञान के अधुनातन जैव-वैज्ञानिक प्रमाणों ने यह भली-भाँति स्पष्ट कर दिया है कि मानव-मस्तिष्क में विद्यमान समग्र रासायनिक प्रक्रियाएं परिष्कार करके ही मानव-व्यवहार को संयममय बनाया जा सकता है और इसका एक सशक्त माध्यम है—व्रत यानी संकल्प। इसे ही मनोवैज्ञानिक स्वतः सूचन (ऑटो-सजेशन) के नाम से पुकारते हैं। न्यूरो साइंटिस्ट भी स्वीकार करते हैं कि इससे हार्मोनों का उदात्तीकरण संभव है।

अणुव्रत का शाद्विक अर्थ है— छोटी-छोटी प्रतिज्ञाएं। यदि व्यसनी व्यक्ति व्यसन—मुक्त होना चाहता है, तो पहले उसे सच्चे दिल से प्रतिज्ञा करनी होगी – मैं व्यसन का सेवन नहीं करूँगा। इसी प्रकार सभी मानवीय मूल्यों का जीवन में अवतरण करने हेतु सर्वप्रथम ‘व्रत’ आवश्यक है।

आचार्य तुलसी ने व्यापारी, राज्याधिकारी, विद्यार्थी, अध्यापक, श्रमिक आदि सभी वर्गों के लिए छोटे-छोटे व्रतों के रूप में मानव जीवन की सुंदर आचार संहिता को मुक्ताहार की भाँति गुणित किया। उन्होंने इस आचार संहिता के प्रचार-प्रसार के लिए पैदल चलकर घर-घर, गाँव-गाँव, नगर-नगर नैतिकता की लौ जलायी। 50

वर्षों में पचास हजार किलोमीटर की पदयात्रा द्वारा जन-जन से सम्पर्क किया। एक असाम्प्रदायिक क्रांति के वे पुरोधा बने, मानवता के मसीहा बने।

भारत को यदि वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भर बनना है, नवभारत बनना है तो आचार्य श्री तुलसी के 108वें जन्मदिन के अवसर पर आओ हम सब प्रतिज्ञा करें कि हम अणु—अणु रूप में संयम का विकास करेंगे। स्वयं का अनुशासन स्वयं के द्वारा करते हुए न केवल बुराइयों के दशानन का दहन करेंगे, अपितु अपने परिवार को कलहमुक्त बनाते हुए अध्यात्म की सच्ची आराधना करेंगे तथा राष्ट्रीय चरित्र को समृन्त करते हुए अपने देश भारत को उसका ‘विश्वगुरु’ का गौरव वापस दिलायेंगे।

अणुव्रत किसी एक धर्म—विश्वास, दर्शन, जाति, संप्रदाय, राष्ट्रीयता का मोहताज नहीं है, बल्कि यह अध्यात्म—विज्ञान एवं अध्यात्म—साधना का युगीन अभियान है। भौतिकता का भस्मासुर आज हमारी नयी पीढ़ी को दिग्भ्रांत कर उसे संस्कारविहीन बना रहा है। इस भस्मासुर को भस्मसात् करने के लिए अणुव्रत एक आध्यात्मिक ‘अणुबम’ से कम नहीं है।

अध्यात्म सभी धर्मों का मूल आधार है। धर्म—श्रद्धा की विभिन्नताओं को बरकरार रखते हुए भी अध्यात्म के आधार पर उन सभी धर्मों को अध्यात्म के एक ही धारे में पिरो कर यदि पूरा विश्व एकजुट बन भौतिकता की अति का कुछ हद तक भी वामनीकरण करने में सफल हुआ, तो वह दिन दूर नहीं रहेगा जब अहिंसा, विश्व शांति, आर्थिक विषमता का अंत, पारस्परिक सौहार्द एवं मैत्री की पवित्र सुरसरिता में अभिस्नात होकर चैन और अमन की साँस ले सकेगा। यदि भारत की एक आवाज पर पूरा विश्व ‘अंतरराष्ट्रीय योग दिवस’ को चरितार्थ कर सकता है, तो ‘योग’ की जननी आध्यात्मिकता—उसका विज्ञान, उसकी तकनीक—विनाश के कगार पर पहुँचे विश्व के लिए त्राण बनकर उसे क्यों नहीं बचा सकती?



कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था,
अणुव्रत चरित्र निर्माण का
आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार
की स्थापना के पीछे उद्देश्य है
उन लोगों का आदर जो चरित्र
निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं।

अणुव्रत के आदर्शों के प्रति
जिनके मन में गहरी निष्ठा है।
ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से
समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति
आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था,
“सत्य की खोज करना बड़ी बात है
और उससे भी बड़ी बात है
सत्य को क्रियान्वित करना।

अणुव्रत पुरस्कार सत्य को
क्रियान्वित करने वालों को
मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ
कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।”

आचार्य महाश्रमण कहते हैं,
“भारत के नागरिकों में नैतिकता
के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत
इसी दिशा में कार्यशील है।
अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के
महत्व को प्रतिपादित करने वाला
अभिक्रम है।”

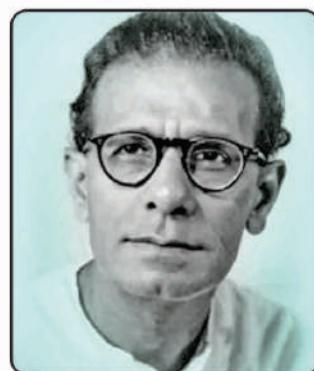
वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की
शुरुआत की गयी। तब से 26
विभूतियों को इस पुरस्कार से
सम्मानित किया जा चुका है।
अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत
प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और
एक लाख इक्यावन हजार रुपये
की राशि प्रदान की जाती है।

अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने
वालों की जीवन गाथा से
परिचित होना मानवीय मूल्यों से
साक्षात् करना है। आने वाली
पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा
लेकर स्वस्थ समाज की संरचना
की दिशा में कदम बढ़ायें, इसी
उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से
सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का
परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित
किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

प्रफुल्लचंद्र सेन

मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित



प्रफुल्लचंद्र सेन पर शुरू से ही लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल (लाल—बाल—पाल) के विचारों का प्रभाव था। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द से भी वे प्रभावित थे। रचनात्मक कार्यों में उनकी बड़ी निष्ठा थी। वे एक कट्टर राष्ट्रवादी थे और गांधीजी के जमीनी लोकतंत्र और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए प्रतिबद्ध थे।

प्रफुल्लचंद्र सेन का जन्म 10 अप्रैल, 1897 ई. को पश्चिम बंगाल के खुलना जिले के गांव सेन्हाटी में एक वैद्य परिवार में हुआ था। पिता की स्थानांतरणीय सेवा के कारण उन्होंने बिहार में अपना बचपन बिताया और देवघर में आर मित्रा इस्टीट्यूट से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने कलकत्ता के स्कॉलिश चर्च कॉलेज में विज्ञान का अध्ययन किया। फिर कोलकाता विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक हुए। इसके बाद वे एक लेखा फर्म में शामिल हो गये और लेखा लिपिक बनने के लिए इंग्लैंड जाने की इच्छा व्यक्त की।

इसी बीच वर्ष 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में महात्मा गांधी के भाषण से प्रभावित होकर श्री सेन ने विदेश में अध्ययन करने का विचार त्याग दिया और स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभायी। 1921, 1930, 1932, 1934 और 1942 में उन्होंने कैद की सजा भोगी और कुल ग्यारह साल तक जेल में बंद रहे।

श्री सेन पर गांधीजी का प्रभाव इतना व्यापक था कि उन्होंने अपने सामाजिक और राजनीतिक गतिविधि के क्षेत्र को पश्चिम बंगाल के एक अल्प-विकसित और मलेरिया प्रभावित क्षेत्र आरामबाग में स्थानांतरित कर दिया और इसकी बेहतरी के लिए लगातार काम किया। इन प्रयासों की वजह से ही श्री सेन को ‘आरामबाग का गांधी’ कहा जाने लगा।

1940 के दशक में अंग्रेजों द्वारा अनुमत लोकतंत्र के आंशिक अभ्यास में श्री सेन 1944 में आरामबाग से बंगाल विधानसभा के लिए चुने गये और विपक्ष के उप नेता बने। 1948 में जब डॉ. बिधान चंद्र राय पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने श्री प्रफुल्ल चंद्र सेन को कृषि मंत्री बनाया। 1962 में डॉ. बिधान चंद्र राय की मृत्यु के बाद श्री सेन पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बने।

श्री प्रफुल्ल चंद्र सेन का संपूर्ण जीवन मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित रहा। राजनीति में रहते हुए उन्होंने सिद्धांतवादी जीवन जीया। अणुव्रत दर्शन के वे न केवल कट्टर समर्थक थे, वरन् उनका अपना जीवन अणुव्रत जीवनशैली का उदाहरण था। ऐसे निःस्वार्थ राजनेता श्री सेन को वर्ष 1989 में अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 25 सितंबर 1990 को कलकत्ता में उनका निधन हो गया।

धार्मिक स्थानों में अनिवार्य है अणुव्रतों का पालन

■ प्रो. डॉ. अनेकान्त जैन ■

हम अक्सर आध्यात्मिकता का दंभ तो भरते हैं, लेकिन क्या नैतिकता का पालन भी कर पा रहे हैं? धर्म क्षेत्र में भी हम प्रामाणिक क्यों नहीं रहना चाहते? धर्म के नाम पर हम अप्रामाणिकता को उचित क्यों मान रहे हैं? इन बातों पर हमें ईमानदारी से विचार करना चाहिए। अपने लिए भी और अपनी गौरवशाली संस्कृति के लिए भी।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य—ये पाँच अणुव्रत हमारे जीवन के हर क्षेत्र में पालने योग्य हैं किन्तु धर्म क्षेत्र में तो इनका पालन अनिवार्य रूप से किया ही जाना चाहिए। जहां से हमें इन अणुव्रतों की शिक्षा मिली है, उस क्षेत्र में ही यदि उनका पालन नहीं किया जा सकता तो देश-दुनिया को उसके पालन की शिक्षा देना व्यर्थ हो जायेगा।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति।
पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥

अर्थात् अन्य क्षेत्र में किया हुआ पाप पुण्य क्षेत्र में आराधना करने पर संभवतः विनाश को प्राप्त हो भी सकता है किन्तु पुण्य क्षेत्र में किया गया पाप वज्र लेप के समान हो जाता है जिसका नाश करना बहुत कठिन हो जाता है। यह सुभाषित अर्थ सहित प्रत्येक मंदिर, तीर्थ, स्थानक, धर्मशाला आदि में अनिवार्य रूप से लिखवा देना चाहिए।

अहिंसासमाणुभूङ् अकर्ता परदव्वस्स खलु सच्चं।
पर मम ण इ अस्सेयं अणासति अपरिग्रहो बंभं च॥

सभी जीवों में अपने ही समान अनुभूति अहिंसा है, स्वयं को परद्रव्य का अकर्ता मानना ही निश्चित रूप से सबसे बड़ा सत्य है, पर पदार्थ मेरा नहीं है—ऐसा मानना ही अस्तेय है और अनासक्ति ही अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य है।



पाँच पाप

ए मण्णदि सयं अप्या जेष्ठपावं खलु सव्वपापेसु।
तेसु य सादो उत्तं पाविस्स लक्खणं जिणेहिं॥

निश्चित ही स्वयं को आत्मा न मानना सभी पापों में सबसे बड़ा पाप है और भगवान् ने पापों में स्वाद लेना ही पापी का लक्षण बताया है।

हिंसा

शास्त्रों में कहा है, आत्मा में राग-द्वेष की उत्पत्ति हिंसा है। अतः जब धर्म क्षेत्र में हम राग वर्धक कार्यक्रम करते हैं, छोटी-छोटी बातों के लिए अपने साधर्मियों से द्वेष भाव रखते हैं, उनका अपमान कर देते हैं, तब हिंसा का दोष लगता है। हम आत्म विशुद्धि और पुण्य संचय की भावना से पूजा-अभिषेक, भजन-कीर्तन आदि कार्य करते हैं, किन्तु कभी-कभी उसमें अशुद्धि के कारण भी हिंसा का दोष लग जाता है। कार्यक्रमों में अनुपयोगी अत्यधिक रोशनी अनंत जीवों की विराधक हो जाती है। कोई नहीं है फिर भी पंखा, एसी, कूलर, लाइट आदि हम खुले ही छोड़ देते हैं। इससे अनावश्यक बिजली और पैसा खर्च होने के साथ ही हिंसा भी होती है। ऐसे में क्या अहिंसा अणुव्रत का पालन यहां नहीं होना चाहिए?



झूठ

दूसरों को धर्म की प्रेरणा देने के लिए अक्सर हम झूठ का सहारा लेते हैं। जैसे 100–200 साल पुरानी मूर्ति को हजारों साल पुरानी बताना, चमत्कार की कोई झूठी कहानी सुनाकर धर्म की महिमा बताना। जिस क्रिया में कोई धर्म नहीं, उसमें भी धर्म बताकर दान के लिए उकसाना। किसी मंत्री या विद्वान् ने आने की पूर्व स्वीकृति नहीं दी, फिर भी उनके नाम से पोस्टर छापना और भीड़ इकट्ठी करना, फिर झूठ बोलना कि अचानक उनका फोन आया कि वे आ नहीं रहे हैं। कार्यक्रम 10 बजे से शुरू होना पहले से निश्चित है लेकिन उसे 9 बजे का कहकर प्रचारित करना। इस तरह की बहुत सारी बातें जिन्हें हम आम जीवन में उचित नहीं समझते किन्तु धर्म क्षेत्र में बिना किसी डर के बल्कि ज्यादा उत्साह से करते हैं। कुतर्क देते हैं – हमारे झूठ बोलने से यदि धर्म का विकास हो रहा है तो हम क्या गलत कर रहे हैं? हम अपने लिए तो झूठ बोल नहीं रहे, धर्म के लिए बोल रहे हैं..। आदि। सत्य अणुव्रत क्या यहाँ के लिए नहीं है?

चोरी

संस्था या मंदिर निर्माण के लिए फर्जी कागज तैयार करवाना, सरकारी या श्रावक की जमीन पर कब्जा करना, बिना टैक्स दिये, बिना पक्की रसीद के सामग्री खरीदना, मजदूर–मिस्त्री को उचित पारिश्रमिक न देना, जितना दान बोला उससे कम देना, किसी और के दान को अपने नाम से बताकर यश लूटना, मैनेजमेंट कमेटी पर अपना प्रभुत्व जमाना, हिसाब में हेरफेर करना, धर्म के धन का प्रयोग अपने व्यापार में करना, जिस मद में धन आया, उसे अन्य मद में खर्च करना, दान दाता को उसकी कच्ची रसीद देना या कुछ भी न देना। क्या इनसे बचा नहीं जा सकता? अस्त्रेय अणुव्रत क्या यहाँ के लिए नहीं है? प्रभावना के नाम पर हम जो यह सबकुछ करते हैं, क्या यह धर्म की सच्ची प्रभावना है? अचौर्य अणुव्रत क्या यहाँ नहीं होना चाहिए?

कुशील

पूजा–पाठ के फल में इन्द्रिय सुखों की कामना करना, धर्म क्षेत्र में आकर भी लौकिक फिल्में देखना, फूहड़ कवि सम्मेलन करवाना, कार्यक्रमों में नयन मटक्के करना आदि अनेक कार्य हैं जो हम यहाँ भी वैसे ही करते हैं जैसे अन्य स्थलों में करते हैं। धर्म–तीर्थ–मंदिर आदि में भी अमर्यादित वस्त्र पहन कर आते हैं। इसके लिए कुतर्क दिये जाते हैं कि यदि ऐसा नहीं होगा तो नयी पीढ़ी धर्म क्षेत्र आयेगी ही नहीं आदि–आदि। लेकिन यह भी तो सोचिए कि यदि यहाँ भी ऐसा ही हो रहा है, तब धर्म की शिक्षा देने के लिए तो कोई जगह बचेगी ही नहीं। धर्म–तीर्थ क्षेत्र में हम पंचेन्द्रिय के भोगों से निवृत्ति सीखने आते हैं या उनकी पूर्ति के लिए? क्या यहाँ ब्रह्मचर्य अणुव्रत का प्रयोग नहीं होना चाहिए?

परिग्रह

आसक्ति को परिग्रह कहते हैं, लेकिन संस्था, मंदिर, ट्रस्ट के पदों को अपना मानना, उसके लिए लड़ना, षड्यंत्र करना, उस पर जमे रहने के लिए तरह–तरह के अनैतिक उपाय करना—यह सब परम परिग्रह है। जहाँ देह को भी अपना नहीं कहा, वहाँ समाज की संस्थाओं में आसक्ति, वो भी लड़ाई–झगड़े के साथ? क्या यह परिग्रह रूपी महापाप नहीं है? जबदस्ती कभी किसी धार्मिक–सामाजिक पद पर नहीं बैठना चाहिए। धर्म बुद्धि से तब बैठना चाहिए जब समाज द्वारा आपको बैठाया जाये और फिर निष्पक्ष व अनासक्त भाव से ईमानदारी पूर्वक, बिना किसी मद के नौकर बनकर सेवा करनी चाहिए न कि मालिक बनकर।

दान लेते समय सिर्फ राशि की अधिकता पर ही ध्यान न रहे, बल्कि दाता का व्यवसाय और व्यसन सम्बन्धी पड़ताल भी करनी चाहिए। न्याय से उपर्युक्त धन ही सम्यक् साधन है। साधन शुद्धि से साध्य भी शुद्ध होते हैं। जब हम धार्मिक स्थल या संस्था के लिए अधिक धन इकट्ठा करते हैं, तब यह सोचकर हम परिग्रह को उचित मानते हैं कि यह तो धर्म की वृद्धि के लिए है किन्तु हम यह भूल जाते हैं कि कमेटी में अशांति भी अंततोगत्वा अत्यधिक धन इकट्ठा होने के कारण से ही होती है। क्या परिग्रह परिमाण व्रत की आवश्यकता यहाँ नहीं है?

खुद को दे रहे धोखा

जिन व्रतों को हमें घर में पालने की प्रेरणा दी जाती है, उनकी परिभाषाएं धर्म क्षेत्र में जाते ही बदल क्यों जाती हैं? जिन कार्यों को घर–संसार में पाप कहा जाता है, उन्हीं कार्यों को धार्मिक फ्लेवर के साथ पुण्य का जामा पहना दिया जाता है। हम किसे धोखा दे रहे हैं? समाज को? धर्म को? भगवान् को? नहीं...सिर्फ खुद को धोखा दे रहे हैं। हम ऐसा नहीं करेंगे तो धर्म कैसे चलेगा? तीर्थ कैसे बचेंगे? ये सब बहानेबाजी छोड़िए। धर्म की आत्मा खत्म करके उसकी अर्थी को कितना भी सजा लो, वह शोभायमान कभी नहीं होगी।

इसलिए हम सभी को अपना अहंकार त्याग कर सच्चे मन से नैतिकता और धार्मिकता के साथ धर्म क्षेत्र की सेवा करनी चाहिए। आगम ग्रंथों में भी 'आद हिंदं कादवं' अर्थात् आत्मा का हित पहले करना चाहिए, ऐसा कहा है। आपके आत्महित की कीमत पर उसे भी आपकी सेवा मंजूर नहीं है। मान की पूर्ति के निमित्त तो कभी भी सेवा नहीं करनी चाहिए। आपके गये बाद आपको कोई याद रखेगा, इस भूल में भी रहना भूल ही है।

 लेखक श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली में जैन दर्शन विभाग के आचार्य हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित होने के साथ ही इन्होंने 16 पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है।

आजादी की ऊर्जा का अमृत

■ प्रो. संजय द्विवेदी ■



आ

जादी का अमृत महोत्सव एक राष्ट्र के रूप में ऐसा पवित्र अवसर है जब आजादी के असंख्य संघर्ष, बलिदानों और तपस्याओं की ऊर्जा पूरे भारत में एक साथ पुनर्जागृत हो रही है। यह अवसर है स्वाधीनता संग्राम में खुद का बलिदान देने वाली महान विभूतियों के चरणों में आदरपूर्वक नमन करने का। उन वीर जवानों को प्रणाम करने का, जिन्होंने आजादी के बाद भी राष्ट्र रक्षा की परंपरा को जीवित रखा और देश की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिये। यह अवसर है उन पुण्य आत्माओं का वंदन करने का, जिन्होंने आजाद भारत के पुनर्निर्माण में प्रगति की एक-एक ईंट रखी और 75 वर्ष में देश को यहां तक लाये।

इस अमृत महोत्सव की शुरुआत दांडी यात्रा की वर्षगांठ पर 12 मार्च 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मस्थली गुजरात से हुई और यह 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई है और आजाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति है। किसी राष्ट्र का गौरव तभी जागृत रहता है, जब वह अपने स्वाभिमान और बलिदान की परंपराओं को अगली पीढ़ी को भी सिखाता है और उन्हें संस्कारित करता है।

किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है, जब वह अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से जुड़ा रहता है। भारत के पास तो गर्व करने के लिए समृद्ध इतिहास और चेतनामयी सांस्कृतिक विरासत है। आजादी के 75 साल का यह अवसर अमृत की तरह वर्तमान पीढ़ी को प्राप्त होगा। ऐसा अमृत, जो हमें प्रतिपल देश के लिए जीने और कुछ करने के लिए प्रेरित करेगा।

वेदों में कहा गया है, 'मृत्योः मुक्षीय मामृतात्।' अर्थात हम दुःख, कष्ट, क्लेश और विनाश से निकलकर

अमृत की तरफ बढ़ें। यही संकल्प आजादी के इस अमृत महोत्सव का भी है। आजादी का अमृत महोत्सव यानी आजादी की ऊर्जा का अमृत, स्वाधीनता सेनानियों की प्रेरणाओं का अमृत, नये विचारों व नये संकल्पों का अमृत, आत्मनिर्भरता का अमृत। और इसीलिए यह महोत्सव राष्ट्र के जागरण और वैशिवक शांति एवं विकास का महोत्सव है।

आजादी की लड़ाई में अलग-अलग घटनाओं की अपनी प्रेरणाएं हैं, जिन्हें आज का भारत आत्मसात कर आगे बढ़ सकता है। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी का देश को सत्याग्रह की ताकत याद दिलाना, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज्य का आहवान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्दू फौज का दिल्ली मार्च, 1942 का अविस्मरणीय आंदोलन, अंग्रेजों भारत छोड़ो का उद्घोष, ऐसे कितने ही अनगिनत पड़ाव हैं, जिनसे हम प्रेरणा लेते हैं। ऐसे कितने ही सेनानी हैं, जिनके प्रति देश हर रोज अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है।

1857 की क्रांति के मंगल पांडे, तांत्या टोपे जैसे वीर हों, अंग्रेजों की फौज के सामने निर्भीक गर्जना करने वाली रानी लक्ष्मीबाई हों, कित्तूर की रानी चेन्नम्मा हों, रानी गाइडिन्ल्यू, चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, अशफाकउल्ला खां, गुरु राम सिंह, टिटूस जी, पॉल रामासामी जैसे वीर हों, या फिर सरदार पटेल, बाबा साहेब आंबेडकर, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, वीर सावरकर जैसे अनगिनत जननायक। ये सभी महान व्यक्तित्व आजादी के आंदोलन के पथ प्रदर्शक हैं।

हमारे स्वाधीनता संग्राम में ऐसे कितने आंदोलन हैं, जो देश के सामने उस रूप में नहीं आये जैसे आने चाहिए थे। ये एक-एक संघर्ष अपने आप में भारत की असत्य के



खिलाफ सत्य की सशक्त घोषणाएं हैं, भारत के स्वाधीन स्वभाव के सबूत हैं और इस बात का भी साक्षात प्रमाण है कि अन्याय, शोषण और हिंसा के खिलाफ भारत की जो चेतना राम के युग में थी, महाभारत के कुरुक्षेत्र में थी, हल्दीघाटी की रणभूमि में थी, शिवाजी के उद्घोष में थी, वही शशवत चेतना, वही अदम्य शौर्य, भारत के हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर समाज ने आजादी की लड़ाई में अपने भीतर प्रज्वलित करके रखी थी।

‘जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी’ यह मंत्र आज भी हमें प्रेरणा देता है। कोल आंदोलन हो या ‘हो संघर्ष’, खासी आंदोलन हो या संथाल क्रांति, कछोहा कछार नागा संघर्ष हो या कूका आंदोलन, भील आंदोलन हो या मुंडा क्रांति, संन्यासी आंदोलन हो या रमोसी संघर्ष, किंचूर आंदोलन, त्रावणकोर आंदोलन, बारडोली सत्याग्रह, चंपारण सत्याग्रह, संभलपुर संघर्ष, चुआर संघर्ष, बुंदेल संघर्ष, ऐसे कितने ही आंदोलनों ने देश के हर भूभाग को, हर कालखंड में आजादी की ज्योति से प्रज्वलित रखा।

इस दौरान हमारी गुरु परंपरा ने देश की संस्कृति, अपने रीति-रिवाज की रक्षा के लिए हमें नयी ऊर्जा दी, प्रेरणा दी, त्याग और बलिदान का रास्ता दिखाया। आजादी के आंदोलन की इस ज्योति को निरंतर जागृत करने का काम पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हर दिशा में, हर क्षेत्र में, हमारे संतों ने, महंतों ने, आचार्यों ने निरंतर किया। एक प्रकार से भक्ति आंदोलन ने राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता आंदोलन की पीठिका तैयार की।

पूर्व में चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस और श्रीमंत शंकर देव जैसे संतों के विचारों ने समाज को दिशा दी। पश्चिम में मीराबाई, एकनाथ, तुकाराम, रामदास, नरसी मेहता हुए, उत्तर में संत रामानंद, कबीरदास, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, गुरु नानकदेव, संत रैदास तथा दक्षिण में मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य हुए। भक्ति काल के इसी खंड में मलिक मोहम्मद जायसी, रसखान, सूरदास, केशवदास, विद्यापति जैसे महानुभावों ने अपनी रचनाओं से समाज को अपनी कमियां सुधारने के लिए प्रेरित किया। हमें इन महान आत्माओं का जीवन-इतिहास देश के सामने पहुँचाना है। इन लोगों की जीवन गाथाएं हमारी आज की पीढ़ी को जीवन का पाठ सिखायेंगी। एकजुटता क्या होती है, लक्ष्य को पाने की जिद क्या होती है, इसका सही मतलब बतायेंगी।

अंग्रेजों ने तमिलनाडु के 32 वर्षीय नौजवान कोडि काथ कुमरन के सिर में गोली मार दी, लेकिन उन्होंने मरते हुए भी देश के झंडे को जमीन पर नहीं गिरने दिया। तमिलनाडु में उनके नाम से ही कोडि काथ शब्द जुड़ गया, जिसका अर्थ है झंडे को बचाने वाला। तमिलनाडु की ही वेलू नाचियार वो पहली महारानी थीं, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।



अमृत महोत्सव की शुरुआत दांडी यात्रा की वर्षगांठ पर 12 मार्च 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मस्थली गुजरात से हुई और यह 15 अगस्त 2023 तक चलेगा।

ओडिशा में चक्रा बिसोई ने लड़ाई छेड़ी, तो लक्ष्मण नायक ने गांधीवादी तरीकों से चेतना फैलायी। आंध्र प्रदेश में मण्यम वीरुडु यानी जंगलों के हीरो अल्लूरी सीराराम राजू ने रम्पा आंदोलन का बिगुल फूँका। पासल्था खुनाचेरा ने मिजोरम की पहाड़ियों में अंग्रेजों से लोहा लिया। गोमधर कोंवर, लसित बोरफुकन और सीरत सिंग जैसे असम और पूर्वोत्तर के अनेक स्वाधीनता सेनानियों ने देश की आजादी में योगदान दिया है। देश इनके बलिदान को हमेशा याद रखेगा।

स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास की तरह ही आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन और उद्यमशीलता का प्रतिबिंब है। हम भारतीय चाहे देश में रहें या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है। हमें गर्व है हमारे संविधान और हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर। ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध भारत आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है। आज भारत की सेना का सामर्थ्य अपार है, तो आर्थिक रूप से भी हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। आज दुनिया के हर मंच पर भारत की क्षमता और प्रतिभा की गूँज है। भारत अभाव के अंधकार से बाहर निकलकर आगे बढ़ रहा है।

75 साल की यात्रा में एक-एक कदम उठाते-उठाते आज देश इस मुकाम पर पहुँचा है। भारत की उपलब्धियां आज सिर्फ खुद के लिए नहीं हैं, बल्कि ये पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने वाली और पूरी मानवता के लिए उम्मीद जगाने वाली हैं। भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है—‘सम-दुःख-सुखम् धीरम् सः: अमृतत्वाय कल्पते’। अर्थात् जो सुख-दुःख, आराम तथा चुनौतियों के बीच भी धैर्य के साथ अटल, अडिंग और सम रहता है, वही अमृत को प्राप्त करता है, अमरत्व को प्राप्त करता है। आजादी के अमृत महोत्सव से भारत के उज्ज्वल भविष्य का अमृत प्राप्त करने के हमारे मार्ग में यही मंत्र हमारी प्रेरणा है।

दिल्ली में रह रहे लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलसाचिव और प्रभारी कुलपति रहे। संप्रति भारतीय जन संचार संस्थान नयी दिल्ली के महानिदेशक हैं। इन्होंने 25 पुस्तकों का लेखन एवं संपादन किया है।

खाली होता शब्दकोश!



■ सुधांशु गुप्त ■

Cह अपनी भाषा भूलता जा रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है, उसे ठीक-ठीक नहीं पता। पिछले कुछ दिनों से उसे बराबर इसका एहसास हो रहा है। नया शब्द तो छोड़ दीजिए, अब वह पुराने शब्द भी याद नहीं रख पाता। याद करता है तो उसे याद आता कि न जाने कितना समय हो गया इस शब्द को बोले हुए। यानी उसके शब्दकोश में से शब्दों की संख्या लगातार कम हो रही है। उसे आश्चर्य होता कि आम बोलचाल में भी जो शब्द उसे बहुत प्रिय थे, वह उन्हें भूल रहा है। मुख्तसर... फिलवक्त... दृष्टिगोचर... राफता... न जाने कितने शब्द हैं जिनके प्रयोग की अब कोई जरूरत नहीं रह गयी है। अगर इनकी जगह नये शब्द उसके शब्दकोश में शामिल हो रहे होते तो उसे कोई एतराज न होता, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा। मजे की बात है कि वह आम शब्दों को भी भूलने लगा है।

एक दिन घर में कोई आया, वह कहना चाहता था, तहे दिल से आपका स्वागत है। लेकिन उसके मुँह से सिर्फ यही निकला— स्वागत है। वह मेजबान और मेहमान का फर्क भूल गया। जहां उसे मेजबान कहना होता है, वहां मुँह से मेहमान निकल जाता है। और तो और उसे किसी का नाम लेना होता है तो उसके मुँह से किसी और का नाम निकल जाता है। उस दिन घर में छोटे भाइयों के बच्चे आये हुए थे— किंदू, अवनि और नोना। किंदू की उम्र अभी दो साल है। अवनि भी छोटी है। नोना आठ— नौ साल का है। वह नाश्ता कर रहा था

पराठा और दही। किंदू उसके पास ही पलंग पर बैठी थी। उसे खाते हुए देख रही थी। वह बोलना सीख रही है, हर नया शब्द उसे अपनी ओर आकर्षित करता है और वह उसे बोलने की कोशिश करती है। किंदू ने उसकी ओर देखते हुए कहा, “ताऊ कताओ न...।” उसे समझ नहीं आया, वह क्या कह रही है। लेकिन इस बात से बेखबर किंदू लगातार कहती रही... “ताऊ कताओ ना... मुझे भी कताओ...।” उसने अवनि से जब उसका मतलब पूछा तो उसने बताया, यह कह रही है इसे भी खिलाओ। उसने प्लेट में रखे पराठे का एक टुकड़ा तोड़कर उसे दे दिया। वह कमरे में धूम-धूम कर खाने लगी। उसे ‘कताओ’ शब्द अच्छा लगा। वह भी इसका प्रयोग करने लगा। जब भी किंदू आती वह कहता, “किंदू मुझे भी कताओ ना।” किंदू कहती, “अभी थोला लुको।” किंदू रोज ही कोई न कोई नया शब्द सीख रही है और वह हर रोज कुछ शब्द भूलता जा रहा है।

ऐसा क्यों हो रहा है। शायद उसे बोलने का अवसर ही नहीं मिलता। या उसे ऐसे लोग नहीं मिलते जिनके बीच बैठकर वह बोल सके, बतिया सके। शब्दकोश के अपने शब्दों का अभ्यास कर सके। एक दूसरी बात यह भी है कि बातचीत अब इतनी संक्षिप्त होती जा रही है कि बहुत से शब्दों को बोलने की उसे जरूरत ही नहीं पड़ती। कभी—कभी ऐसा भी होता है कि वह बोलना कुछ चाहता है और मुँह से कुछ और निकलता है। अपने ही घर में उसे ‘पापा’ शब्द सुने काफी समय हो गया है।

बच्चे बड़े हो चुके हैं। बड़ा बेटा ऑफिस जाते समय कभी—कभार ही उसे बाय बोलता है। अन्यथा वह दायें हाथ के अंगूठे को दिखाकर विदा ले लेता है। जब तक उसके मन में बोलने के लिए कोई बात आती है, वह जा चुका होता है। वह अकेला रह जाता है। वह सोचता है कि वह बेटे से क्या कहना चाहता था। शायद बाय ही कहना चाहता होगा। या यह भी हो सकता है कि उसे कोई काम बताना चाहता हो, लेकिन उसे बेटे से क्या काम हो सकता है? अब क्या काम हो सकता है। बच्चे बड़े हो गये हैं, अपनी दुनिया में बिजी हो गये हैं। बेटे को कुछ कहना होता है तो वह फोन करने के बजाय मोबाइल पर ही मैसेज भेज देता है। उसके मैसेज भी बहुत संक्षिप्त होते हैं। जैसे जब उसे रात को लेट आना होता है तो वह सिफ 'लेट' लिखकर भेजता है। वह जवाब में 'ओके' लिखकर भेज देता है। बेटा स्माइल या अंगूठे का इमोजी भेज देता है।

वह समझ जाता है कि सब खैरियत से है। बाद में वह खुद से ही बात करते हुए इन संक्षिप्त मैसेजों को पूरा करने की कोशिश करता है। जैसे, बेटे को यह भेजना चाहिए था—पापा आज रात देर से घर आऊँगा, चिंता मत करना या फिर आज ऑफिस में काम है, देर हो जायेगी आप सो जाना या इसी तरह और भी कुछ भेज सकता था। इसके जवाब में वह मैसेज भेजता, कोई बात नहीं बेटा, अपना ध्यान रखना और रात को ध्यान से आना, ओला कर लेना, मेट्रो शायद नहीं मिलेगी, ऑटो में रिस्क है आजकल, दिल्ली में लूटपाट की बहुत—सी घटनाएं हो रही हैं। लेकिन बात खत्म हो चुकी थी। वह सोचने लगा, इसमें बुराई क्या है? नयी तकनीक ने हमें यह सुविधा दी है। हमें इस सुविधा का इस्तेमाल करना चाहिए...कर ही रहे हैं। जाहिर है तकनीक की अपनी भाषा होती है। हमें उसके इस्तेमाल के लिए उसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। फिर बेटा ऑफिस में है। वहां वह बिजी होगा। उसके पास कहां इतना समय होगा कि लंबा—चौड़ा मैसेज भेजे।

एक दिन और भी अजीब बात हुई। रात का समय था। वह खाना खा रहा था। पत्नी खाने की थाली उसे देकर चली गयी। वह अपने कमरे में खाना खाने लगा। पत्नी अपने कमरे में खा रही होगी। थोड़ी—सी दाल कम पड़ गयी। पहले कभी दाल या सब्जी कम नहीं पड़ी। पत्नी को अंदाजा हो गया है कि वह कितना खाता है। वह हमेशा थाली में पर्याप्त चपाती और सब्जी या दाल लाती है। लेकिन आज दाल कम पड़ गयी। शायद अच्छी बनी होगी, इसलिए वह ज्यादा खा गया। उसे कम—कम खानी चाहिए। डेकोरम टूटना नहीं चाहिए। एकबारगी उसका मन हुआ कि बच्ची हुई रोटी को भी छोड़ दिया जाये। अब कौन उठकर चौथे कमरे से पत्नी को दाल देने के लिए कहे। फिर उसने पास रखे मोबाइल को देखा। पता नहीं क्या हुआ कि उसने पत्नी को मोबाइल पर

भाषा का विकास भी
तभी हुआ होगा जब इसके बिना
काम नहीं हो रहा था।
अब बिना कुछ बोले ही काम हो जाता है
तो धीरे—धीरे यह लुप्त
हो जायेगी।

मैसेज किया— दाल। पत्नी ने मैसेज नहीं किया। लेकिन पत्नी अपने कमरे से आयी। किचन में गयी और एक कटोरी में दाल देकर फिर अपने कमरे में चली गयी। यानी बिना एक भी शब्द बोले काम हो गया।

भाषा का विकास भी तभी हुआ होगा जब इसके बिना काम नहीं हो रहा था। अब बिना कुछ बोले ही काम हो जाता है तो धीरे—धीरे यह लुप्त हो जायेगी। उसके सामने पहले का समय आकर खड़ा हो गया। वह कमरे में खाना खा रहा है। मां किचन में खाना बना रही है। घर बहुत बड़ा नहीं है। आवाज किचन तक जा सकती है। उसने आवाज दी, मां एक पराठा और दे दो और थोड़ी—सी मूली की भुजिया भी दे जाना, भुजिया टेरस्टी बनी है। जितनी देर में मां पराठा और भुजिया लेकर आती, वह मां को नये—नये संबोधनों से पुकारता रहता... अम्मा...माई...बोई...मॉम...। मां भी इन संबोधनों से खुश होतीं। उन्हें अच्छा लगता कि वे बच्चों को ठीक से खाना खिला पा रही हैं। बच्चों से उनका संवाद बना हुआ है। और वह खुश होता कि इस बहाने वह नये—नये संबोधन सीख रहा है।

वह शेरो—शायरी का शौकीन है, पढ़ने का...उसे नये शब्द जानना और सीखना पसंद है। पिता की भाषा बहुत समृद्ध है। वह हमेशा नये—नये शब्दों का प्रयोग करते हैं। गलत शब्द बोलने पर वह टोक देते हैं। पता नहीं, कब की बात है। एक बार बारिश बहुत तेज हो रही थी। उसने बारिश को देखते हुए खुशी से कहा, कितनी तगड़ी बारिश हो रही है। पिता वहीं बैठे थे। उन्होंने टोकते हुए कहा, बारिश तगड़ी कैसे हो सकती है? पहले तो उसे कुछ समझ नहीं आया। फिर वह समझ गया कि बारिश के साथ तगड़ी शब्द का उसने गलत प्रयोग किया है। पिता ने फिर कहा, बारिश तेज हो सकती है, मूसलाधार हो सकती है या उसके लिए और भी शब्दों का इस्तेमाल हो सकता है। लेकिन तगड़ी शब्द का प्रयोग बारिश के लिए गलत है। उसके बाद से उसने कभी बारिश को तगड़ा नहीं बताया।

अक्सर वह विस्तर पर अकेला लेटा हुआ भी किसी न किसी कवि या शायर की कविताएं और शायरी

मुँह—मुँह में ही दोहराता रहता। आवाज बाहर नहीं निकलती थी, लेकिन उसके होठ हिलते रहते थे। एक बार वह इसी तरह किसी कविता का पाठ कर रहा था कि उसकी बड़ी बहन ने उसे देख लिया। बहन ने इस बात के लिए उसका खूब मजाक उड़ाया। लेकिन उसका यह अभ्यास छूटा नहीं। कभी फोन पर और कभी आमने—सामने बैठकर मित्रों की महफिल में वह खूब शायरी सुनाता। जाहिर है इससे उसका शब्दकोश समृद्ध होता चला गया।

लेकिन अब उसका शब्दकोश खाली हो रहा है। पिछले काफी सालों से उसके पास कोई ऐसा मित्र भी नहीं बचा, जिसे वह कोई कविता या शेर सुना सके। लिहाजा वह वर्षों पहले याद की हुई चीजें भूलने लगा है। वह न भूले, इसके लिए भी वह बाकायदा कोशिश करता रहता है। वह अपने कमरे में बैठकर अकेला ही किसी गुजल या कविता को बुद्बुदाता है। उसके सिर्फ होठ हिलते हैं। आवाज नहीं निकलती। यदि इस स्थिति में उसे कोई देख ले तो निश्चित ही उसे पागल समझे। लेकिन दिक्कत यहां भी है। जब वह मन में धीरे—धीरे किसी कविता को पढ़ रहा होता है तो उसे लगता है कि वह ठीक से पढ़ रहा है। लेकिन जब वही कविता या शेर वह किसी को सुनाता है तो शब्द इधर—उधर हो जाते हैं।

कई बार वह अच्छी तरह याद किये हुए शब्द भी भूल जाता है। ये गलती बार—बार हो रही है, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी है। वह अपनी भाषा को इस तरह गुम होते नहीं देख सकता। वह उसे बचाने का हरसंभव प्रयास करेगा...कर रहा है।

इसका तरीका उसने यह खोजा है कि अक्सर किसी जानकार या नये मित्र को फोन करता है। उस दिन यही हुआ। किसी काम के सिलसिले में एक लड़की से उसकी मुलाकात हुई। उसकी उम्र पता नहीं क्या होगी, लेकिन उसकी पढ़ाई—लिखाई और विभिन्न सेक्टर्स में काम के उसके अनुभव को देखते हुए कहा जा सकता है कि वह 30 साल के आसपास होगी। वह पाँच भाषाएं जानती है... जर्मन, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी और उर्दू। मिलकर लगा

कि सचमुच किसी योग्य व्यक्ति से मुलाकात हुई। उसने सोचा कि इससे उसकी निभ सकती है। यानी इससे उसका संवाद हो सकता है। वह खुद भी कविताएं लिखती है। फिल्म मेकिंग में भी उसकी रुचि है। वह जर्मन और अमेरिकन एम्बेसी में नौकरी कर चुकी है। वह अक्सर उसे फोन कर लेता है। कब से वह भीतर ही भीतर उसे एक शेर सुनाने का रियाज कर रहा था। सिर्फ इसलिए कि वह शेर उसे याद हो जाये और वह यह भी देख सके कि कहीं उसके मुँह से कुछ गलत तो नहीं निकल रहा। अच्छी बात यह है कि उसकी शायरी में भी खासी रुचि है। उसका नाम स्वाति है।

एक दिन स्वाति का फोन आया। उसने कहा, “गुड मॉर्निंग सर।”

उसने पलट कर जवाब दिया—
“गुड मॉर्निंग, कैसी हो स्वाति?”

आत्मविश्वास से भरा उसका जवाब था, “मैं अच्छी हूँ सर, आप कैसे हैं?” जैसे—जैसे बातचीत आगे बढ़ने लगी, उसका यह डर बढ़ता गया कि कहीं उसे सुनाने के लिए जो शेर याद किया है वह भूल न जाये।

उसने कहा,
स्वाति बाकी
बातचीत हम
बाद में
करेंगे, पहले
आप एक

शेर सुनिए...पता नहीं
उसने क्या सोचा होगा, लेकिन उसने स्वाति के जवाब से पहले ही शेर सुनाना शुरू कर दिया...“मैं तुम्हारे काम आऊँ या न आऊँ मुझे बुला लेना अच्छा लगेगा।”

पता नहीं स्वाति को कैसा लगा होगा। उसने कहा, अच्छा शेर है सर, लेकिन मैं आपसे बाद में बात करती हूँ किसी की इंपोर्टेंट कॉल आ रही है। उसने फोन काट दिया। वह समझ गया कि उसने अकारण ही उसे शेर सुनाया। उसे यह भी ध्यान आ गया कि शेर में ‘मुझे आवाज दे लेना’ की जगह उसने ‘मुझे बुला लेना’ सुना दिया। यह भी उसे समझ आ गया कि शेर अप्रासंगिक था। उसने हाल ही में तहजीब हाफी का यह शेर सुना था, उसे पसंद आया। वह किसी को यह शेर सुनाना चाहता था, लेकिन अब क्या हो सकता था। पता नहीं वह उसके बारे में क्या सोच रही होगी। सोचने दो।

“अकेले बैठे क्या बुद्बुदाते रहते हो?” अचानक पत्नी ने कमरे में आकर कहा।

"मैं तो कुछ नहीं बुद्बुदा रहा।" उसने जवाब देने की कोशिश की। "होठ तो हिल रहे थे, ऐसा लग रहा था किसी से कुछ कह रहे हो।"

उसने कुछ नहीं कहा। पत्नी अंदर चली गयी। क्या इंप्रेशन लेकर गयी होगी इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। मुश्किल तो हो ही गयी है... बड़ी मुश्किल, जिसका कोई इलाज नहीं है। लेकिन वह जानता है कि अगर ऐसे ही चलता रहा तो एक दिन वह सब कुछ भूल जायेगा। वह पत्नी से रोटी माँगेगा तो उसके मुँह से दाल निकलेगी और चाय माँगेगा तो दूध या लस्सी। दरअसल हो यह रहा है कि दो बातें, दो शब्द और दो विचार एक साथ उसके जेहन में आते हैं। उनका आपसी रिश्ता टूट चुका है। धीरे-धीरे यह रिश्ता और कमज़ोर होता जायेगा। फिर एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब उसके पास बोलने के लिए शब्द खत्म हो जायेंगे। तब वह या तो इशारों में बात करेगा और हो सकता है तब नये-नये इमोजी बाजार में आ जायें।

दिन इसी तरह बीतते रहे। बिना बोले, बिना सुने। कुछ दिन बाद घर में किंदू आयी। उसने महसूस किया, इस बार उसने बहुत से नये शब्द सीख लिये हैं।

आते ही उसने अपने नन्हे-नन्हे हाथ जोड़कर कहा, ताऊ जी नमस्ते...। उसने भी खुश होकर जवाब दिया। फिर किंदू ने कहा, "ताऊजी मैं कल शो कल उथी तो मुझे घल में अपना कूलल दिखाई नहीं दिया तो मैंने छोचा हमारा कूलल बाबा ले गया है।"

उसने पूछा, "फिर कैसे मिला कूलल?"

किंदू ने फिर कहा, "ममा ने उसे बाँध कर लख दिया था।"

सर्दियां आने वाली हैं और अब कूलर की कोई जरूरत नहीं है। उसे बहुत अच्छा लगा कि किंदू ने 'सोचना' शब्द सीख लिया।

कुछ देर ताई के साथ खेलते रहने के बाद किंदू को एक बात याद आयी। वह उसके पास चली आयी। वह खिड़की के पास लगी किताबों को अक्सर ढूँढती रहती है। उसने कहा, "पचततल...।"

"पचततल क्या बेटे?"

"पचततल," उसने फिर कहा।

वह सोचता रहा कि यह क्या माँग रही है। पत्नी ने आकर बताया, अरे यह कह रही है कि इसे पंचतंत्र की कहानियों वाली किताब ला देना।

वह सोचने लगा, अब किंदू ने पंचतंत्र बोलना सीख लिया। वह और भी नये शब्द बोल रही है। उसकी तुलाहट मजेदार लगती है। कभी वह सज्जी बनाने का अभिनय करती है तो कभी घर में सफाई करने का।

उसके सामने जो भी शब्द बोलो वह उसे अपनी भाषा में बोलती है। उसने किंदू से पूछा, किंदू बड़ी होकर क्या बनेगी?

किंदू ने कहा, टीचल...।

उसने कहा, नहीं हमारी बिटिया तो डॉक्टर बनेगी नई...टीचल
डॉक्टर

टीचल...टीचल...टीचल...डॉक्टल नहीं...टीचल

किंदू ने एक और नया शब्द बोलना सीख लिया डॉक्टर। लेकिन उसे लगा कि उसकी गुम होती भाषा को बचाने में किंदू मददगार हो सकती है। वह भी उसके साथ नये-नये शब्द बोलना और उनका अभ्यास करना सीख सकता है। उसने किंदू को गोदी में उठाया और उसके गालों में पुच्छी कर दी।

वह बोली, पुच्छी नहीं कलो।

उसने फिर पुच्छी नहीं की, लेकिन वह आश्वस्त हो गया। अब उसकी भाषा बच सकेगी। अब वह गलत शब्द नहीं बोलेगा। वह भी किंदू के साथ अपने शब्दकोश में इजाफा करता रहेगा। अब उसका शब्दकोश खाली नहीं होगा।

दिल्ली में रहने वाले लेखक पत्रकारिता में तीन दशक

गुजारने के बाद अब पूरी तरह लेखन से जुड़े हुए हैं।
इन्होंने अनेक साहित्यिक उपन्यासों का रेडियो के लिए रूपांतरण किया है तथा टीवी चैनलों के लिए अनेक धारावाहिक लिखे हैं।



मुक्ति की पावन दिशा में कदम बढ़ायें...

■ विजय सिंह नाहटा ■

जि

न आचारों, विचारों और व्यवहार पद्धतियों से मनुष्य आत्म तत्त्व की असली सत्ता को समझकर उसके समीप पहुँचने का उपक्रम करता है, निष्कर्षतः वही धर्म है और वही आत्मा को मूल स्वरूप में स्थित बनने की दिशा में आरोहण बनता है। आत्म तत्त्व चेतन है और बाकी सब कुछ जड़ तत्त्व है – यह बोध जितना प्रगाढ़तर होता है, मनुष्य की अप्रमत्त चेतना का विकास भी पुष्ट होता चला जाता है।

आत्मा नित्य है लेकिन हर प्राणी में उसके कर्म जनित संस्कारों के अनुरूप न्यूनाधिक विकास दृष्टिगम्य होता है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म चेतना धारी जीवों से लेकर सिद्धत्व की महान मंजिल तक पहुँचने की यात्रा वस्तुतः आत्म तत्त्व के उत्तरोत्तर ऊर्ध्वगमन की क्रमिक यात्रा है। धर्म का विराट राजप्रासाद आत्म बोध और आत्म विकास के सुदृढ़ स्तंभों पर टिका हुआ है। जो आत्मा को समुज्ज्वल बनाये, ऐसे तमाम अध्यवसाय धर्म कहे जायेंगे। इनसे पृथक् कोई भी प्रयास धर्म कदापि नहीं हो सकता—इस मूल भाव को समझना नितान्त आवश्यक है। अहिंसा, संयम और तप—ये तीनों प्रक्रियाएं हैं जो मोक्ष की अंतिम निष्पत्ति तक जीव को पहुँचाती हैं।

अहिंसा, संयम और तप से विहीन कोई भी अनुष्ठान धर्म नहीं हो सकता। आत्म दर्शन या आत्म साक्षात्कार का मार्ग पूर्णतः स्वावलंबन का मार्ग है—आत्म विकास जीव को स्वयमेव करना होता है—कोई आपके बदले में आपकी आत्मा का कल्याण नहीं कर सकता।

वस्तुतः धर्म की समस्त क्रियाएं ही आभ्यन्तर की ओर प्रयाण का मंजुल आहवान हैं। एक तरह से संपूर्ण पौद्गलिक जगत और दृश्यमान जगत से एकान्तिक पृथक्करण करते हुए नित्य तत्त्व का अनुशीलन और अनुप्रेक्षा में परिभ्रमण करना, यही साधक को इष्ट है। अनित्य तत्त्व किंवा अनात्म के प्रति जीव की छद्म आसक्ति और व्यामोह को तोड़कर नित्य तत्त्व (आत्म तत्त्व) की शरणागति में बने रहना—उसी में रमण करना धर्म की यात्रा है। जो शरण योग्य है—उसी की शाश्वत अवस्थिति में अप्रमत्त भाव से विचरण करना धर्म का मार्ग है—अवशेष सब अधर्म है।



कई बार यह चिंतनीय लगता है कि क्या अनुष्ठान, आडम्बर और आरम्भ समारम्भ इत्यादि धर्म से अनुप्राणित होते हैं? कालांतर में अनुष्ठान संस्कृति आडम्बर संस्कृति में तब्दील हो जाती है। कई बार क्रियाएं मुख्य हो जाती हैं और धर्म गौण। जो क्रिया आत्म शुद्धि का हेतुभूत बने, ऐसी किसी क्रिया से कोई परहेज नहीं। मगर धर्म के नाम पर मिथ्यात्व का पोषण करने वाला कोई भी अध्यवसाय आदेय नहीं।

आचार्य भिक्षु ने कर्म पुद्गलों को आकृष्ट बनाने वाली हर प्रवृत्ति को पाप कहा। अनुष्ठान के समय हमारी विवेक जागरण और अप्रमत्तता का भाव रहे—इसकी पूरी तैयारी रहे। चूँकि अनुष्ठान सरल होते हैं, अतएव लोकप्रिय हो जाते हैं—आत्म साधना का मार्ग कठोर और कंटकाकीर्ण होने से विरले ही उस राह के पथिक बनते हैं—लेकिन कोई बने या नहीं—कोई चले या न चले—इससे साधक को क्या? उसे तो स्वयं उस मार्ग पर चलकर सत्यान्वेषण की दिशा में प्रवहमान बने रहना ही इष्ट है। यह मार्ग पूर्णतः निरपेक्ष, तटस्थ, अपवाद रहित है परन्तु है नितान्त निजी और आत्म केन्द्रित। इसीलिए एक न एक दिन भीतर प्रवेश करना होगा—ऐसा साहसिक कदम उठाना ही होगा। इसके बिना यात्रा शुरू नहीं होगी। भगवान महावीर ने धर्म को रुढ़ और जटिल अनुष्ठानिक आडम्बरों और क्रियाकाण्डों से बहुत कुशलता से बाहर निकाला और आत्म दर्शन की भूमिका पर प्रतिष्ठापित किया—यह अध्यात्म के क्षेत्र की युगांतरकारी घटना है।

अब भीतर का अवगाहन किस प्रविधि से हो? कैसे हो भीतर में प्रवेश? भीतर के परकोटे के कठोर कवच को तोड़ने का प्रथम उपाय है—ध्यान यानी चित्त की



एकाग्रता और स्थिरता जिससे जीव की स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा शुरू होती है – विचार से निर्विचार की पीठिका में प्रवेश सुगम बनता है और शुरू होता है अनुभव के विराट संसार में विचरण। स्वयं को स्वयं से ही जानने का उपक्रम। जहां जानना ही विलुप्ति को प्राप्त हो जाये। व्यक्ति परम अर्हता को हासिल करने के स्तर पर पहुँच जाये। सर्वोच्च ज्ञान 'कैवल्य' को उपलब्ध हो जाये—यह ध्यान की चरम परिणति है। यही मुक्ति है—मोक्ष है—सिद्धत्व की अवश्या है।

दूसरा साधन है स्वाध्याय या आत्म सुमिरन। यह जो नित्य तत्त्व आत्मा है उसका निरन्तर स्मरण करना—सतत स्मरण करते रहना—मानसिक, वाचिक और कायिक ऊर्जा का निवेश करना और शनैः शनैः यह सुमिरन इतना प्रगाढ़ होता जाये कि स्वाध्याय और साधक एकाकार हो जाये। पृथकत्व न रहकर एक्य भाव सध जाये तो स्वाध्याय के जरिये साधक आत्म रहस्यों का साक्षात्कार करता हुआ आत्मा के संग चिपके हुए कर्म पुद्गलों का क्षय कर सकता है और आत्मा के धुंधले बिम्ब को निर्मल और उज्ज्वलतर बना सकता है। फिर कोई रहस्य अज्ञात नहीं रहता, सब कुछ आत्म साक्षात्कार की परिधि में समाहित हो जाता है। यह निरन्तर अभ्यास से सधता है।

साधक जितना अध्यवसायी होगा, पथ का कुहासा भी छँटता चला जायेगा और एक सुबह होगी मुक्ति के दिव्य लोक में। धर्म का मार्ग प्रवृत्ति का नहीं, निवृत्ति का मार्ग है। निवृत्ति की चेतना वर्धमान बने—ऐसा प्रयास साधक का सदैव संपुष्ट होना चाहिए। समस्त बंधनों को तोड़कर कषाय मुक्ति की अवश्या में पहुँचना ही अध्यात्म का फलित है। अपनी अस्मिता और अस्तित्व के पार अनस्तित्व में पहुँचना—जहां कुछ पाना, जानना, बनना अवशेष न रहे—यही सिद्धत्व, बुद्धत्व और मुक्तावश्या है। दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप के चतुष्टय से इस महान मंजिल को प्राप्त किया जा सकता है। यही श्रेयष्ठर है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र रूपी रत्न त्रयी का संगम ही मोक्ष का प्रवेश द्वार है।

आत्मा के उच्च स्थान में स्थित हो जाने से साधक को दो मूल्यवान निष्पत्तियां प्राप्त होती हैं—: प्रथम, जीवात्मा सदा—सदा के लिए नैसर्गिक स्वरूप को प्राप्त हो जाती है। यह आत्मा का ही मूल और स्वाभाविक रूप है, लेकिन कर्म पुद्गलों से आवृत्त आत्मा भव परिभ्रमण में पड़ी रहती है। दूसरा, भव परिभ्रमण और चतुष्टात्मियों में जन्म—मृत्यु की अनादि शृंखला का अंत। अतएव धर्म की सबसे संक्षिप्त और सारगमित परिभाषा यही हो सकती है—“ऐसे धारणीय और करणीय आचार जो आत्मा को समुज्ज्वल बनायें, वही धर्म की श्रेणी में रखे जाने योग्य हैं। धर्म ऐसे करणीय नियमों का समूह है। ऐसे क्रियात्मक नियम जो आत्मा को उन्नत बनाने वाले हों वे ही श्रेय और उपादेय हैं।”

निष्कर्ष की भाषा में कहा जाये तो धर्म आत्मा के उर्ध्वरोहण की क्रमिक यात्रा है। जब तक आत्मा सिद्ध, बुद्ध, मुक्त नहीं होती—इसके अंतराल में जो भव परिभ्रमण होता है, उसे यात्रा के भिन्न—भिन्न पड़ाव समझ सकते हैं। इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव मनुष्य भव है। इसी भव से मोक्ष की अनुकूलता है, अन्यत्र नहीं।

आओ ! मनुष्य भव से हम मुक्ति की पावन दिशा में कदम बढ़ायें—यही मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

जयपुर निवासी लेखक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और  हिन्दी के वरिष्ठ कवि—समीक्षक हैं। इनकी कई साहित्यिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

लघुकथा

कौन सुधा?

■ एस. भाग्यम शर्मा ■

“आर्यन बहुत ही बदल गया। देखा तुमने ?”
मेरे बाबूजी ने कहा। “मुझे भी फर्क नजर आया।”
मेरी पत्नी ने भी हामी भरी।

“स्कूल से आते ही हाथ—मुँह धोकर सीधे मेरे कमरे में आ जाता है। जब पढ़ाई पूरी कर लेता है तब साढ़े आठ बजे टीवी चलाता हूँ। मात्र आधा घंटा टीवी देखने के बाद खाना खाकर सो जाता है। फिर सुबह पाँच बजे ही उठकर पढ़ने बैठ जाता है।” बड़े गर्व से बाबूजी बोले। मुझे भी बहुत अच्छा लगा।

अगले दिन इतवार को जब मैं बगीचे में धूमने गया तो सातवीं में पढ़ने वाला आर्यन बड़े आराम से बोला, “पापा, दादाजी सचमुच में सुधर गये। जब वे अकेले रुम में रहते थे तब रोज सिगरेट पीते थे। अब जबसे मैं उनके कमरे में रहने आ गया, तबसे उन्होंने मेरा ध्यान रखना शुरू कर दिया है। पोते के सामने सिगरेट पीना तो अच्छी बात नहीं है, ऐसा सोचते हैं। आप देखना पापाजी ! इस महीने जब दादाजी को डॉक्टर के पास चेकअप के लिए ले जाओगे तब रिपोर्ट अच्छी ही आयेगी।” आर्यन बोला।

दक्षिण भारतीय लेखिका जयपुर में रहती हैं।  इन्होंने 10 तमिल उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया है तथा दो उपन्यास भी लिखे हैं।

अनीत के द्वारा कैसे

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अद्वशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के दिसम्बर 1971 के अंकों से ली गयी है।

अहिंसा : आत्मा की खुराक

जब खुराक ठीक तरह से ली जाती है, तो वह शरीर को पुष्ट करती है। इसी तरह अहिंसा का उचित पालन करने पर वह आत्मा का पोषण करती है। शरीर की खुराक तो मर्यादित प्रमाण में और अमुक-अमुक समय पर ही ली जा सकती है। लेकिन अहिंसा, जो आत्मा की खुराक है, उसका सेवन तो अहनिश चालू रखना होता है। इसमें तृप्ति नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। मुझे प्रतिक्षण इस बात का ध्यान रखना है कि मैं एक ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रहा हूँ और इस ध्येय की दृष्टि से मुझे अपने विचार, व्यवहार आदि की कसौटी करते रहना है।

अहिंसा की पहली सीढ़ी यह है कि हमें अपने नित्य के जीवन में, एक-दूसरे के साथ के व्यवहार में, सत्य, नम्रता, सहिष्णुता, प्रेम, करुणा आदि का विकास करना है। अंग्रेजी

में कहावत है कि प्रामाणकिता श्रेष्ठ व्यवहार-नीति है। किंतु अहिंसा की दृष्टि केवल व्यवहार-नीति नहीं। व्यवहार-नीति तो शायद बदल भी जाये, और बदलती ही है, पर अहिंसा तो एक अविचल सिद्धांत है। अपने चारों ओर हिंसा के दावानल के सुलगने पर भी उसका पालन करना चाहिए।

अहिंसक मनुष्य अहिंसा का पालन करे, इसमें पुण्य की कोई बात नहीं। असल में वह अहिंसा ही है या कुछ और, कहना कठिन हो जाता है। लेकिन जब वह हिंसा के सामने खड़ा होता है, उससे टक्कर लेता है, तब हिंसा-अहिंसा के बीच का भेद मनुष्य समझ सकता है। हम सदा जाग्रत रहें अपने ऊपर सतत पहरा रखें और अविरत प्रयत्न करते ही रहें, तभी अहिंसा सध सकती है अन्यथा नहीं।

-महात्मा गांधी

अहिंसक प्रतिकार में निर्वरता का स्थान आचार्य विनोबा भावे

क्या दुनिया में और क्या भारत में, हमेशा संत, सत्पुरुष हुए हैं और उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक मूल्य समझाये हैं। लेकिन जब युग की माँग और संतों के उपदेश का संयोग होता है, तब क्रांति होती है। गांधीजी के बारे में हमें यह देखने को मिला। गांधीजी ने कहा, हिंसा का प्रतिकार अहिंसा से करो, असत्य का प्रतिकार असत्य से करो। उन्होंने निःशस्त्र प्रतिकार करना सिखाया। भगवान बुद्ध, महावीर और अनेक संतों ने हमें यही सिखाया। लेकिन जब गांधीजी की जबान पर यह बात आयी, तो उसका क्रांतिकारी अर्थ

प्रकट हुआ, क्योंकि उसके लिए ऐतिहासिक भूमिका थी।

अंग्रेजों ने एक बेजोड़ काम किया। उन्होंने प्रजा को सम्पूर्ण निःशस्त्र बना दिया। ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान के सामने एक बड़ा सवाल खड़ा हो गया-वह या तो हमेशा के लिए अंग्रेजों का गुलाम बना रहे या फिर कोई नया अधिक शक्तिशाली शस्त्र शोध निकाले। अतः निःशस्त्र मार्ग की खोज करने की ऐतिहासिक आवश्यकता पैदा हुई। इसी में से महात्मा गांधी आये। वे न आये होते तो दूसरा कोई आता।

गांधीजी गुजरात की संस्कृति रूपी आम के फल थे। इस प्रदेश में जो तपस्या हुई, उसके परिणामस्वरूप गांधीजी यहां पैदा हुए थे। गुजरात को सबसे ऊपर तैर आने वाला एक गुण है, वहां की आम जनता द्वारा अपनायी गयी सार्वत्रिक अहिंसा। गुजरात की आम जनता ने मांसाहार का पूरा-पूरा त्याग किया है। ऐसी घटना दुनिया में और कहीं देखने को नहीं मिलती। यह छोटी-मोटी घटना नहीं है। यह जो अहिंसा है, उसी के परिणामस्वरूप गांधीजी जैसी विभूति गुजरात में पकी और सारी दुनिया के दुःखों का निवारण



अतीत के द्वाष्ट्रैवे से...

एक विशिष्ट प्रकार के प्रतिकार से हो सकता है, इसका उसे दर्शन हुआ।

अंग्रेजों का राज्य शक्तिशाली था, उनकी पकड़ जोरदार थी। उनका मुकाबला कैसे किया जाये? इसकी अहिंसक युक्ति गांधीजी ने सिखायी। उन्होंने कहा – ‘हम निर्वैर भी रहेंगे और सामना भी करेंगे।’ दुनिया को यह एक बड़ा विचार मिला। उसमें निर्वैरता और प्रतिकार-वृत्ति दोनों मिल गये। निर्वैरता से प्रतिकार की शक्ति बढ़ी और प्रतिकार से निर्वैरता की।

‘ना’ कहने की शक्ति, ‘गलत काम में सहयोग नहीं दूँगा’ यह कहने की हिम्मत, हममें आनी चाहिए। ऐसा करते हुए मरना पड़े तो मर जायें। मृत्यु से हम न डरें। यह है असल अहिंसा। लड़ाई में जाकर कहना चाहिए कि मैं मरने के लिए तत्पर हूँ, लेकिन मारूँगा

नहीं। यह ताकत है अहिंसा की और यही खरी शक्ति है। ऐसी अहिंसा की शक्ति के सामने अणु-शक्ति भी कुछ नहीं कर सकती। यह युक्ति गांधीजी ने सिखायी। वास्तव में यह हमारे पुरातन ऋषि-मुनियों की युक्ति है। गांधीजी ने इस शक्ति का राजनैतिक क्षेत्र में प्रयोग करके बताया।

दुनिया और भारत के लोगों को कुछ शंका रह गयी है कि हमें जो स्वराज्य मिला है, वह केवल अहिंसा की शक्ति से नहीं। मूल बात यह है कि वीर को शोभा दे, अहिंसा का ऐसा प्रयोग हमने किया नहीं। हमारी अहिंसा लाचारी की अहिंसा थी। गांधीजी जिस तरह का प्रतिकार चाहते थे, वैसा न हो सका। मन में तो द्वेष रखते थे और ऊपर-ऊपर से अहिंसा का आचरण दिखाते थे। परिणामतः स्वराज्य आया,

फिर भी हमें प्रतीति नहीं हुई कि हमने अहिंसा से स्वराज्य हासिल किया है। अहिंसा की शक्ति का कुछ चमत्कार तो हमने देखा, फिर भी उस शक्ति का हमें अपने भीतर प्रत्यय नहीं मिला।

पहले के धर्मों ने मान लिया कि अहिंसा उत्तम है जरूर, लेकिन वह व्यक्तिगत जीवन में तो हिंसा के साथ थोड़ा समझौता करना ही पड़ता है। इस तरह गांधीजी ने जो शिक्षण हमें दिया, उसे लोग गौण मानते हैं। इसका कारण यह है कि समाज में अभी तक नैतिक साधन की जितनी चाहिए, उतनी प्रतिष्ठा नहीं हुई। इसलिए मैं बहुत बार कहता हूँ कि हम सब गांधीजी के अनुयायी भले कहलाते हों, लेकिन वास्तव में हममें से कई तिलक महाराज के ही अनुयायी हैं।

तपे बिना कोई ज्योति नहीं बनता

साध्वीश्री रत्नश्री

जीवन क्या है? वह समुद्र की यात्रा, निस्सीम की ओर प्रस्थान तथा अनन्त में प्रवेश है। सावधान, उसमें खतरे बहुत हैं। अपनी समग्र क्षमताओं को बटोरकर आगे बढ़ो! रुको मत! चलते चलो! बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे हुए कहा था-‘भिक्षुओं-‘चरैवेति चरैवेति चरन्वै मधु विन्दति।’ अर्थात् चलते चलो! चलते चलो! चलने वाला मधु को प्राप्त करता है। अपने लक्ष्य को स्थिर करके हमेशा उस ओर बढ़ते रहो। निरंतर बढ़ते रहो। मानव तुम भी अनन्त शक्ति के धारक हो। अपनी जीवन

यात्रा में आने वाले कष्टों से ज़ूझने के लिए तुममें भी अनन्त-अनन्त क्षमताएं हैं। मुझे पूर्ण भरोसा है तुम्हारे सामर्थ्य पर।

वह भी तो मानव था, जो प्रलयंकारी गोलोली की झील में मस्ती से लेटा रहा। अनन्त नील आकाश को अन्वेष्टा की दृष्टि से देखता रहा। जबकि तूफान से उछलती हुई नौका में अन्य सब यात्रियों के प्राण उड़ते जा रहे थे। उसका मस्ती से सोना यात्रियों को बहुत अखरा क्योंकि उनके कलेजे भय और मृत्यु से काँप रहे थे। वे चिल्लाये-“ओ पगले! नाव ढूब रही है। हम सब मरे जा रहे हैं।” उस मस्त

युवक ने आँखें शांति से खोलीं और निर्भीकता से झील की ओर झांका और गंभीरता से बोला-“झील! शांत हो जाओ! झील शांत हो जाओ!” यह कहते ही झील धीरे-धीरे शांत हो गयी और वे सकुशल अपनी मंजिल पर पहुँच गये। क्या हमारी जीवन यात्रा में आने वाले संकट दूर नहीं हो सकते? क्या हमारी मानस-झील में उठने वाले भय और आतंक के तूफान शांत नहीं हो सकते? क्या हम उन्हें ललकार नहीं सकते? सभी कुछ संभव है यदि हमारे दिलों में निर्भीकता और दृढ़ आत्मविश्वास हो।

अतीत के झूटोंसे क्ये...

आज का मानव शायद यह सोचता है कि यातनाओं की जिन संकरी गलियों में से आज गुजरना पड़ रहा है, वैसा शायद ही किसी जमाने के मनुष्य को गुजरना पड़ा होगा। यह सोचना उसका निरा ध्रम है। हर जमाने की अपनी-अपनी परिस्थितियां होती हैं, हर युग की अपनी-अपनी समस्याएं और समाधान होते हैं। जो आज है वह कल भी था और वह आने वाले कल में भी होगा। लेकिन उन परिस्थितियों से जूझने का सामर्थ्य जागृत हो, तो हर व्यक्ति महावीर और बुद्ध बन सकता है। महावीर और बुद्ध कोई स्वर्ग से सीधे नहीं उतरे थे। उन्होंने भी धरती पर जन्म धारण किया था। वे भी मानव थे। लेकिन वे कष्टों के सामने कभी झुके नहीं। संकटों को उन्होंने योद्धा की तरह ललकारा था। विकट परिस्थितियों को देखकर भी वे चलते चले। कभी भी रुके नहीं। तभी वे जनता के आदर्श बन गये।

आखिर इंसान में से ही भगवान प्रकट होता है। आत्मा में ही परमात्मा का अस्तित्व है। जो धीर-गंभीर और स्थिर होकर सतत चलता रहता है, उसे निश्चित अपनी मंजिल मिलती है। आचारांग में कहा है—‘नो उच्चावयं मणं नियंछिज्जा’ संकट के समय मन को डांवाडोल मत होने दो, किंतु अपने लक्ष्य की अनन्त ऊँचाई की ओर दृष्टि फैलाओ, अपने आदर्शों की रमणीय कल्पनाओं से मन को आहलादित करो। तुम्हारा साहस दुगुना हो जायेगा और भय एवं संकट की छाया छू तक नहीं पायेगी।

फूलों की तरह हर परिस्थिति में मुस्कुराना ही तो जीवन है। पानी की तरह अवरोधों को पार कर सतत बहते रहना ही जीवन है। कहा भी है—

हर बक्त गुल बनकर मुस्कुराना जिंदगी है,
मुस्कुरा कर गम भुलाना जिंदगी है
सफलता पर खुश हुए तो क्या हुए,
हार पर खुशियाँ मनाना जिंदगी है।

तुम हार को खुशी से प्यार करोगे, थपेड़ों में हँसोगे और मुसीबतों में गुनगुनाओंगे तो जिंदगी में एक अजीब चमक आ जायेगी तथा जीवन जीने का सही करीना आ जायेगा।

उच्चतम भावना

कोई भी जीव अपने अस्तित्व को मिटाना नहीं चाहता। अस्तित्व पर आक्रमण होने से वह स्वभावतः शक्ति भर प्रतिकार करता है। इस अस्तित्व भावना या अहंता के कारण ही संसार टिक रहा है और चल रहा है। अस्तित्व को भी विसर्जित कर देना मनुष्य की उच्चतम भावना है— इसका विकास होना चाहिए। अस्तित्व सुरक्षित रखने की अभिलाषा को समूल मिटा देना मनुष्य समाज के लिए संभव नहीं है, भले ही वह उपादेय हो।

—हरिभाऊ उपाध्याय

बच्चा उठता है, गिरता है, फिर चलता है। कितनी चोटें उसे लगती हैं तब कहीं उसकी टांगों में ताकत आती है और वह गतिशील बनता है। वह यदि गिरने से अथवा चोटों से घबरा जाये तो कभी भी चल नहीं सकता। इसी भाँति हर इंसान के जीवन में घटित होता है।

गमनशीलता का नाम जीवन है और विराम लेने का नाम मृत्यु है। यदि अपने आप को कुछ कामयाब बनाना है तो ‘तपो और खपो’, ‘तपे बिना कोई ज्योति नहीं बन सकता, खपे बिना कोई मोती नहीं बन सकता।’ सोना आग में तपने के बाद ही तेजस्वी बनता है। ठीक यही हालत मानव की है। जो समस्याओं की आग में जितना ज्यादा खरा उतरेगा, वही अपनी इस विशाल यात्रा में कुशल एवं सफल यात्री कहलायेगा।

शहर कैसे बचे

साध्वी जतनकुमारी (सरदारशहर)

मशीनों की खड़ खड़
तेज वाहनों की चिल्लाहटें,
शेषनाग थर्रा रहा है
शहर कराह रहा है।

मील के धुएं की धुटन
और कालिख की सौगात
बँट गयी है
पार्श्वर्वती भागों में
अंट गया है जीवन का कैनवास।

अब तुम्हीं बताओ
आघातों, व्याघातों और
प्रत्याघातों से पीड़ित
शहर को कैसे बचाया जाये?
कालिख को कैसे पचाया जाये?
और पवित्रता को कैसे रचाया जाये?



आंदोलन समाचार

अणुव्रत अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का नागरिक अभिनंदन

अणुव्रत अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी लाडनूं चातुर्मासिक प्रवास सम्पन्न कर 3 नवम्बर की प्रातः सुजानगढ़ पधारे। प्रातःकालीन आयोजन में सुजानगढ़ कन्या मण्डल की बालिकाओं ने आचार्य श्री का स्वागत सामूहिक गीतिका के द्वारा किया। श्री इन्द्र कुमार नाहटा ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। कुमारी कंचन डोसी ने आचार्य श्री के कार्यक्रमों का संक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए महिला समाज में नव-जागृति लाने के लिए आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

6 नवम्बर को आचार्य प्रवर गुलेरिया पधारे। 7 नवम्बर को छापर में आचार्य श्री का नागरिक अभिनंदन किया गया। 8 नवम्बर को आपका पधारना चाड़वास हुआ। 9 नवम्बर को युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी बीदासर पधारे। प्रातःकालीन आयोजन में श्री मांगीलाल बैंगानी, श्री आशकरण सेठिया, श्री जेठमल सेठिया, श्री कमलचंद बैंगानी, श्री विमल घोड़ावत ने भाषण व गीतिकाओं द्वारा आचार्य श्री का भावभीना अभिनंदन किया।

11 नवम्बर की रात्रि को मुनिश्री नथमल जी ने सारगर्भित वक्तव्य दिया। 13 नवम्बर को आचार्य श्री सांडवा पधारे। प्रातःकालीन आयोजन में श्री हरिदत्त शर्मा ने स्वागत भाषण किया व श्री घेवरचंद छाजेड़ ने आचार्य प्रवर का अभिनन्दन किया। 15 नवम्बर को सायंकाल आचार्य श्री बम्बू पधारे। 16 को तेनदेसर व 17 को जसरासर पधारे।

पेटलावद अणुव्रत समिति : पुरस्कार वितरण

गत वर्ष स्थानीय अणुव्रत समिति के तत्वावधान में हुई गतिविधियों में प्रमुख रूप से भाग लेने वाले व पुरस्कृत किये गये व्यक्तियों को 2 नवम्बर को झाबुआ के जिला कोषालय अधिकारी श्री रमेशचन्द्र केवलिया ने पुरस्कार वितरित किये। साध्वीश्री सत्यवती जी ने प्रेरणादायी प्रवचन किये। स्थानीय अणुव्रत समिति को इस अवसर पर श्रीमती केशरबाई भण्डारी ने एक रनिंग शील्ड प्रदान की।

3 नवम्बर को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी की सुशिष्या साध्वीश्री तीजाजी एवं उनकी सहवर्तीनि साध्वियों को चातुर्मासि की परिसमाप्ति पर विदाई दी गयी। इस अवसर पर साध्वीश्री सत्यवती जी, साध्वीश्री कमलावती जी एवं साध्वी प्रमुखा श्री तीजाजी ने प्रेरणाकारी प्रवचन किये।

नैतिक विचारों का प्रसारण आवश्यक

14 नवम्बर को उदयपुर में मुनिश्री सुखलालजी के सान्निध्य में 'नैतिक विचारों को कैसे आगे बढ़ाया जाये' विषय पर विचार परिषद् का आयोजन सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम अर्थशास्त्र के प्राध्यापक श्री भैरूलाल धाकड़ ने संयोजकीय वक्तव्य दिया। विचार परिषद् में प्राकृत के प्राध्यापक डॉ. प्रेम सुमन, राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक डॉ. चांदमल जैन एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री सबल सिंह नेणावटी तथा मंत्री श्री दरियाव सिंह मेहता ने भी वक्तव्य दिये।

मध्याह्न में मुनिश्री सुखलाल जी के सान्निध्य में कॉलेज स्तरीय तेरापंथी छात्रों की एक गोष्ठी संगठन पक्ष पर विचार-विमर्श हेतु सम्पन्न हुई। 14 नवम्बर को मुनिश्री का विवेक विद्या मंदिर में प्रवचन हुआ। मुनिश्री ने मानसिक एकाग्रता पर विशेष बल दिया।

इससे पूर्व 31 अक्टूबर को गांधी शांति प्रतिष्ठान तथा अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्वावधान में मुनिश्री सुखलाल जी के सान्निध्य में 'राष्ट्रीय विकास में नैतिक मूल्यों का योगदान' विषय पर विचार परिषद् सम्पन्न हुई।



विरासत के कैनवास में अपना चेहरा

■ सेवाराम त्रिपाठी ■



वि

रासत बहुत मोहक और लुभावना शब्द है, लेकिन है बहुत जरूरी और बड़े काम का।

इसलिए इस 'विरासत' के बारे में लाभ—लोभ से नहीं, बल्कि जिन्दगी की संभावनाओं और वास्तविकताओं के आधार पर विचार करना चाहिए। विरासत हमें अवलोकन का भरपूर अवसर देती है और अपने को पहचानने का भी। विरासत आँख मूँदकर स्वीकार करने वाली संपदा शायद नहीं है, उसे देखना—भालना पड़ता है और सोचना—समझना पड़ता है तथा विवेक के द्वारा कसना पड़ता है।

विरासत हमारे इतिहास, सम्यता और भविष्य का वह रूप है जो हमें आधार संरचना देता है, जिससे 'जीवन का घर' और उसका 'वितान' खड़ा होता है। इसके संदर्भित अनुशासनों और व्यवहारों से चलने का हर उद्यम किया जाता है। आज के दौर में हम निहित स्वार्थों के द्वारा इतिहास से, मनुष्यता से और जीवन मूल्यों से बार—बार काटे जा रहे हैं, इसलिए एक धुंध, परायापन और निराशा के अलावा कुछ भी नहीं देख पा रहे हैं। हां, बार—बार उन तत्वों का विश्लेषण जरूर करते हैं और इसी में सार्थकता तलाशने और आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं।

किसी भी देश, प्रांत एवं क्षेत्र पर जब हम नजर डालते हैं तो हमें दो स्वर सुनायी पड़ते हैं। प्रारम्भ से लेकर अब तक के विभिन्न प्रकार के सर्जनात्मक द्वंद्व

तथा जीवन के विविध सोपानों को खोजने का उद्यम। 'साहित्य' और 'संस्कृति' उन तमाम वास्तविकताओं और हवाओं को अनुभव करते हैं जिनसे हमारे जीवन में सुखद सपने सज सकते हैं और अपने जीवन संघर्षों से रु—ब—रु होकर हम अपनी इच्छाओं का मुकम्मल संसार पा सकते हैं। विरासत को चिंतन—मनन के द्वारा उपयोगिता के विभिन्न क्षेत्रों का नया रास्ता भी बनाना चाहिए। प्रसिद्ध विचारक कार्ल मार्क्स ने कहा था— "हमारा दायित्व है कि हम पुराने विश्व को दिन के पूर्ण उजाले में खींचकर लायें और उसे एक नया सकारात्मक शिल्प दें। इतिहास जितना ही अधिक समय विचारशील लोगों को चिंतन के लिए और दुःखी जन को अपनी ताकत समेटने के लिए देगा, उतना ही पूर्ण वह फल होगा, जिसे वर्तमान अपने गर्भ में छिपाये है।"

विरासत को पहचानना और उसके साथ संगत व्यवहार करना इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है। हम अब केवल पारम्परिक समाज में नहीं हैं, बल्कि औद्योगिक, आर्थिक और सूचना संसारों तथा बाजारीकरण की दुनिया में हैं और यह दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। सब कुछ बदल रहा है, लेकिन हम अपनी आत्मा को नहीं बदल पाते। अपने जीवन—संघर्षों के साथ आगे बढ़ें, तभी हमारा रास्ता प्रशस्त होगा। हमारे विकास के लिए जितने भी प्रकार के संसाधनों की





विरासत में एक तरह का खुलापन होना चाहिए, उसे कारागार बनाये जाने के पक्ष में शायद कोई नहीं होगा।

विरासत या राष्ट्रवाद किसी समाज का अंधापन नहीं ही होना चाहिए।

जरूरत है, वे बढ़ाये जा रहे हैं। 'लोकजीवन' और 'लोकराग' भी बदल रहे हैं, लेकिन उनके भीतर मौजूद ऊष्मा हमारी मानवीयता पुरखा कर रही है। स्त्रियों द्वारा गये गये लोकगीत हों या पुरुषों द्वारा, ये सभी हमारी संस्कृति में फैले जीवन-राग को साधते हैं। तमाम शोरगुल या कानफोड़ आवाजों के दायरे से बाहर करते हुए हमें रिश्तों से ही नहीं, जीवन जगत के अनेक रूपों से भी जोड़ते हैं।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. अमर्त्य सेन ने कभी इंगित किया था कि शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन जीने के तरीके, आवास जैसी आधारभूत सामाजिक आवश्यकताओं का ठीक से इस्तेमाल न होने की वजह से हमारे विकास की प्रक्रिया और खासकर हमारी आर्थिक संरचना को क्षति उठानी पड़ी है। यदि उत्पादन बढ़ाया जा रहा है तो पर्यावरण के मानकों को अनदेखा करते हुए यानी हम जिन अनाजों का उत्पादन कर रहे हैं, जिन सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं, उनमें ज्यादा से ज्यादा कमाई के रूप विकसित हुए हैं। स्वास्थ्य और पर्यावरण की ओर से हमने पीठ फेर ली। गाँव और शहरों तक फैला भ्रष्टाचार हर तरह की विकास प्रक्रिया को चूना लगा रहा है, जो हमारे लिए बहुत बड़ी चिंता का 'बायरस' है।

यह सही है कि हम अपनी विरासत को समझें, लेकिन उसके अनावश्यक 'मोहपाश' से बाहर भी देखें, दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। राष्ट्रवाद का धमाका फूट रहा है। बाजार की मायाओं का जाल चतुर्दिक फैला है। निरंतर लपटें ही लपटें उठ रही हैं। हमारे सामने जगमगा रहा है भड़कीला चमकीला शौर्य। गौरव के पहाड़ों में उन्मुक्त हम सब कुछ भूलते जा रहे हैं। विरासत में एक तरह का खुलापन होना चाहिए, उसे कारागार बनाये जाने के पक्ष में शायद कोई नहीं होगा। विरासत या राष्ट्रवाद किसी समाज का अंधापन नहीं ही होना चाहिए। विरासत कोई गलत ढंग की चीज नहीं हो सकती।

अपने लिए स्वार्थ के अनुकूल न चुनकर जो समाज के विकास में सहायक हो, उसे बहुत गंभीरता से समझें, बूझें और नवीनता को भी जोड़ें। सच मानिए, आधुनिकता एक नशा है। यदि आप उसमें पूरी तरह बँध गये या उसकी गिरफ्त में आ गये तो विरासत से कन्नी काटने की ओर भी जा सकते हैं, लेकिन जिन्हें दोनों की समझ है, जो दोनों में संतुलन बना सकते हैं, वे हमारी विरासत को हमारी परम्परा में रचे—बसे मानवीय मूल्यों को उसकी उदात्तता को ठीक से देख पायेंगे। साथ ही वे मनुष्यता की बहती हुई निरंतरता को पहचानते हुए आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता तक की यात्रा बड़े आराम से कर सकते हैं।

जब भी हम विरासत की बात करते हैं, ज्यादातर लोग किसी इलाके के भूगोल, प्रकृति और जीवन के इकहरे 'यूटोपिया' में ही उसे देखते हैं। इस दौर में हम राष्ट्र के मूल मुद्दों के बरअक्स केवल देशभक्ति के

ताने—बाने तलाश रहे हैं और किसी को भी राष्ट्र की मूल अवधारणाओं से काटकर 'देशप्रेम' और 'देशभक्ति' के स्वनिर्मित खानों में पटक देते हैं। न राष्ट्र कोई 'यूटोपिया' है न कोई कृत्रिम 'विरासत'। अल्लामा इकबाल ने कहा था—

अच्छा है दिल के साथ रहे पासबान—ए—अक्ल
लेकिन कभी कभी इसे तन्हा भी छोड़ दें।

मगर दुर्भाग्य है कि विरासत को हम एक प्रतिष्ठान बनाने की धून में हैं। विरासत कभी गर्जना नहीं करती। यह तो हमारी रग—रग में समायी रहती है। हां, विरासत के तथाकथित पैरोकार ऐसा बार—बार करते देखे जाते हैं। विरासत के साथ जीना पड़ता है, लेकिन अपने अवलोकनों की खुली खिड़की के साथ बचानी पड़ती है अपनी सूक्ष्म संवेदन धाराएँ। वह संप्रेषण का खुला दरवाजा भी है। वह विकृतियों से जूझने का हौसला देती है और संभावनाओं का खुला आकाश भी। मुझे हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि, लेखक और आलोचक मलयज की डायरी का एक अंश अचानक कौंध गया—

'चीजें उतनी मुश्किल और जटिल नजर नहीं आतीं। मैं उनकी एक—एक परत में घुसता जाता हूँ और वे पन्नों जैसी एक—एक खुलती जाती हैं। मैं अपने को उनके बीच पाता हूँ और सहसा उनके बाहर। इस एहसास के साथ कि मैंने उनसे गुजरने में कुछ प्राप्त किया है, कुछ जीया है।'

हम विरासत में हैं भी और उससे बाहर भी हैं। सच है कि विरासत हमें बाँधती नहीं, उन्मुक्त भी करती है। कोई नहीं चाहेगा कि विरासत को कुछ स्वार्थी तत्व गुफाओं में बदल दें और हमारे मनो—संसार को अलादीन के जादुई चिराग में डाल दें। हम मनुष्य को किसी भी किस्म के बंधक बनाये जाने के पक्ष में नहीं हो सकते। मलयाली कवि के सच्चिदानंदन की कविता का एक अंश है—"किसने कहा कि यादें खुशबूदार खिड़की हैं, जो खुलती हैं पके हुए खेतों की तरफ।"

रीवा निवासी लेखक हिन्दी आलोचना जगत के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य—साधना में संलग्न हैं।



पर्यावरण संरक्षण का मूल मंत्र अहिंसा और अपरिग्रह

■ डॉ०. एन. के. खीचा ■

जैन संस्कृति में 'जीवो जीवस्य भोजनम्' के कट्टर विरोध में 'परस्परोपग्रहोजीवानाम्' अर्थात् जीव मात्र के पारस्परिक सहयोग तथा साहचर्य की विचारधारा परम वैज्ञानिक उत्कर्ष का प्रतीक है। प्रत्येक जीव के स्वतंत्र व्यक्तित्व की परम प्रतिष्ठा सर्वव्यापी, सर्वहितकारी अहिंसा, सम्यक् चिंतन आचरण, सहिष्णुता एवं परस्पर सौहार्द जैन संस्कृति की विशेषताएँ हैं। जैन संस्कृति आचरण प्रधान है। अणुव्रतों, इन्द्रिय निग्रह, कषायमंदता, गुप्ति, समितियुक्त नैतिक आचरण से पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण सम्बन्ध होता है।

प्रत्येक जीव की प्रत्येक कोशिका स्वतंत्र जीव है। प्रत्येक कोशिका अन्य खरबों कोशिकाओं के साथ सहजीवी, सहयोगी, परस्पर हितैषी बनकर रहती है। 'एक सबके लिए' और 'सब एक के लिए' का कुशल संचालन, सुव्यवस्था एवं अस्तित्व निर्बाध निरन्तरता के साथ चलते हैं जो कि पर्यावरण संरक्षण के लिए समग्रता का मूलभूत आधार है। इसमें अन्तर्निहित परस्पर हितैषी सहजीवन और अन्योन्याश्रितता होती है।

पर्यावरण प्रकृति के विभिन्न घटक एवं स्कंध तथा सूक्ष्म एवं स्थूल जीव छोटे-बड़े एवं विशालकाय पारिस्थितिकी तंत्रों में सहजीवी एवं अन्योन्याश्रितता के आधार पर रहते हैं। प्रत्येक कोशिका में माइट्रोकोण्ड्रिया, साइटोप्लाजम, प्रोटीन, न्यूकिलयस, न्यूट्रोन एवं इलेक्ट्रोन आदि-आदि होते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में एक प्रकार के ही जीव नहीं होते हैं बल्कि विविध प्रकार के जीव एवं प्रकृति के अन्य घटक - पानी, वायु, पृथ्वी आदि भी होते हैं। सभी घटक और प्रत्येक समूह विभिन्न समूहों से सहजीवी, सहयोगी तथा अन्योन्याश्रित हैं।

इसी प्रकार मनुष्य के पाचन तंत्र (आंतों तथा आमाशय आदि) में कई प्रकार के जीवाणु होते हैं। कई

जानवरों गाय, भैंस आदि में चारे के कठोर भाग को पचाने में उनकी आंतों में पाया जाने वाला बैकटीरिया सहयोगी होता है। शुष्क चट्टानों पर एली (काई) और फंगस (फफूंद) होती है जो कि पारस्परिक सहयोग से मिश्रित जैविक संरचना में परस्पर कुशलता से रहती है। फंगस हब की नमी को सोखती है तथा चट्टानों से पोषक खनिज तत्व प्राप्त करती है।

हरी काई (एली) अपने अन्दर क्लोरोफिल से प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया से भोजन (कार्बोहाइड्रेट) का निर्माण करती है। प्रकृति में परस्पर दोनों (एली और फंगस) जीते हैं। कई वनस्पति की प्रजातियों की जड़ों में फंगस खनिज तत्वों व लवणों का अवशोषण कर वृक्ष की सहायता करते हैं तथा वृक्ष से अपना भोजन लेते हैं। कई वृक्षों, छोटे पौधों की जड़ों में रहने वाला विशिष्ट प्रकार का बैकटीरिया उन्हें नाइट्रोजन उपलब्ध कराता है तथा उन वृक्षों-पौधों से अपना भोजन लेता है।

नाइट्रोजन फिक्सिंग बैकटीरिया, माइक्रो राजोबियम आदि जीव-जगत में सहजीवन के अनगिनत उदाहरण हैं। वनस्पति और जानवर एवं कीट-पतंगे भी परस्पर सहयोग कर सहजीवी रहते हैं। छोटी चिड़िया मगरमच्छ के मुँह में जाकर उसके दाँतों की सफाई कर अपना भोजन लेती है। इस दौरान मगरमच्छ शांत भाव से पड़ा रहता है। इसी प्रकार शार्क, व्हेल तथा कछुए परस्पर सहयोग से रहते हैं। तितलियाँ, कीट-पतंगे, मधुमक्खी फूलों से पराग कण ले जाकर परागण करते हैं। केंचुए मिट्टी की निरन्तर उलट-पलट कर भूमि की उर्वरता बढ़ाते हैं।

प्रकृति में आनुवांशिक विविधता ही सुरक्षा (पर्यावरण संरक्षण) का सर्वोत्तम कवच है। विविधता में एकता प्राकृतिक सहजीवन से सहज प्रतिपादित होती है। यद्यपि आज जैविक विविधता तीव्र गति से नष्ट हो रही है। प्राकृतिक संसाधन भी सीमित हो रहे हैं। ऐसी

स्थिति में अणुव्रत दर्शन इच्छा, कामना, तृष्णा एवं उपभोग का परिष्कार कर प्राकृतिक संसाधनों के सीमित सदुपयोग पर बल देता है। क्योंकि सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। इसलिए प्राणवध को सर्वज्ञ केवलियों (निर्ग्रन्थों) ने वर्जित किया है तथा कहा है—

सबे जीवा वि इच्छांति जीवितं न मरिज्जितं ।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निर्गंथा वज्जयन्ति यं ॥

वनस्पतिकायिक जीवों का मनुष्य एवं अन्य प्राणियों पर अत्यधिक उपकार है। जैन संस्कृति की उपादेयता की भाँति वनस्पतिकाय के प्रति क्रूरता निवारण कानूनों की आज महती आवश्यकता है। पारिस्थितिकी तंत्र में आन्तरिक एवं बाह्य घटकों के अतिक्रमण, अतिवृद्धि, विकृति के कारण अपकर्ष एवं संतुलित होने पर उत्कर्ष होता है।

वैज्ञानिक अन्वेषणों के अनुसार मानव के उद्भव से पूर्व सघन चरम विकसित वन थे। सभी जीवों की आवश्यकताएं वनों से पूरी होती थीं। सम्यता के विकास तथा आबादी की वृद्धि के साथ कृषि का दायरा बढ़ा। वन काटे गये। भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। कृषि के विस्तार के साथ ही वनों का तो विनाश हुआ ही, वन्य पशुओं और पक्षियों पर भी वज्रपात हुआ है। आधुनिक खेती में उपज बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक इस्तेमाल से भूमि अनुपजाऊ एवं ऊसर हो गयी है। भूमि, जल तथा वायु का प्रदूषण बढ़ रहा है। वृक्ष कटते जा रहे हैं, वृक्ष उजड़ते जा रहे हैं। कंक्रीट के जंगल बनते जा रहे हैं। भूजल—स्तर गिरता जा रहा है। पर्यावरण विनष्ट हो रहा है। एरोसोल एवं क्लोरोफ्लोरो कार्बन से वायुमंडल की ओजोन परत नष्ट हो रही है, जो सूर्य की हानिकरक पराबैंगनी किरणों को रोकती है। इसके कारण चर्म रोगों में वृद्धि हो रही है।

आधुनिक समय में बढ़ती उपभोग—संस्कृति के कारण पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकी तन्त्रों का अपकर्ष हो रहा है। अधिकांश पर्यावरणीय, सामाजिक, स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के मूल में व्यक्ति का स्वार्थ है। चाह, कामना, तृष्णा तथा परिग्रह भावना, हित—अहित, हानि—लाभ, स्वार्थ, कटुता एवं द्वेष आदि ने पर्यावरण को दूषित एवं प्रदूषित किया है।

जैन दर्शन एवं संस्कृति में संसार में जीव, पुद्गल, आकाश एवं काल आदि छः प्रमुख द्रव्य (घटक) हैं। जैन आगम 'सूत्र तत्वार्थ' में कहा गया है:—'आकाशस्यावगाह' अर्थात् आकाश द्रव्य सभी को अवकाश (स्थान) देता है और यह इसका उपकार है। जैन संस्कृति की आचार संहिता में जीव मात्र के प्रति

प्रेम और करुणा की बात कही गयी है। 'सूत्र तत्वार्थ' में 'अन्योन्याश्रितता' पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का मूलभूत सिद्धान्त है। अर्थात् सभी जीव परस्पर पूरक हैं, सहयोगी हैं, परस्पर निर्भर हैं।

कोरोना काल की भयावहता ने ऑक्सीजन अर्थात् वृक्ष यानी पर्यावरण की कीमत बता दी। समस्त विश्व में एक चेतावनी, चिन्तन और चेतना का दौर—सा चल रहा है। चेतावनी का विषय है—पर्यावरण, चिंतन का विषय है पर्यावरण प्रदूषण तथा चेतना का विषय है पर्यावरण का संरक्षण। भौतिक समृद्धि को ही आज सुख की कुंजी मान लिया गया है। जैन संस्कृति में अहिंसा और अपरिग्रह सिद्धान्तों से प्रकृति संरक्षण का यह कार्य स्वतः होता है। आवश्यकता से अधिक संचय की वांछा नहीं रखने का संकल्प ही अपरिग्रह है।

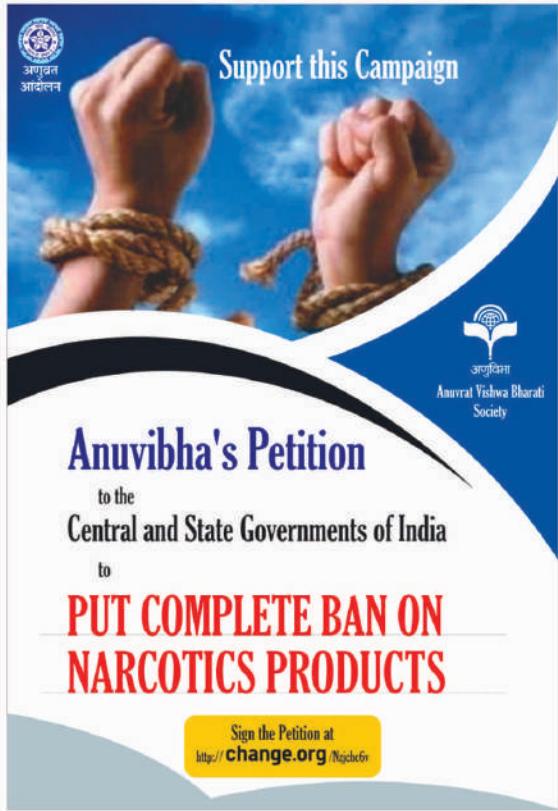
जैन संस्कृति अहिंसा, शाकाहार की हिमायती है तथा मांसाहार का निषेध करती है। वह सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय से बढ़कर सर्वजीव हिताय और सर्वजीव सुखाय तक है। जैन संस्कृति के सूत्र 'पर्यावरण संरक्षण' की मूल भावना से घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। यह केवल राष्ट्र एवं शासन के नैतिक बने रहने तक ही सीमित नहीं है, अपितु वातावरण को नियंत्रित करने, सूखा, अतिवृष्टि न होने, संक्रामक रोगों के न फैलने आदि भावनाओं के द्वारा भाव—शुद्धि व समाज—पर्यावरण शुद्धता की बात को दुहराते हैं।

मनुष्य पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण घटक है। यदि मनुष्य में विकार (प्रदूषण) उत्पन्न होते हैं, तो सम्पूर्ण पर्यावरण कलुषित हो उठता है। प्रकृति के दोहन व मनुष्य के शोषण के बिना अनावश्यक संग्रह संभव नहीं है। यही सामाजिक प्रदूषण है। इससे सामाजिक समरसता, संतुलन व सौजन्य तीनों बिंगड़ रहे हैं। परिग्रह परिमाण व्रत यानी अपनी इच्छाओं व आवश्यकताओं को सीमित करना इसका समाधान है।

अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त दृष्टि, बाह्य एवं आंतरिक पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण के लिए समता, दया और शोषण—रहित सामाजिक ढांचा तैयार करते हैं। अहिंसा पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का मूल मंत्र है। अणुव्रत का दर्शन इन महनीय सिद्धान्तों को धर्म—संप्रदाय की सीमाओं से परे जन—जन के लिए सुलभ बना रहा है।

जयपुर निवासी लेखक राजस्थान प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्ति के बाद सम्पत्ति भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नयी दिल्ली में जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण के सीनियर फेलो हैं।

अणुविभा द्वारा नशे के खिलाफ ऑनलाइन पिटीशन नशीली वस्तुओं पर लगे पूर्ण प्रतिबंध



इस अभियान को समर्थन देने के लिए
इस लिंक पर जायें –

[https://www.change.org/
/Anuvrat_De-addiction_Campaign](https://www.change.org/Anuvrat_De-addiction_Campaign)

अपने नागरिकों का स्वास्थ्य किसी भी जन हितैषी सरकार की प्राथमिकताओं में अव्वल स्थान पर रहता है। स्वस्थ नागरिक किसी भी देश की सबसे बड़ी ताकत भी होते हैं। सरकारें चिकित्सा सुविधाओं के लिए अरबों रुपये

खर्च करती हैं। बीमार व्यक्तियों को समुचित उपचार की सुविधाएं उपलब्ध हों यह सरकार का दायित्व है, वहीं सरकार का यह भी दायित्व है कि उन परिस्थितियों पर कड़ाई से अंकुश लगाये जो नागरिकों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करती हों, बीमारियों का कारण बनती हों।

नशीले पदार्थों का व्यापक स्तर पर उत्पादन और बाजार में उनकी आसान उपलब्धता नागरिकों के स्वास्थ्य के साथ गंभीर खिलवाड़ है। यह जानते हुए कि ये नशीले पदार्थ स्वास्थ्य के लिए न केवल हानिकारक हैं, बल्कि जानलेवा हैं, सरकारों द्वारा इनके उत्पादन और विपणन की अनुमति देना देश की जनता के साथ बहुत बड़ा अन्याय है। अनेक सरकारें इन पर अंकुश लगाने के बजाय इन्हें बढ़ावा देती नजर आती है, केवल इसलिए कि उनकी आय बढ़ सके। क्या यह अनैतिक कृत्य की श्रेणी में नहीं आता?

नशा केवल व्यक्तिगत नुकसान ही नहीं करता वरन् सामाजिक स्तर पर भी इसके दुष्परिणाम किसी से छुपे नहीं हैं। नशे पर रोक लगा कर अपराध पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है, बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण किया जा सकता है, यौन अपराधों में कमी लायी जा सकती है और स्वास्थ्य व्यवस्थाओं पर बढ़ रहे दबाव को कम किया जा सकता है। यदि सरकारें आय अर्जित करने के अपने संकीर्ण दृष्टिकोण से बाहर आकर देखें तो नशामुक्ति एक सफल शासन का आधार बन सकती है। इसके लिए हम भारत सरकार सहित सभी राज्य सरकारों से अपील करते हैं कि वे तुरन्त प्रभाव से नशीली वस्तुओं (शराब, तंबाकू, सिगरेट, गुटका, खैनी, चरस, हेरोइन, गांजा आदि) के उत्पादन, संग्रहण, विपणन और उपभोग पर रोक लगायें और सख्ती से इसकी अनुपालना सुनिश्चित करें।



नशामुक्ति अभियान के पोस्टर का अवलोकन करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री की हजारों किलोमीटर लम्बी पदयात्रा, जिसे अहिंसा यात्रा के नाम से जाना जाता है, के तीन मुख्य उद्देश्यों में शामिल है नशामुक्ति।

आचार्य श्री की प्रेरणा से हजारों व्यक्तियों ने नशे का परित्याग किया है। अणुव्रत आंदोलन भी कई दशकों से नशामुक्ति के लिए जन-जागरण अभियान चलाता आ रहा है।



शराब बंद, स्वाभिमान बुलंदः राजसमंद की दो और पंचायतों में ठेके बंद कराने पर ठप्पा, महिलाओं ने देर रात तक मनाया जश्न



जूती की नोक पर बुराई...

राजसमंद | जिले में मगरा क्षेत्र की बरार व हामेला की वैर ग्राम पंचायत में शराबबंदी के लिए शनिवार को मतदान हुआ। इसमें जीत शराबबंदी की हुई। मगरा क्षेत्र में अब कुल 7 ग्राम पंचायतें शराब मुक्त हैं। बरार व हामेला की वैर में 2014 की बाटर लिस्ट के दिसाब से 5632 मतदाता हैं। इनमें से 3624 ने बोट डाले, इनमें से 3326 ने शराबबंदी के पक्ष में मतदान किया।

दैनिक भास्कर से साभार

महिलाओं का विरोध लाया रंग

बरार के शराबबंदी आंदोलन को मिली ऐतिहासिक सफलता

बरार से श्री संचय जैन की रिपोर्ट

राजसमंद जिले की बरार पंचायत में 13 नवम्बर को शराब के ठेके के खिलाफ मतदान था। पिछले 5 वर्ष से यहां के नागरिक इसके लिए आंदोलनरत थे। शराब का ठेका बंद कराने की लंबी प्रशासनिक प्रक्रिया से गुजरने के बाद आज मतदान के दिन ग्रामवासियों का उत्साह देखते ही बन रहा था। महिलाओं की लंबी कतारें मतदान केंद्र पर लगी थीं। यहां की युवा महिला सरपंच पंकजा सिंह के लिए यह इम्पिहान का दिन था। उनके समर्थन में अनेक संस्थाओं के कार्यकर्ता, राजनेता और ग्रामीण बरार में उपस्थित थे।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेंद्र कर्णावट इस पूरे क्षेत्र में शराबबंदी अभियान से लंबे समय से जुड़े रहे हैं। पत्नी की अस्वस्थता के बावजूद वे यहां मौजूद थे। बरारवासियों के जज्बे को देखने का आकर्षण मुझे भी यहां खींच लाया था। राजसमंद से डॉ. कर्णावट साहब के साथ मैं, श्री गणेश जी कच्छारा, रिछेड़ के श्री भीमराज कोठारी, दिवेर से श्री डालचंद जी और गांधी सेवा सदन के चंद्रशेखर जी बरार पहुँचे थे। वहां स्थानीय विधायक श्री सुदर्शन सिंह जी से मुलाकात हुई। यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि शराबबंदी अभियान के समर्थन में विधायक पूरे दिन मतदान केंद्र के बाहर जमे रहे। जयपुर से पूजा काबरा भी आयी हुई थीं। पूजा जी

गुरशरण काबरा की बेटी हैं जिन्होंने शराबबंदी के लिए अनशन करते हुए अपने प्राण त्याग दिये थे।

मतदान केंद्र के बाहर कुछ महिलाओं से बात हुई। उनमें जीत का विश्वास भरा था। 80-82 वर्षीय बुजुर्ग महिलाएं कतार में खड़ी थीं तो कुछ बहनों की गोद में दुधमुँहे बच्चे थे। पंकजा सिंह से लंबे अरसे के बाद मिलकर खुशी हुई। वे पूर्व में अणुविभा के बालोदय प्रकल्प से जुड़ी रही हैं। एक युवा शिक्षित जनप्रतिनिधि का चुना जाना किसी क्षेत्र के विकास के लिए क्या मायने रखता है, यह पंकजा सिंह को देख कर बखूबी समझा जा सकता है। वहीं आपराधिक पृष्ठभूमि का कोई व्यक्ति चुन कर आता तो क्या उससे शराबबंदी के खिलाफ मोर्चा खोलने की उम्मीद भी की जा सकती थी? आम जनता जब जाति-धर्म के नाम पर सोचना बंद कर ईमानदार और शिक्षित उम्मीदवारों को चुनना शुरू करेगी, तभी असली लोकतंत्र का चेहरा हम देख पायेंगे। भ्रष्ट राजनेताओं से यह उम्मीद हम कब तक बाँधे रहेंगे?

शराबबंदी के लिए अलग-अलग स्तर पर आंदोलन होते रहे हैं। लेकिन बरार के साथ-साथ काछबली, मंडावर, बरजाल आदि आसपास के गाँवों में पिछले कुछ सालों से गति पकड़ रहा शराबबंदी के विरुद्ध यह आंदोलन जमीन से जुड़ा एक जन आंदोलन है। स्थानीय जनता की इसमें सीधी भागीदारी है। संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं का समर्थन गाँववासियों की ताकत को बढ़ाता है।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेंद्र कर्णावट अणुव्रत के जमीनी कार्यकर्ता रहे हैं। उनका इस आंदोलन से जुड़ाव अणुव्रत आंदोलन के लिए भी एक मिसाल है। जनता की आवाज सरकारों को झुकने को विवश कर देती है। बरार की जनता अपने हक की आवाज बुलंद कर सफलता हासिल करने के लिए बधाई की पात्र है।

अगले अंक में पढ़िए डॉ. महेन्द्र कर्णावट की विस्तृत रिपोर्ट



परिचर्चा

नशे को ना : कैसे बनेगी बात?



नशा, नशे से जुड़ी घटनाएं और दुर्घटनाएं इन दिनों समाचारों की सुर्खियां बनी हुई हैं। गुजरात के मुंद्रा पोर्ट पर अफगानिस्तान से आई 20 हजार करोड़ की हेरोइन की जब्ती हो, मुंबई के निकट एक जहाज पर हो रही रेव पार्टी पर छापा हो, बिहार में जहरीली शराब पीने से हुई मौतें या फिर पंजाब के युवाओं का ड्रग्स की गिरफ्त में फँसने का मसला हो, नशा और नशा माफिया का कुत्सित व धिनौना चेहरा ही बेपर्दा होता नजर आ रहा है।

बिहार और गुजरात तो ऐसे राज्य हैं जहां शराबबंदी लागू है। कुछ ताकतें इन राज्यों में शराबबंदी विफल होने का तर्क देते हुए इसे हटाने की भी पैरवी करती नजर आती है। यह समझना मुश्किल नहीं है कि ये कौन—सी ताकतें हैं। नशे के व्यापार से मुनाफा कमाने वाली ताकतें आखिर क्यों मजबूत होती जा रही हैं? क्यों राजनेता, प्रशासन और पुलिस जिनकी प्राथमिक जिम्मेदारी नागरिकों का हित साधन है, जनता के हितों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं?

एक तर्क यह भी दिया जाता है कि कानून बनाकर नशे पर रोक नहीं लगायी जा सकती। इसके लिए जनजागरण आवश्यक है। तो क्या सरकार द्वारा गली—मोहल्लों में नशे की उपलब्धता की खुली छूट दे देनी चाहिए? किसी गाँव या कस्बे की जनता यदि शराब की उपलब्धता पर रोक लगाना चाहती है तो सबसे पहले प्रशासन और प्रशासनिक नियम ही उसके सामने रुकावट बनकर खड़े हो जाते हैं। एक लंबी थका देने वाली प्रक्रिया से गुजरना होता है। इस विडंबना को राजसमंद जिले के कई गाँवों में चल रहे शराबबंदी आंदोलन में ग्रामीणों ने नजदीक से अनुभव किया है।

जो मुद्दा हमारे भविष्य को चुनौती दे रहा है, उसके प्रति क्या है हमारी जिम्मेदारी? क्या हम पूरी पीढ़ी को नशे के चंगुल में जाते हुए देखते रहेंगे? क्या सरकारें आँखें मूँदे रहेंगी? सामाजिक नेतृत्व की क्या हो सकती है भूमिका? अपने रचनात्मक विचारों को अभिव्यक्ति दें और अधिकतम 200 शब्दों में लिख भेजें हमें **15 दिसम्बर** तक **9116634512** पर व्हाट्सएप के माध्यम से। चयनित विचार जनवरी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

—सं.

जायके से बढ़कर सेहत...

गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है —

जीभ के गुलाम न बनें

जैन धर्म में संयम का बहुत महत्व बताया गया है। संयम वाणी का, संयम जीवन का, संयम खाने का। जीवन को सफल बनाने के लिए संयम रखना अति आवश्यक है। इनमें खाने का संयम मौजूदा परिवेश में सर्वाधिक प्राथमिकता रखता है। शाकाहारी भोजन ही करना चाहिए, जैन धर्म इसे भी अनेक प्रमाणों के साथ बताता आया है। आज फारस्ट फूड, जंक फूड आदि ने नयी पीढ़ी को अपना गुलाम बना रखा है। हमें समझना होगा कि स्वास्थ्य के लिए क्या हितकारी है। आजकल बीमार होना कितना महँगा पड़ता है, सभी जानते हैं। अतः स्वादलोलुप न बनें, अच्छा खायें, रात्रि भोजन से यथासंभव बचें। सेहत पसंद है तो जीभ के गुलाम न बनें।

—सुनील सुरेंद्र महता, मुंबई

स्वाद से बढ़कर सेहत

आधुनिकता की अंधी दौड़ में लोग आजकल जंक फूड, मांसाहार और शराब का सेवन कर अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ करते हुए हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटिज, हार्ट डिजीज, कैंसर जैसी घातक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। पौष्टिक और सात्त्विक आहार न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ बनाता है अपितु हमारे मन को भी प्रफुल्लित रखता है। आज पूरी दुनिया में ऐसे लोगों की संख्या निरंतर बढ़ रही है जो मांसाहार छोड़कर शाकाहारी बन रहे हैं। आइए, हम भी स्वाद से ज्यादा सेहत को अहमियत देते हुए सात्त्विक आहार का सेवन करना प्रारंभ करें तथा विश्व में अहिंसा और शांति के दूत बनकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना करें।

—ताराचंद मकसाने, नवी मुंबई



पहला सुख निरोगी काया

सदियों से यह सत्य हम सभी जानते हैं कि पहला सुख निरोगी काया। फिर भी बात जब जायके की हो तो हम सब कुछ भुला कर स्वाद के पीछे भागने लगते हैं। इसके दुष्परिणाम गंभीर बीमारियों के रूप में सामने आते हैं। अब समय आ गया है कि हम स्वाद के चक्कर में पड़कर अपने स्वास्थ्य रूपी धन को दाँव पर लगाने से बचें और वही खाना खायें जो हमारी सेहत के लिए अच्छा हो। ऐसा करके हम न केवल स्वयं को स्वस्थ एवं दीर्घजीवी रख सकेंगे, वरन् एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में भी अपना उत्तरदायित्व भली—भाँति निभा सकेंगे।

—इंद्रजीत कौशिक, बीकानेर

जान है तो जहान है

स्वास्थ्य ही हमारी सबसे बड़ी दौलत है, किंतु आज की पीढ़ी खासकर नौकरीपेशा युगल इसे भूलते जा रहे हैं। व्यस्तता के कारण जूस या फास्ट फूड से काम चला लेते हैं। फास्ट फूड के लगातार सेवन से शरीर में अतिरिक्त वसा, कार्बोहाइड्रेट और प्रसंस्कृत चीनी बढ़ने लगती है जिससे मोटापा, हृदय रोग, डायबिटीज तथा कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। आज विकसित देश बीमारी की जड़ को पहचान कर मांसाहार से शाकाहार की ओर बढ़ रहे हैं। हमें भी अपने खान—पान में फल, सब्जियों, मेवे इत्यादि के महत्व को समझना होगा। यह नहीं भूलना चाहिए कि जान है तो जहान है।

—सुधा आदेश, लखनऊ

जैसा खाये अन्न, वैसा हो मन

कहा जाता है कि जैसा खाये अन्न, वैसा हो मन। प्रकृति ने मानव शरीर को मांसाहार के अनुकूल नहीं बनाया है परंतु बहुत से लोग जायका, स्वाद या शक्तिशाली होने के भ्रम के कारण मांसाहार का उपयोग करते हैं जो कि निरीह प्राणियों के साथ धोर अन्याय है। विश्व के कई धर्म, विशेषकर जैन धर्म मांसाहार को पूर्णतया निषिद्ध मानता है। इसका प्रभाव लोगों पर पड़ा है, परंतु मांसाहार के निषेध के लिए बहुत प्रचार—प्रसार की आवश्यकता है ताकि पूरा विश्व तन और मन से स्वस्थ हो सके।

—उषा जैन, टोहाना

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आवश्यक

बीकानेर स्थित आचार्य श्री तुलसी कैंसर अस्पताल में देशभर के रोगी आते हैं। पंजाब से बीकानेर आने वाली एक ट्रेन का नाम ही लोगों ने 'कैंसर एक्सप्रेस' रख दिया है। इस ट्रेन में कैंसर पीड़ितों को दर्द के मारे रोते—बिलखते सुना जा सकता है। यदि कैंसर की यही परिणति है तो लोगों के लिए यह समझना जरूरी है कि रेड मीट जैसी वस्तुओं को अपने जीवन में प्रवेश न दें। यदि मांस—मदिरा के सेवन और नशे में फँसे—धँसे हैं तो इससे शीघ्र निकल जायें। जायके को प्राथमिकता नहीं देकर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना आवश्यक है।

—डॉ. नीलम जैन, बीकानेर

संवेदन

जीने का सेकंड चांस



आज के समय में कई लोग जब अपने वृद्ध माता—पिता को बोझ समझते हुए उन्हें वृद्धश्रम छोड़ आते हैं, वहीं, हैदराबाद निवासी इंजीनियरिंग ग्रेजुएट जैस्पर पॉल ने अपना जीवन जरूरतमंदों के लिए समर्पित कर दिया है। पॉल वर्ष 2014 में सड़क हादसे का शिकार हो गये थे। उस समय वह महज 19 साल के थे और कॉलेज में पढ़ रहे थे। गाड़ी ने सड़क पर तीन पलटी खाई, लेकिन वह बाल—बाल बच गये। यह उनके लिए जिंदगी का 'सेकंड चांस' (दूसरा मौका) था।

इसके बाद पॉल ने तय कर लिया कि अब वे बेसहारा लोगों के लिए काम करेंगे। उन्होंने 2017 में 'सेकंड चांस' की शुरुआत की। हैदराबाद में इसके तीन केंद्र हैं। सबसे पहले, लोगों को रेस्क्यू करके उनके पहले केंद्र पर ले जाया जाता है, जो यापरल में है। यहां उन्हें नहलाने—धुलाने और साफ कपड़े पहनाने के बाद खाना खिलाया जाता है। डॉक्टर उनके स्वास्थ्य की जाँच करते हैं, ताकि अगर कोई बीमारी है, तो उन्हें सही इलाज दिलवा सकें। जिन्हें ज्यादा चिकित्सा की जरूरत नहीं होती है, उन्हें बाकी दो केंद्रों पर रखते हैं, एक चेरापल्ली में और दूसरा घाटकेसर में है। वहाँ उनके रहने, खाने आदि का पूरा इंतजाम है। पॉल 'सेकंड चांस' नामक संगठन के जरिए 150 बेसहारा लोगों को खाना, कपड़े और घर की सुविधा दे रहे हैं, साथ ही 1500 से ज्यादा लोगों की मदद करते हुए इनमें से 70 लोगों को उनके परिवार से मिलाया है।





खिलौने हैं अनमोल

■ पूनम पांडे ■

कभी कोई बच्चा अनमना—सा दिख रहा हो तो उसे एक खिलौना दे दीजिए, वह चहकने लगेगा। परंपरागत खिलौने, इलेक्ट्रॉनिक टॉयज, पजल तथा गेम्स सहित तरह—तरह के आधुनिक खिलौने देखकर उदास और सुस्त बच्चे का मन भी मचल उठता है। ये खिलौने जहां बच्चों के मानसिक व शारीरिक विकास के लिए जरूरी होते हैं, वहीं उन्हें शिक्षित करने का भी एक जरूरी माध्यम हैं।

हमारे यहां खिलौनों की समृद्ध परंपरा रही है। दादी—नानी के खिलौने पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। खिलौनों से भारत का पुराना रिश्ता रहा है। भारतीय खिलौने में ज्ञान होता है, तो विज्ञान भी होता है। मनोरंजन होता है, तो मनोविज्ञान भी होता है। प्राचीन काल में जब दुनिया के यात्री भारत आते थे तो वे यहां के खेल सीखते थे और खेलों के साथ ही खिलौने भी अपने साथ लेकर जाते थे। हमारे खिलौने बच्चों के मस्तिष्क के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही मनोवैज्ञानिक गतिविधियों द्वारा ज्ञान की कुशलता बढ़ाने में उनकी मदद करते हैं। अच्छे खिलौने बच्चों की कार्यक्षमता, कार्यकुशलता और रचनात्मकता को बढ़ाते हैं।

माता—पिता बच्चे को सही उम्र में सही खिलौने देकर उसके विकास को सही दिशा प्रदान कर सकते हैं। खिलौने खरीदते समय बच्चे की उम्र का ध्यान जरूर रखा जाना चाहिए। बच्चा अगर छोटा है तो बजने वाले,

नाचने वाले, हँसने और ताली बजाने वाले खिलौने ही अच्छे होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ कुछ बनाने और जोड़ने वाले खिलौने मन—मस्तिष्क को जागृत करने में सहायक होते हैं।

पहले बच्चे घर में रुई, कपड़े और मिट्टी के खिलौनों से खेलते थे, पर आज इलेक्ट्रॉनिक खिलौनों का युग है। बाजार में महँगे से महँगे खिलौने उपलब्ध हैं, लेकिन खिलौनों के महत्व एवं उपयोगिता को उनकी कीमत से नहीं आंका जा सकता। हमारे खिलौनों में मूल्य, संस्कार और शिक्षाएं भी होनी चाहिए।

एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने दावा किया था कि जिन बच्चों के पिता महँगे खिलौने खरीदने के बजाय घर पर खिलौने बनाकर खेलने में मदद करते हैं, वे बच्चे अधिक खुश रहते हैं और स्कूल में उनका प्रदर्शन भी बेहतर होता है। वैसे यह तो सौ फीसदी सच है कि माता—पिता के स्नेह का मुकाबला कोई भी खिलौना नहीं कर सकता।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने अनेक प्रयोगों से यह साबित किया कि निष्क्रिय बालक को भी एक अच्छा खिलौना सक्रिय और उत्साहित बना सकता है। इसके लिए उन्होंने बच्चों के दो समूह बनाये। एक समूह को नाश्ता और आराम दिया जबकि दूसरे समूह को खिलौने भी दिये। दो दिन तक यहीं दोहराने के बाद खिलौने वाले समूह में चुस्ती, दोस्ताना रवैया, उत्साह, रचनात्मकता



दूसरे समूह से अधिक मापी गयी। सुप्रसिद्ध बाल मनोवैज्ञानिक हरलाक ने भी कहा है, “बालक के पास उसकी उम्र के हिसाब से खिलौने हर हाल में होने चाहिए। जंगल में बालक को पत्ते पर पतली डाली लगाकर पंखा ही बनाकर दीजिए, पर उसका बचपन खिलौनों के बगैर नहीं गुजरना चाहिए।”

मनोवैज्ञानिक गेसेल के मुताबिक, “बच्चों को समझने का सबसे आसान तरीका उनके खिलौने चुनने, उनको खेलने, सहेजने और उनसे संवाद करने की आदतों को गौर से देखना है।”

अगर माता-पिता सोच-समझकर बाजार में ऐसे उपयोगी खिलौनों की खूबियों को पहचानने की कोशिश करें जिनमें रचनात्मकता और कुछ निरंतरता दिखायी देती है तो ऐसे खिलौने से खेलकर बच्चे खेल में ही नहीं, बल्कि जीवन में भी सदैव आगे रहते हैं। कुछ बच्चों में बचपन के शुरुआती स्तर पर अभिव्यक्ति की जो झिझक होती है, वह खिलौनों और साथ में माता-पिता की थोड़ी-सी सूझा और सहयोग से दूर हो जाती है।

पिछले कुछ दशकों में जीवनशैली बदली है और बाजार में कुछ खतरनाक खिलौने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे हैं। विश्व स्वारथ्य संगठन के अध्ययन के अनुसार, कुछ खिलौने बच्चों के दोस्त नहीं, बल्कि दुश्मन साबित हो रहे हैं। जैसे कठोर प्लास्टिक से बने खिलौने उनको चोट पहुँचा सकते हैं। सॉफ्ट टॉय या स्टफ्ड टॉय से बच्चों की आँखों और त्वचा को नुकसान हो सकता है। आजकल लेजर वाले खिलौने भी बच्चों को दिये जा रहे हैं। इससे बच्चों की आँखें खराब हो सकती हैं या अंधापन हो सकता है। बिजली से चलने वाले खिलौने से करंट लगने की आशंका बनी रहती है। तड़क-भड़क की पोशाक वाले खिलौने पहन कर बच्चे थोड़ी देर के लिए तो सुपरमैन बन सकते हैं, पर इससे बच्चों की मानसिक सेहत पर नकारात्मक असर पड़ता है। बच्चा वास्तविकता से दूर हो जाता है। अनेक वीडियो गेम्स भी हिंसात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित करते हैं।

एक बार इनकी आदत पड़ गयी, तो छुड़ाना मुश्किल होता है। बच्चों को कभी बंदूक, तलवार जैसे खिलौने नहीं देने चाहिए। इनसे बच्चों में हिंसक मनोवृत्ति का संचार होता है, जो भावी जीवन में न केवल उनके और उनके परिवार के लिए, बल्कि समाज तथा राष्ट्र के लिए भी घातक हो सकता है। ऐसा खिलौना, जो बच्चों को अपनी कल्पनाशक्ति से कुछ नया रचने के लिए प्रोत्साहित करे, सबसे अच्छा होता है।

अजमेर में रहने वाली लेखिका केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की मानवाधिकार समिति की सदस्य हैं। आकाशवाणी-दूरदर्शन से गीतों के प्रसारण के साथ ही इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

जीते जी मर जाना क्या?

■ डॉ राकेश चक्र ■

कवि एवं समाजसेवी—मुरादाबाद

जीवन में चमको सूरज से
जीते जी मर जाना क्या?
कितना पाया, कितना खोया
इसका गणित भिड़ाना क्या?

पढ़ें किताबें, करें यात्रा
सुन लें जीवन की ध्वनियाँ।
बच्चों से भी हँसें—हँसाएं
दुलराएं मुन्ना—मुनियाँ॥
कर दें कुछ तारीफ गैर की
इसमें मोल चुकाना क्या?

जीवित रखना स्वाभिमान को
कुछ हितकारी भी बनना।
सत्य, प्रेम के आभूषण से
दुःख गैरों के तुम सुनना॥
मत गुलाम आदत के होना
खुद को रोज रुलाना क्या?

जो मिथ्या है और दिखावा
उसको जल्दी छोड़ो जी।
जीवन की सच्चाई जानो
सच से मुख मत मोड़ो जी॥
आवेगों और संवेगों की
नमता से शर्मना क्या?

बदलें खुद को शांत चित्त से
जानें भी परिणामों को।
संशय, भ्रम में भटक न जाना
करें सुनिश्चित कामों को॥
मानें उचित सलाह सभी की
बातें और बढ़ाना क्या?

पढ़ें पूर्वजों के शास्त्रों को
जिनने जीवन दान किया।
नहीं भुलाया है संस्कृति को
सबका ही सम्मान किया॥
चेहरों पर दे दें मुस्कानें
अपना दर्द सुनाना क्या?

ANUVRAT MOVEMENT

'Anuvrat' - a way to respect humanity

By Ashok Jain



Unfortunately, world history is full of wars and conflicts since the era of cavemen evolved as tribes. The fundamental reason for war between two tribes was to demonstrate power and survival. It was easy to capture food and wealth from other tribe(s) rather than working hard to produce or grow the necessary things. History also reveals that people fight back for their rights to recover their lost properties and release their tribal personals captured by the other tribe.

Acharya Tejaji

People have been united in early centuries and the connection has been continued till now. There have been very rare cases where people have fought for their basic rights. In the first case in history, we do not know who started human thoughts of self-respect and self-restraint. But it is clear that people fight back for their rights to recover their lost properties and release their tribal personals captured by the other tribe.

The philosophy of 'Anuvrat' movement has been initiated in early centuries and the connection has been continued till now. There have been very rare cases where people have fought for their basic rights. In the first case in history, we do not know who started human thoughts of self-respect and self-restraint. But it is clear that people fight back for their rights to recover their lost properties and release their tribal personals captured by the other tribe.

(Read in three article of this part serial)



संयुक्त राष्ट्र संघ में अणुविभा के प्रतिनिधि श्री अरविंद वोरा की पहल पर न्यूयॉर्क से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'द साउथ एशियन टाइम्स' में निरन्तर अणुव्रत आलेख की एक शृंखला चल रही है। नवम्बर अंक में प्रकाशित डॉ. अशोक जैन का आलेख यहाँ पुनर्प्रकाशित किया जा रहा है।

'Anuvrat' - a way to respect humanity

■ Ashok Jain ■



It is known that Acharya Shree Tulsi Ji launched the 'Anuvrat' movement on March 1, 1949. The movement was initiated as a non-sectarian, ethical-spiritual basis to enhance the self-esteem and promote self-restraint of individuals at that point in history. The movement emerged at a critical juncture in historical context in terms of a larger global perspective.

Let's go back in Indian history about seventy-five years back, in 1947 when British rulers left after several decades of continued opposition, demonstrations and fights by patriotic Indians who contributed towards India's freedom. In fact, the demonstrations, fights, and bloodshed continued after the first world war of 1918 to gain independence of India. These demonstrations were mainly to resolve the disputes left unsettled after World War I. Unfortunately, after the end of World War II, British rulers divided India based on religion, where they left India. The British started the partition of India into India and Pakistan. These were extremely dark days; Bharat was divided into India and Pakistan. Social and political environment was very disturbing, patriotic morale was at a very low point. Bloodshed and fighting continued under those social and political conditions. It was important to boost the moral, remind the people about the fundamental right of human life. The only peaceful answer was to initiate the 'Anuvrat' movement in those dark days. We know by 1951 the environment was much more peaceful as India had its constitution and the public gained the confidence in the independent India.

History is fascinating, as a child, my teachers and elders constantly reminded me that we need to learn from our history. Unfortunately, world history is full of wars and conflicts since the era of cavemen evolved as tribes. The fundamental reason for war between two tribes was to demonstrate power and survival. It was easy to capture food and wealth from other tribe(s) rather than working hard to produce or grow the necessary things. History also reveals that people fight back for their rights to recover their lost properties and release their tribal personals captured by the other tribe.

War II, British rulers divided India based on religion when they left India. The deeply divided differences emerged with a demand of dividing Bharat. Those were extremely dark days; Bharat was divided into India and Pakistan. Social and political environment was very disturbing, people's morals were at a very low point, bloodshed and fighting continued. Under those social and political conditions, it was important to boost the moral, remind the people about the fundamental right of human life. The only peaceful answer was to initiate the 'Anuvrat' movement in those dark days. We know by 1951 the environment was much more peaceful as India had its constitution and the public gained the confidence in the independent India.

History is fascinating, as a child, my teachers and elders constantly reminded me that we need to learn from our history. Unfortunately, world history is full of wars and conflicts since the era of cavemen evolved as tribes. The fundamental reason for war between two tribes was to demonstrate power and survival. It was easy to capture food and wealth from other tribe(s) rather than working hard to produce or grow the necessary things. History also reveals that people fight back for their rights to recover their lost properties and release their tribal personals captured by the other tribe.

Therefore, the philosophy of 'Anuvrat' might have been initiated in early centuries



and the concept might have evolved along with human civilization. I have been very curious to find when the term 'Anuvrat' was used for the first time in history, as this will provide some clue about human thoughts of self awareness and self-discipline. Efforts of compiling early sacred literature transmitted orally, was first systematized in a council at Patna (Bihar) and Mathura (Uttar Pradesh), both cities are in northern India, during 4th century BCE and early 3rd century CE respectively.



Early documents focus on male and mentions eight basic rules of behavior, which

include avoidance of night eating, as well as a diet that excludes meat, wine, honey, and types of fruits and roots deemed to harbor life forms.

There are 12 vows to be taken including five Anuvratas, three Gunavrats (three primer qualities or elements of matter) and four Shishavratas (education/development). Therefore, these fundamental principles, ideology, and concepts of Anuvrat might have been formulated before the 4th century BCE. In fact, combining multiple fundamental concepts to promote humanity for a civilized society in one word "Anuvrat" reflects intelligence and deep thought to bring the society together, bring harmony and peace.

Ashok Jain is a professor of Biology at Albany State University (ASU), GA, USA, and program coordinator for Biotechnology program. He is the recipient of 'Researcher of the Year' twice in 2012 and 2018.

अणुव्रत संदेश को
जन-जन तक
पहुंचाने का
एक सुन्दर माध्यम

अणुव्रत डायरी
मूल्य ₹ 100 मात्र

अणुव्रत डायरी



100 या इससे अधिक प्रतियां मांगने
पर अणुव्रत समिति अथवा व्यक्तिगत नाम
डायरी पर प्रिंट किया जा सकेगा।

- अग्रिम बुकिंग के लिए आज ही सम्पर्क करें-
संयोजक
श्री छतर सिंह चोरड़िया
+917002468576



अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का 108 वां जन्मोत्सव

अणुव्रत मानव जाति के लिए कल्याणकारी-अणुव्रत अनुशास्ता



अणुव्रत दिवस के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया, यह मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। अणुव्रत उनका प्रिय विषय था। वे अणुव्रत दर्शन के प्रसार और पोषण के लिए सदैव प्रयासरत रहे।

अनेक संस्थाएं अणुव्रत आंदोलन से जुड़ी रही हैं। वर्तमान में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी यह गुरुतर दायित्व निभा रही है। आज अणुव्रत विश्व भारती ऐसी संरथा बन पड़ी है, जिसमें व्यापकता आ गयी है। इसके तहत बालोदय, जीवन विज्ञान समेत अनेक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं।

अणुविभा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ ही देश भर में फैली अणुव्रत समितियां अपनी शक्ति का नियोजन भी अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार में करती रहें। मानव में नैतिकता की भावना रहे, संयम की चेतना रहे, सद्भावना बनी रहे, इस दिशा में कार्य होने चाहिए।

अणुविभा में और शक्ति का संचार हो ताकि अणुव्रत का काम आगे बढ़ता रहे। अणुविभा के युवा कार्यकर्ताओं की शक्ति का नियोजन अणुव्रत के कार्यों में होना चाहिए।

आचार्य श्री के सान्निध्य में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2021, अणुव्रत संकल्प शृंखला, नशे के खिलाफ ऑनलाइन पिटीशन और जीवन विज्ञान दिवस 2021 के पोस्टर्स का लोकार्पण भी किया गया।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन के बाद पूरे विश्व में धर्म की परिभाषा परिवर्तित हो गयी। धर्म उपासना-स्थलों से निकलकर लोगों के दैनिक जीवन में उत्तर आया। मानव-जीवन का एक अंग बन गया। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत दर्शन के प्रसार के लिए हजारों किलोमीटर की पदयात्रा की। इसका एकमात्र उद्देश्य मानव-कल्याण था। मानव को मानव बनाना था। उन्होंने मानवता की, नैतिकता की, धर्म की जो ज्योति जलायी, वह हमेशा प्रज्वलित रहे। आचार्य तुलसी की यह भावना कि अणुव्रत का शंखनाद पूरे विश्व में गूँजेगा, हर मानव तक पहुँचेगा, यही हम सभी का प्रयास होना चाहिए।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि आज का दिन एक विशेष दिन है। आचार्य तुलसी का जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया जाता है, यह स्वयं स्पष्ट करता है कि आचार्य तुलसी और अणुव्रत एक-दूसरे के पर्याय हैं। आचार्य तुलसी का स्मरण जब हम करते हैं तो अपार ऊर्जा की अनुभूति होती है।

श्री जैन ने बचपन के दिनों से ही आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में बिताये गये क्षणों का भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा, आचार्य श्री ने लाडनूं में मुझे अणुविभा के मंत्री पद का दायित्व संभालने का आदेश दिया था। तब से वह क्षण मुझे प्रेरित करता रहता है कि अणुव्रत आंदोलन के लिए मुझसे जो कुछ बन पड़े, मैं करता रहूँ। मैं जो कुछ भी कर पाता हूँ वह आचार्य श्री तुलसी को श्रद्धांजलि मानकर करता हूँ।

इस अवसर पर अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर, अणुव्रत संकल्प शृंखला के संयोजक श्री राकेश नौलखा, अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के संयोजक श्री सुधीर चोरड़िया व सह संयोजक श्री नवीन बांठिया, तेलंगाना राज्य प्रभारी श्री तिलोक सिपानी एवं राजस्थान राज्य प्रभारी श्री अभिषेक कोठारी भी उपस्थित थे।



देश भर से प्राप्त अणुव्रत दिवस समाचार

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का 108वां जन्मोत्सव 6 नवम्बर को अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में मानवता के उत्थान के लिए आचार्य तुलसी के अवदानों को याद करने के साथ ही अणुव्रत आंदोलन को गति देने का संकल्प दुहराया गया। पेश है रिपोर्ट—



जोधपुर

मानवीय मूल्यों के सजग प्रहरी थे आचार्य तुलसी

अणुव्रत समिति की ओर से सरदारपुरा के तातेड़ गेस्ट हाउस और अमर नगर के तेरापंथ भवन में कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस अवसर पर साध्वीश्री पुण्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने धर्मसंघ, समाज, देश और मानव जाति के लिए जितना काम किया, उसे युगों-युगों तक भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने धर्म को संप्रदाय से मुक्त करने का प्रयास किया और चरित्र निर्माण के लिए अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की।

मुनिश्री तत्वरुचि ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी मानवीय मूल्यों के सजग प्रहरी थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और अणुव्रत आंदोलन जैसे उपक्रम चलाये ताकि व्यक्ति का मानसिक व भावात्मक संतुलन बना रहे। व्यक्ति प्रामाणिक, नैतिक और नशामुक्त रहे, यही अणुव्रत का उद्देश्य है। समिति की अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने अपने कर्तृत्वों से विश्व को उजालों से भर दिया है। श्री जिनेश्वर तातेड़ ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री विकास चोपड़ा ने किया। समिति की मंत्री श्रीमती शर्मिला भंसाली ने आभार ज्ञापन किया।

बैंगलुरु

तुलसी के विचारों में समस्याओं का समाधान

अणुव्रत समिति की ओर से राजाराजेश्वरी नगर तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि अणुव्रत ऐसी पवित्र जीवनशैली



है जिससे सांप्रदायिक सौहार्द के साथ व्यसन मुक्ति तथा नैतिक मूल्यों को व्यवहार में प्रतिष्ठित किया जा सके।

शासनश्री साध्वी श्री मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने मानवीय चेतना में अणुव्रत के माध्यम से नयी जीवनशैली प्रतिष्ठित की जिससे हर तबके का व्यक्ति जुड़ा हुआ है। उनका साहित्य स्वयं प्रेरणा स्रोत है। उनके विचारों में राष्ट्रीय, सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं का समाधान है।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री मनोज डागा, अणुव्रत समिति बैंगलुरु के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पोरवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष श्री सुरेश महणोत, संगठन मंत्री श्री निर्मल पोकरणा, सदस्य श्री रूप देसरला, श्री धर्मेंद्र बरलोटा, श्री जवहरीलाल दुगड़ आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

तेयुप अध्यक्ष श्री सुशील भंसाली, ते.म.म. अध्यक्ष श्रीमती लता बाफना, तेरापंथ टाइम्स के संपादक श्री दिनेश मरोठी, अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री कन्हैयालाल चिपड़ आदि अनेक वक्ताओं ने विचार रखे। 108 भाई-बहनों ने 1 वर्ष के लिए विभिन्न प्रत्याख्यान किये। अणुव्रत समिति के मंत्री श्री माणकचंद संचेती ने कार्यक्रम का संचालन किया।

चिकमंगलूर

धर्म जागरण का आयोजन

अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत दिवस पर स्थानीय तेरापंथ भवन में रात्रिकालीन धर्म जागरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। समिति अध्यक्ष श्री लालचंद भंसाली, सभा अध्यक्ष श्री गौतम गादिया और श्री मदन गादिया ने आचार्य श्री तुलसी के अवदानों की चर्चा की। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में आमजन की उपस्थिति रही।



अजमेर विजयी प्रतिभाओं का सम्मान

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के नेतृत्व में अणुव्रत दिवस मनाया गया। सभा अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश छाजेड़ ने धार्मिक प्रतियोगिताओं में प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं को बधाई दी।

महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सुनीता छाजेड़ ने गुरुदेव के अवदानों पर प्रकाश डाला। तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष श्री राकेश छाजेड़ ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। अणुव्रत समिति मंत्री श्री संजय छाजेड़ ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में राष्ट्रीय स्तर पर अजमेर की छात्रा दृष्टि विस्सा को प्रथम रनर अप चयनित होने पर बधाई दी एवं पुरस्कृत किया।

अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती मोनिका लोढ़ा ने सभी का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महिला मंडल मंत्री कविता श्रीश्रीमाल एवं सभा मंत्री विपिन पीतलिया ने किया।



सिरसा

आचार्य तुलसी थे मानव जीवन के शिल्पकार

अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता साध्वी गुरुयशा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व करुणा व अहिंसा का महासमंदर था। वे मानव जीवन के शिल्पकार थे। शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी समूची मानवता को सत्यम्, शिवम् और सौंदर्य से परिपूर्ण करते रहे। साध्वीश्री

जयन्त प्रभा जी ने 'तुलसी की अमरगाथा' कविता तथा साध्वी मंजुलता जी ने 'तुलसी-तुलसी' गीत की प्रस्तुति दी।

इससे पहले अणुव्रत समिति व तेरापंथ समाज ने पूरे शहर में अणुव्रत प्रभात रैली निकाली और फिर तुलसी भजन संध्या का आयोजन किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ श्रावक सर्वश्री हनुमानमल गुजरानी, रतनलाल बोथरा, सभा अध्यक्ष देवेन्द्र डागा, अणुव्रत समिति के मंत्री अमित सिंधी, युवक परिषद् अध्यक्ष कमल सुराना, महिला मण्डल अध्यक्ष सुमन गुजरानी व पूजा नाहटा, बिमला गुजरानी, राजेश पुगलिया आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन समिति के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चम्पालाल जैन ने किया।



कटक

'एक शाम तुलसी के नाम'

अणुव्रत समिति की ओर से 'एक शाम तुलसी के नाम' का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। अध्यक्ष श्री मुकेश डूंगरवाल ने लोगों से अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने की अपील की।

महासभा के संरक्षक श्री मोहनलाल सिंधी, उपासक श्री पानमल नाहटा, राष्ट्रीय कवि संगम की प्रांतीय महामंत्री श्रीमती पुष्पा सिंधी, अणुव्रत समिति के परामर्शक श्री हीरालाल खटेड़, सभा के मंत्री श्री मनोज दूगड़, तेयुप अध्यक्ष श्री योगेश सिंधी, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सायर सिंधी ने भी विचार व्यक्त किए। श्री नरेश खटेड़, श्रीमती भावना जैन, श्रीमती पूजा चौरड़िया ने मधुर गीत का संगान किया। मंत्री विकास नौलखा ने आभार ज्ञापन किया। संचालन सहमंत्री श्रीमती वर्षा मरोठी ने किया।

गुवाहाटी

'सिमरुं तेरा नाम' भक्ति संध्या का आयोजन

अणुव्रत समिति ने 'सिमरुं तेरा नाम' भक्ति संध्या का आयोजन तेरापंथ धर्मस्थल में किया। समिति के अध्यक्ष श्री बजरंगलाल डोसी ने गुरुदेव तुलसी को श्रद्धापूर्ण करते हुए सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। सभा के मंत्री श्री निर्मल सामसुखा ने विचार व्यक्त किये।



अणुविभा के सहमंत्री श्री छत्तरसिंह चौरड़िया, श्री अशोक संचेती, श्री बाबूलाल सुराणा, श्री जयकुमार भंसाली आदि ने गीतिका के माध्यम से भावांजलि प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन समिति उपाध्यक्ष श्री नवरतनमल गधैया एवं धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष श्री संजय चौरड़िया ने किया।



हैदराबाद

अणुव्रत प्रासंगिक था, है और रहेगा

अणुव्रत समिति की ओर से ज्ञानबाग कॉलोनी में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री निर्वाणश्री जी ने कहा — अणुव्रत सदैव प्रासंगिक था, है और रहेगा। अणुव्रत की असांप्रदायिक दृष्टि ही इसकी जीवंतता का आधार है। साध्वीश्री डॉ. योगक्षेम प्रभा जी ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती मानवीय मूल्यों को स्थापित करने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था है। अणुव्रत समितियों के माध्यम से वह विश्व भर में नैतिकता, सद्भावना, सौहार्द, नशामुक्ति की रोशनी बाँट रही है।

अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा तथा अणुव्रत समिति हैदराबाद के अध्यक्ष श्री प्रकाश एच भंडारी ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन समिति मंत्री श्री अशोक मेड़तवाल तथा धन्यवाद ज्ञापन सह मंत्री श्री विजय आंचलिया ने किया। कार्यक्रम में अणुविभा के तेलंगाना प्रभारी श्री तिलोक सिपानी, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती अनिता गिड़िया, परामर्शदाता श्री संपत सिंधी, संगठन मंत्री श्री नीरज सुराणा, प्रचार मंत्री श्रीमती रीटा सुराणा आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

फारबिसगंज

दूसरों की पीड़ा समझने वाला होता है युगपुरुष

अणुग्रत समिति की ओर से तेरापंथ सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. साध्वीश्री पीयुषप्रभा जी ने कहा



कि युगपुरुष वही होता है जो दूसरों की पीड़ा समझता है और उसे दूर करता है। आचार्य तुलसी ऐसे ही युगपुरुष थे। उन्होंने अपनी दूरदृष्टि से जग का उद्धार किया।

साध्वीश्री सुधाकुमारी जी ने आचार्य तुलसी के जीवन के रोचक प्रसंग सुनाये। सभाध्यक्ष श्री निर्मल मरोठी ने स्वागत वक्तव्य दिया। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती प्रभा सेठिया, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम भंसाली, उपाध्यक्ष श्रीमती नीलम बोथरा आदि ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वीश्री दीप्तियशा जी ने किया।



दिल्ली

आचार संहिता के पालन से बदलेगी युगधारा

अणुव्रत समिति की ओर से रोहिणी के तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वीश्री रत्नश्री जी ने कहा कि लाडनूं की पावन धरती पर अवतरित एक दिव्य ज्योति किरण ने सूर्य का रूप धारण करके समग्र विश्व में आलोक रश्मियां फैलायीं। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के द्वारा जीवन जीने की कला सिखायी। अणुव्रत आचार संहिता का पूर्णतया पालन किया जाये तो युगधारा को परिवर्तित किया जा सकता है। साध्वीश्री सुव्रता जी, सुमन प्रभा जी एवं चिंतन प्रभाजी ने भी आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। साध्वीश्री कार्तिक प्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया। दिल्ली अणुव्रत समिति के संगठन मंत्री श्री मनोज बरमेचा, रोहिणी सभा के अध्यक्ष श्री मदनलाल जैन, भिक्षु मंडल, महिला मंडल व अणुव्रत समिति सदस्यों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन रोहिणी सभा के मंत्री श्री राजेश बैगानी ने किया।

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

असम – बिहार – बंगाल

नवम्बर माह अणुव्रत सम्पर्क यात्राओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। इस वर्ष जनवरी – फरवरी में प्रारम्भ हुआ अणुव्रत सम्पर्क यात्राओं का क्रम कोविड जनित परिस्थितियों के चलते रुक गया था। इस बीच सितम्बर में राजसमन्द में आयोजित 72वें अणुव्रत अधिवेशन में अनेक अणुव्रत समितियों के कार्यकर्ताओं से सार्थक मुलाकात और विचार-विमर्श का अवसर मिला था।

अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन की रिपोर्ट

अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर और महामंत्री श्री भीखम सुराणा के साथ मुझे भी 19 नवम्बर की शाम गुवाहाटी पहुँचना था लेकिन उदयपुर में खराब मौसम के चलते सभी फ्लाइट्स रद्द हो जाने से मैं 20 नवम्बर को खारूपेटिया में इस यात्रा में शामिल हो सका। गुवाहाटी समिति अध्यक्ष श्री बजरंग डोसी के साथ खारूपेटिया की यात्रा में अणुव्रत को लेकर काफी चर्चाएं हुईं।

इससे पहले गुवाहाटी अणुव्रत समिति की कार्यसमिति बैठक में सहभागिता और नौगांव, तेजपुर और ढेकियाजुली में सार्थक कार्यक्रमों के साथ अणुव्रत सम्पर्क यात्रा का आगाज हो चुका था। अविनाश जी और सुराणा साहब के साथ सहमंत्री श्री छतर चोरड़िया और असम प्रभारी श्री बजरंग बैद भी थे।



गुवाहाटी कार्यसमिति बैठक में स्थानीय कार्यकर्ताओं की जिज्ञासाओं को जानने-समझने का अवसर मिला। अविनाश जी और भीखम जी ने अणुव्रत प्रकल्पों की जानकारी, वैधानिक और कार्यकारी अपेक्षाओं पर चर्चा के साथ ही कार्यकर्ताओं की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया।

नौगांव में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री छतर जैन और मंत्री श्री संजय बोथरा सहित अनेक कार्यकर्ता



उपस्थित थे। श्री हुलास बोथरा और श्री अजीत कोठारी की कार्यक्रम संयोजन में सक्रिय भूमिका रही। नौगांव जैसे छोटे क्षेत्र में 60–70 लोगों की उपस्थिति और उसमें भी विभिन्न जाति-समुदाय के विशिष्ट लोगों की सहभागिता एक तरफ जहां स्थानीय अणुव्रत समिति की सक्रियता को दर्शा रही थी, वहीं अणुव्रत के रचनात्मक स्वरूप की प्रस्तुति दे रही थी। श्री मोहन नाहटा ने कार्यक्रम का संयोजन किया और अणुव्रत गीत का संगान अणुव्रत समिति की महिला कार्यकर्ताओं ने किया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के प्रति यहां विशेष उत्साह नजर आया और गत विजेताओं को सम्मानित भी किया।



तेजपुर में अणुव्रत समिति का पुनर्गठन हुआ। श्रीमती सुचित्रा धारीवाल ने अध्यक्ष का दायित्व पूर्ण उत्साह के साथ संभाला। भाई अविनाश जी ने नव मनोनीत अध्यक्ष को पद की शपथ दिलायी। समिति की निवर्तमान अध्यक्ष श्रीमती सुशीला दूगड़ और सभा अध्यक्ष श्री रमेश बैद ने समिति को पूर्ण सहयोग का विश्वास



दिलाया। कार्यक्रम संयोजन में श्री मनोज दूधोड़िया की सक्रिय भूमिका रही और सुबह के भोजन में उनकी पारिवारिक आत्मीयता भी प्राप्त हुई।



ढेकियाजुली में नयी अणुव्रत समिति का गठन इस यात्रा की विशिष्ट उपलब्धि रही। श्री चंदनमल बोथरा ने अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि अणुव्रत के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में ढेकियाजुली समिति किसी से पीछे नहीं रहेगी। अणुव्रत के प्रति अगाध आस्था भाव रखने वाले बोथरा जी स्वयं अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। उनका आत्मीय भाव दिल को छूने वाला था। भाई अविनाश जी ने नव मनोनीत अध्यक्ष को पद की शपथ दिलायी। यहां के जाने-माने वयोवृद्ध गीतकार श्री कमल संचेती ने भी अणुव्रत के कार्यों में अपने योगदान का विश्वास दिलाया। असम के सुदूर क्षेत्रों में अणुव्रत की पहुँच और इसके प्रति समर्पण भाव नये विश्वास का संचार कर रहा है।

खारूपेटिया



खारूपेटिया में उपाध्यक्ष श्री कमल शामसुखा, मंत्री श्री दुलीचंद लूणावत एवं निर्वर्तमान अध्यक्ष श्री शांतिलाल सुराणा ने अणुविभा टीम का स्वागत किया। अध्यक्ष श्री महेंद्र छाजेड़ के भीलवाड़ा प्रवास पर होने के कारण उनसे मुलाकात नहीं हो सकी। विचार गोष्ठी में देर रात तक अच्छी संख्या में कार्यकर्ताओं की उपस्थिति उत्साहित कर रही थी। सभा अध्यक्ष श्री दीपक बैद ने अणुव्रत को व्यापक विस्तार देने में सहयोग की बात कही। यहां से अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में विजेता रहे बच्चों को पुरस्कृत किया गया। सभा के मंत्री श्री दीपक हीरावत ने कुशल संचालन किया।

कार्यक्रम के पश्चात् श्री शांतिलाल सुराणा के घर पर आत्मीय पारिवारिक माहौल के बीच हम सब ने भोजन किया। श्री शांतिलाल जी अणुविभा के कोषाध्यक्ष श्री राकेश बरड़िया के संसुरजी हैं। आप अणुव्रत आंदोलन से लम्बे समय से जुड़े रहे हैं। आपने अणुविभा की गतिविधियों को विस्तार देने के लिए पूरे सहयोग का विश्वास दिलाया।

21 नवम्बर का प्रवास गुवाहाटी में रहा। श्री बजरंग जी बैद असम के राज्य प्रभारी हैं, आपके घर नाश्ता लेकर हमें आज का क्रम प्रारम्भ करना था लेकिन समय की अल्पता के चलते हमें इससे वंचित रहना पड़ा। अणुव्रत के जागरूक कार्यकर्ता बजरंग जी के व्यक्तित्व की पहचान उनकी सहदयता और सरलता में मिलती है।



गुवाहाटी सभा भवन में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। सभा अध्यक्ष श्री झंकार दुधोड़िया सहित युवक परिषद, महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, कन्या मंडल आदि विभिन्न संस्थाओं ने अणुविभा कार्यकर्ताओं का स्वागत किया और अणुव्रत आंदोलन को पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया।

इस अवसर पर अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों, निर्णायक की भूमिका निभाने वाले विभिन्न विधाओं के एक्सपटर्स एवं ईस्टर्न जोन के संयोजक रहे श्री संजय चोरड़िया को सम्मानित किया गया। समिति उपाध्यक्ष श्री नवरतन गधैया ने दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम का संचालन किया।

सभी स्थानों पर सभा, युवक परिषद, महिला मंडल और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पदाधिकारियों ने भी अणुव्रत आंदोलन को पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया। अणुविभा पदाधिकारियों द्वारा अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों, अणुव्रत समिति के वैधानिक ढांचे, आर्थिक शुचिता और सभी समाज के लोगों को जोड़ कर अणुव्रत के कार्यों में व्यापक सहभागिता बढ़ाने पर जोर दिया गया।

अणुव्रत संकल्प शृंखला से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने, जीवन विज्ञान सहित नयी पीढ़ी के नव निर्माण में सहयोगी अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों को गति देने और 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने हेतु प्रेरित किया गया।

सभा भवन में अध्यक्ष श्री दुधोड़िया जी की सहबदयता ने हम सब को प्रभावित किया। आपके नेतृत्व में गुवाहाटी का एक विशिष्ट दल हाल ही में राजसमंद गया था। उनके अनुभव हमें उत्साहित करने वाले थे। श्री निर्मल शामसुखा, श्री दिलीप दूगड़ एवं अन्य सक्रिय कार्यकर्ताओं के सार्थक सुझाव मिले।

आज दिन का भोजन अणुविभा के सहमंत्री श्री छतर सिंह जी चौरड़िया के घर था। छतर सिंह जी लम्बे समय से अणुव्रत से जुड़े रहे हैं और अणुव्रत महासमिति की केंद्रीय टीम में शामिल रहे हैं। सहज सरल व्यक्तित्व के साथ ही आपके परिवार के आत्मीय माहौल ने सब को प्रभावित किया।

गुवाहाटी में दिन भर के प्रवास का उपयोग हमने जन सम्पर्क के रूप में किया जिसमें अणुव्रत के प्रति जन भावना को गहराई से समझने का अवसर मिला। सम्पर्क के क्रम की शुरुआत हमने श्री उत्तम नाहटा के घर उनसे मुलाकात से की। आपने बड़ी रुचि के साथ अणुविभा के बहुविध कार्यक्रमों को समझा और अपने सहयोग के प्रति हमें आश्वस्त किया।

श्री प्रशान्त बुच्चा धुन के धनी युवा हैं। अविनाश जी के साथ आपके पुराने मधुर संबंध रहे हैं। उनका यह कहना दिल को छू गया कि समाज के काम के लिए समय कभी रुकावट नहीं बन सकता, मैं 24 घंटे इसके लिए तैयार हूँ। उनके साथ ही हम उनके पड़ोसी और मित्र श्री राकेश नाहटा के यहां पहुँचे। नाहटा जी सुबह के कार्यक्रम में भी उपस्थित थे। उनका यह कहना कि अणुव्रत को आज पहली बार मैंने गहराई से समझा है, हमारी यात्रा की सार्थकता को प्रतिबिंबित कर रहा था। उन्होंने कहा कि आपका सहयोगी बन कर मुझे खुशी होगी।

हमारा अगला पड़ाव था श्री रितेश खटेड़ का घर। रितेश जी मारवाड़ी युवा मंच और विद्या भारती स्कूल संगठन से बहुत करीब से जुड़े हैं। आपने स्कूलों में अणुव्रत जीवन विज्ञान प्रकल्प को ले जाने में अपने सहयोग के प्रति आश्वस्त किया। आपकी पत्नी भी साहित्य में रुचिशील युवती हैं। उन्होंने जल्दी ही 'प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान' पुस्तिका को असमी भाषा में अनुवाद करने का जिम्मा लिया है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कोटेचा के घर लम्बी चर्चाएं चलीं। उनके अनुभवों का लाभ अणुव्रत आंदोलन को मिले, इस संदर्भ में भी सकारात्मक बात हुई। यहां से हम धीर— गंभीर व्यक्तित्व के धनी श्री संतोष बोथरा से मिलने पहुँचे जो अणुव्रत से लंबे समय से जुड़े रहे हैं। आपके स्नेह और सहयोग के प्रति आश्वस्त हम सिरसा के मूल निवासी श्री मनोज जी नवीन जी डागा के यहां पहुँचे। आपकी 90 वर्षीय मातुश्री का प्यार आशीर्वाद के रूप में छलक रहा था। पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत नजर आया। भ्राताद्वय की उदारता हमारे उत्साह को बढ़ाने वाली थी।

रात्रि भोजन के लिए हम जब अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री बजरंग डोसी के घर पहुँचे तो काफी विलंब हो चुका था। यहां डोसी जी के पुत्र बीरेंद्र का जन्मदिन सबने साथ मिल कर मनाया। डोसीजी की धर्मपत्नी मुन्नी बाई ने अस्वस्थता के बावजूद हमारी दिल से मेहमाननवाजी की और अपनी आस्था के किस्से सुनाये। डोसी जी अणुव्रत के प्रति समर्पित भाव से तो जुटे ही हैं, अर्थ संबल के साथ उन्होंने अपने समर्पण को और भी संपूर्ण कर दिया।

यहां 2016 चातुर्मास में प्रथम अणुव्रत बालोदय किड्जोन की आयोजना में सहयोगी रहे भाई प्रकाश बरड़िया, अशोक सुराणा और सौरभ बोथरा भी इंतजार कर रहे थे। सौरभ जी से जीवन विज्ञान के संदर्भ में सार्थक चर्चाएं हुईं।

रात्रि विश्राम के लिए महामंत्री श्री भीखम जी सुराणा के भ्राता श्री मनोज जी मीरा जी सुराणा के घर पहुँचे। तीन दिन तक रात 12 – 1 बजे सोना और सुबह 5 – 6 बजे उठ जाने के बीच बराबर साथ खड़े रहना आपकी आत्मीयता को दर्शा रहा था।

इसी बीच भीखम जी के काकाजी श्री रिधकरण सुराणा की अचानक अस्वस्थता के चलते उन्हें एक दिन के लिए गुवाहाटी ही रुकना पड़ा। असम प्रभारी श्री बजरंग जी को भी अस्वस्थता के कारण बीच में रुकना पड़ा। अविनाश जी, छतर जी और मैं 22 नवम्बर की सुबह अणुव्रत संपर्क यात्रा को आगे बढ़ाते हुए बरपेटा, बंगाईगांव, बिलासीपाड़ा और धुबड़ी के लिए रवाना हुए।

यात्रा के आगामी पड़ाव होंगे दिनहटा, कूचविहार, जयगांव, फारबिसगंज, अररिया, गुलाबबाग, दलखोला, किशनगंज, इस्लामपुर, सिलीगुड़ी, हावड़ा, कोलकाता जहां अणुविभा उपाध्यक्ष श्री प्रताप दूगड़ और संगठन मंत्री श्री राकेश मालू भी इस यात्रा में साथ जुड़ेंगे तथा इसे और मजबूती प्रदान करेंगे।



अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

बीकानेर संभाग

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) के पदाधिकारी अणुव्रत आंदोलन को गति देने तथा कार्यकर्ताओं में उत्साह के संचार के लिए संपूर्ण देश का दौरा कर रहे हैं। इसी क्रम में अणुविभा के पदाधिकारी और राज्य प्रभारी बीकानेर संभाग की तीन दिवसीय अणुव्रत सम्पर्क यात्रा के सिलसिले में 8 नवम्बर को बीकानेर पहुँचे।



पहले दिन अणुव्रत समिति बीकानेर और उदासर के साथ दुग्गड़ भवन में पहली बैठक हुई। इसमें अणुविभा के उपाध्यक्ष (नॉर्थ जोन) श्री अशोक डूंगरवाल और महामंत्री श्री भीखमचन्द सुराणा ने संस्था द्वारा निर्धारित 30 उपक्रमों के माध्यम से किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। बीकानेर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री झंवरलाल गोलछा और उदासर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोपड़ा ने अपनी समितियों के कार्यों की जानकारी पदाधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत की।

बैठक में प्रचार-प्रसार मंत्री श्री धर्मेन्द्र डाकलिया, राज्य प्रभारी श्री प्रकाश भंसाली, कार्यसमिति सदस्य श्री अशोक चौरड़िया, डॉ. नीलम जैन के साथ ही बीकानेर और उदासर समिति से जुड़े अणुव्रत कार्यकर्ताओं एवं शहर के प्रबुद्धजनों की उपस्थिति रही।



अणुव्रत समिति गंगाशहर द्वारा तेरापंथ भवन में मुनिश्री शांतिकुमार जी के सान्निध्य में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने अणुविभा की ओर से संचालित उपक्रमों को अणुव्रत आंदोलन की प्रगति के लिए बहुत ही उपयोगी बताया तथा समिति को पूरी सक्रियता से इन कार्यों को करने की प्रेरणा प्रदान की।

अणुविभा के पदाधिकारियों ने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता का पावन पदार्पण गुरुदेव श्री तुलसी की महाप्रयाण भूमि पर हो रहा है। इस अवसर पर बीकानेर संभाग से अणुव्रत की ऐसी गूँज उठे जिसकी आवाज पूरे विश्व में सुनायी दे। अणुविभा पदाधिकारियों ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-2020 में राष्ट्रीय सह-संयोजक के रूप में दी गयी सेवाओं के लिए मोमेंटो भेंट कर राज्य प्रभारी श्री प्रकाश भंसाली को सम्मानित किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बोथरा ने समिति के कार्यों की जानकारी प्रदान की। बैठक में अणुविभा के प्रचार प्रसार मंत्री श्री धर्मेन्द्र डाकलिया, कार्यसमिति सदस्य श्री अशोक चौरड़िया, डॉ. नीलम जैन के अलावा अणुव्रत कार्यकर्ताओं, मातृशक्ति एवं प्रबुद्धजनों की सहभागिता रही।



इसके बाद अणुविभा पदाधिकारी श्री प्रकाश भंसाली के घर पधारे। वहां युवक रत्न एवं अणुव्रत सेवी श्री राजेन्द्र सेठिया तथा गंगाशहर सभा अध्यक्ष श्री अमरचन्द सोनी से मिलना हुआ। शांति निकेतन सेवा केन्द्र की व्यवस्थापिका साध्वीश्री पावन प्रभाजी, भीनासर में विराजित शासनश्री साध्वीश्री अमित प्रभाजी, साध्वीवृंद के दर्शन कर उन्हें अणुविभा की गतिविधियों की जानकारी दी।

यहां से अणुविभा पदाधिकारी शक्ति व ऊर्जा प्राप्त करने गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के समाधिस्थल शक्तिपीठ पहुँचे। वहाँ आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के महामंत्री श्री हंसराज डागा एवं टीम ने सभी का स्वागत किया तथा अध्यक्ष श्री महावीर रांका के नेतृत्व में किये जा रहे कार्यों तथा दो दिन पहले शुरू उपासक श्रेणी के प्रशिक्षण शिविर के बारे में बताया। इस अवसर पर उपासक श्रेणी के संयोजक श्री सूर्यप्रकाश सामसुखा, ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक व उपासक प्राध्यापक श्री निर्मल नौलखा एवं अन्य उपासक उपस्थित थे।





प्रथम दिवस की तीसरी बैठक अणुव्रत समिति नोखा के साथ तेरापंथ भवन नोखा में हुई। यहां विराजित शासन गौरव बहुश्रुत साध्वीश्री राजीमती जी ने उन कार्यकर्ताओं के बारे में बताया जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। साध्वीश्री ने कहा कि आज पुनः ऐसे समर्पित जीवन दानी कार्यकर्ताओं की बहुत जरूरत है। अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्रीमती जयश्री भूरा ने सभी का स्वागत किया एवं समिति के कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। बैठक में समाज के गणमान्य लोग शामिल हुए।

अणुव्रत समिति बीदासर की ओर से पहले दिन की चतुर्थ बैठक तेयुप भवन में हुई। इससे पहले सभी ने समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वीश्री कार्तिकयशाजी व अन्य साध्वीवृन्द के दर्शन किये। समिति के उपाध्यक्ष एवं पूरी टीम ने समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि अणुविभा की ओर से मिले दिशा-निर्देशों के अनुसार पूरी सक्रियता से कार्य करेंगे। सभी पदाधिकारी अणुविभा महामंत्री श्री भीखमचांद सुराणा के आवास पड़िहारा पहुँचे और दिनभर के कार्यों की समीक्षा की।



अणुव्रत सम्पर्क यात्रा के दूसरे दिन 9 नवम्बर को अणुविभा पदाधिकारियों ने सर्वप्रथम रत्नगढ़ में शासनश्री साध्वीश्री मधुरेखाजी तथा अन्य साध्वीवृन्द के दर्शन किये तथा उन्हें अणुविभा के प्रकल्पों की जानकारी दी।

अणुव्रत समिति राजलदेसर द्वारा तेरापंथ भवन में बैठक का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् साध्वीश्री डॉ. परमयशाजी के सान्निध्य में संगोष्ठी का आयोजन किया



गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि अणुव्रत कार्यकर्ता बर्फ की तरह अपने दिमाग को ठंडा रखते हुए कार्य करें। अणुव्रत समिति राजलदेसर के अध्यक्ष श्री शंकरलाल सोनी ने अणुविभा पदाधिकारियों का स्वागत किया।



अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ की ओर से मालू भवन में आयोजित बैठक में समिति अध्यक्ष श्री विजयराज सेठिया ने अणुविभा पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा अपनी टीम का परिचय कराया। इसके बाद सभी ने मालू भवन में विराजित शासनश्री साध्वीश्री वसंतप्रभाजी, साध्वीश्री गुप्तिप्रभाजी तथा सभी साध्वीवृन्द के दर्शन किये तथा उन्हें अणुव्रत पत्रिका भेंट की।



अणुव्रत समिति मोमासर की ओर से बैठक का आयोजन शासनश्री साध्वीश्री विनयश्रीजी के सान्निध्य में हुआ। इसमें साध्वीश्री ने कुछ क्षेत्रों में व्याप्त छुआछूत की समस्या के समग्र उन्मूलन के लिए प्रयास करने का आह्वान किया। समिति के मंत्री श्री राकेश संचेती ने भी विचार रखे।

सरदारशहर में अणुव्रत समिति का पुनर्गठन कर सर्वसम्मति से श्री पृथ्वीसिंह बीदावत को समिति का





अध्यक्ष मनोनीत किया गया। अणुविभा के उपाध्यक्ष श्री अशोक डूंगरवाल और महामंत्री श्री भीखमचंद सुराणा, राज्यप्रभार श्री प्रकाश भंसाली ने नवमनोनीत अध्यक्ष को बधाई दी तथा आवान किया कि अणुव्रत आंदोलन की जन्मभूमि सरदारशहर की पुण्यधरा से पुनः नये जोश के साथ ऐसा कार्य हो जिससे अणुव्रत की गूँज भारत की सीमा को पार कर विश्व पटल पर सुनायी दे। इसके बाद सभी ने यहां विराजित शासनश्री साध्वीश्री सरोजकुमारी जी और साध्वीवृन्द के दर्शन किये। सभाध्यक्ष श्री सिद्धार्थ चिंडालिया का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ।

यहां से अणुविभा पदाधिकारी पड़िहारा के लिए रवाना हुए। पड़िहारा गौशाला के पदाधिकारियों ने अणुविभा पदाधिकारियों का स्वागत किया।

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा के तीसरे दिन 10 नवम्बर को पड़िहारा में विराजित साध्वीश्री सुरजप्रभा जी व साध्वी वृन्द के दर्शन किए, मंगल पाठ श्रवण कर आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान किया।



अणुव्रत समिति छापर द्वारा तपोमूर्ति मुनिश्री पृथ्वीराज जी के सान्निध्य में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें अणुव्रत कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों की अच्छी उपस्थिति रही। महासभा पूर्व महामंत्री श्री विनोद चौरसिया, आचार्य महाश्रण प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष श्री माणकचंद बुच्चा, समिति के मंत्री श्री विनोद नाहटा, ने भी विचार रखे। अणुविभा पदाधिकारियों ने भी समिति को अणुविभा द्वारा निर्देशित विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी दी।

अणुव्रत समिति चाड़वास द्वारा आयोजित बैठक में अणुविभा पदाधिकारियों ने विभिन्न प्रकल्पों के बारे में जानकारी प्रदान की। समिति अध्यक्ष श्री विनोद बच्छावत ने स्वागत करते हुए कहा कि अणुविभा द्वारा प्रदत्त कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में पूरी शक्ति का नियोजन करेंगे। सभी महानुभावों ने शासनश्री साध्वीश्री सुप्रभा जी व साध्वीवृन्द के दर्शन, सेवा व उपासना का लाभ भी लिया।



अणुव्रत समिति सुजानगढ़ द्वारा बैठक का आयोजन किया गया। समिति के अध्यक्ष श्री महेश तंवर ने अणुविभा के पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा समिति द्वारा किये जा रहे कायक्रमों की जानकारी दी। उपस्थित सभी महानुभावों ने साध्वीश्री संघप्रभा जी एवं साध्वीवृन्द के दर्शन किये। अणुविभा द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी पदाधिकारियों द्वारा प्रदान की गयी। सभी ने पदाधिकारियों की बातों का बहुत ही ध्यान से सुना व निर्देशित कार्यों को गति प्रदान करने का आश्वासन दिया। इसके साथ ही इस यात्रा के अंतिम पड़ाव लाडनूं की ओर रवाना हुए।



अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में मुनिश्री अमृत कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के लाडनूं आगमन पर अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं का सम्मलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोक डूंगरवाल, महामंत्री श्री भीखमचन्द सुराणा, सहमंत्री श्री इन्द्र बैंगानी का सम्मान किया गया।

अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर द्वारा यात्रा के दौरान निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा, जिससे पदाधिकारियों में और ज्यादा उत्साह का संचार हुआ। इस यात्रा से अणुव्रत आंदोलन को निश्चित रूप से गति मिलेगी। इसी भावना के साथ...



पाठ्कों के लिए विशेष प्रतियोगिता



आपको
करना है
बस इतना

- ❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के नवम्बर 2021 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
- ❖ नवम्बर 2021 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

- * * महिलाएं वटसावित्री व्रत कब करती हैं? 01
- * * अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक कौन है? 02
- * * किसका आकर्षण मनुष्य में दैन्य भरता है? 03
- * * स्मॉल इंज ब्यूटीफुल पुस्तक के लेखक कौन है? 04
- * * अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2020 किसे दिया गया? 05
- * * वर्ष 2021 के अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रारंभ कब हुआ? 06
- * * स्कूल विद ए डिफरेंस किस संस्थान का महत्वपूर्ण प्रकल्प है? 07
- * * 'खोया हुआ सुख' का राजा किसकी फैक्ट्री में काम करता था? 08
- * * डॉ. राधानाथ रथ को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित कब और कहां किया गया? 09
- * * नई दिल्ली के त्रिमूर्ति भवन में आचार्य तुलसी का प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से वार्तालाप कब हुआ? 10

ज्ञातव्य बिंदु

- ❖ प्रतियोगिता के प्रश्न नवम्बर 2021 के अंक पर आधारित।
- ❖ परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- ❖ प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- ❖ उत्तर संकेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- ❖ काट-छाट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- ❖ सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- ❖ एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- ❖ विजेता का नाम नये फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- ❖ सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा।

उत्तर इस पते पर भेजें
अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
मो: 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आकर्षक पुरस्कार

विजेता	<ul style="list-style-type: none"> नकद रु. 2100/- अणुव्रत पत्रिका की बैरार्थिक सदस्यता
प्रोत्साहन - दो	<ul style="list-style-type: none"> नकद रु. 1100/- अणुव्रत पत्रिका की बैरार्थिक सदस्यता
उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि	
15 जनवरी, 2022	

अक्टूबर 2021 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(सितम्बर 2021 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता



रुचिका बैद
गंगाशहर

-::: प्रोत्साहन पुरस्कार :::-

मैत्री संकलेचा

बालोतरा

संतोष जैन

हांसी

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

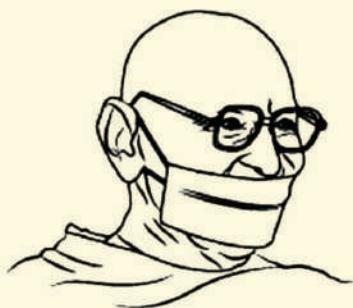
प्रवीण लता जैन	लता गुप्ता	प्रमोद कुमार जैन
चम्पालत जैन	कवता गुजरानी	सुरेश कंजैन
मानक वंद चौपडी	प्रणत नारद	कवियन जैन
ज्योतिषा नाहर	विजय कुमार जैन	हेमलता गेलड
जितेश चौपडी	मावना देवी लुकड	रेखा देवी लुकड
ममता देवी कंकरया	हीना संकलेचा	इंद्रा देवी मदाणी
कीर्ति जैन	रुचिका मदाणी	अवलोक संकलेचा
जी. सुरा भंसारी	परम भंसारी	इंद्रा देवी भंसारी
ममता संकलेचा	ईंजल छाजेड	खुशबू देवी छाजेड
सोहनराज छाजेड	अजना छाजेड	मंजू देवी छाजेड
सिद्धि जैन	युग संकलेचा	सुशीला गोलछा
सुनीता देवता	रामविलास जैन	महेश खांगे
ममता खरेंग	हर्षन जैनता	सुरुषि चोरडिया
प्रभावीती सांखला	नीलेश सांखला	मनाली भंसाली
शिल्पा बाफुना	गानक वंद वैद	रेखा जारोली
लूणवंद काकरिया	निविता छाजेड	सरला कोठारी
मनीष महोत	सुनिता जैन	सुरुन जैन
कमलेश जैन	विजेद जैन	राजकुमार
आरती जैन	मंजू जौहरी	

अनुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01 :	गैरी और सत्य	पृ. 9
उत्तर 02 :	हरदान र्हष्ट	पृ. 36
उत्तर 03 :	गुरुरात से	पृ. 21
उत्तर 04 :	टिम फैरिस	पृ. 28
उत्तर 05 :	सन् 2024	पृ. 5
उत्तर 06 :	झान कैन्ड पर	पृ. 15
उत्तर 07 :	26 जुलाई चन् 1856 को	पृ. 27
उत्तर 08 :	अमरकुमार के	पृ. 7
उत्तर 09 :	राकेश शुक्ला	पृ. 25
उत्तर 10 :	अनुवर्ष 343 पर	पृ. 20





स्वर्णिम भविष्य को पहचानते हुए आचार्य तुलसी द्वारा सन् 1978 में मुनिश्री नथमल जी को कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी के दिन 'महाप्रज्ञ' का महान अलंकरण प्रदान किया गया था। मुनिश्री नथमल ही भविष्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुए। इस दिवस को प्रतिवर्ष देश भर में जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर समारोह आयोजित कर लोगों को जीवन विज्ञान के महत्व के बारे में बताने के साथ ही प्रेक्षाध्यान तथा विभिन्न योगासनों का अभ्यास कराया जाता है।

इस वर्ष भी 17 नवम्बर को अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में देशभर में फैली अणुव्रत समितियों एवं जीवन विज्ञान कार्यकर्ताओं ने जीवन विज्ञान दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। विस्तृत रिपोर्ट जनवरी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

जीवन विज्ञान से सर्वांगीण विकास संभव - आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत समिति एवं आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति भीलवाड़ा के संयुक्त तत्त्वावधान में जीवन विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन अणुव्रत अनुशास्त्र आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण 'जीवन विज्ञान गीत' से हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने प्रेरणात्मक पाठ्ये प्रदान किया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन विज्ञान अर्थात् जीने का विज्ञान, साइंस ऑफ लाइफ हर किसी के लिए उपयोगी है। खासकर विद्यार्थियों के लिए यह अत्यधिक उपयोगी है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों का महान योगदान है। शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक का एक संबंध बन जाता है। इसमें शिक्षा संस्थानों के संचालकों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस तरह शिक्षा के ये चार महत्वपूर्ण आयाम हैं। यह सारा शिक्षा जगत है। अभिभावकों की अपेक्षा रहती है कि हमारा बच्चा ज्ञानवान बने, आत्मनिर्भर बन सके, कमाई के योग्य बन सके और संस्कार संपन्न बने, उसमें अच्छे संस्कार विकसित हों। ये तीनों उम्मीदें यदि शिक्षा संस्थानों द्वारा पूरी की जाती हैं तो अभिभावक संतुष्ट रहते हैं।

जीवन विज्ञान बताता है कि विद्यार्थियों के शारीरिक विकास और बौद्धिक विकास के साथ-साथ मानसिक

और भावनात्मक विकास भी हो, तभी सर्वांगीण विकास हो सकता है। जीवन विज्ञान इसकी मूल आधारभूमि है जिसके माध्यम से विकास के चारों आयाम संभव हो पाते हैं, खासकर मानसिक और भावनात्मक विकास। विद्यार्थियों को बात-बात पर गुस्सा न आये, उनमें उद्घण्डता का भाव न रहे, ईमानदारी की भावना रहे, झूठ बोलने और किसी साथी का सामान लेने का भाव मन में न आये, विनम्रता का भाव बना रहे। ये अच्छे संस्कार विद्यार्थियों में आये, इसके लिए जीवन विज्ञान एक महत्वपूर्ण माध्यम है। अभिभावकों, शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों का समर्थन मिले तो जीवन विज्ञान एक प्रेरणा देने वाला विकल्प बन सकता है।

आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने कहा कि जीवन विज्ञान की दार्शनिक पृष्ठभूमि में अणुव्रत के सिद्धान्त एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोग हैं। इन प्रयोगों के नियमित अभ्यास से व्यक्ति का रूपान्तरण होकर सर्वांगीण विकास होता है। इस अवसर पर जैन विश्व भारती संस्थान के जीवन विज्ञान योग विभाग से अधिसनातक छात्रों ने श्री दिनेश कोठारी के निर्देशन में योग-आसनों का प्रदर्शन भी किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के 40 से अधिक सदस्यों, एम.ए.जीवन विज्ञान योग के 25 विद्यार्थियों सहित अनेक श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। इससे पहले स्थानीय जीवन विज्ञान संयोजक श्री सुनील दक ने सभी का स्वागत किया।



ईको-फ्रेंडली दीपावली अभियान

राष्ट्रीय संयोजक
डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट



- ❖ दीपावली अंधकार पर प्रकाश के विजय के उल्लास का पर्व है। अमावस की गहन अंधेरी रात में जब दीपों की पंक्तियां जगमगाती हैं तो नजारा देखते ही बनता है।
- ❖ इस अवसर पर की जाने वाली आतिशबाजी से जहां अत्यधिक वायु व ध्वनि प्रदूषण होता है, वहाँ आतिशबाजी के दौरान झुलसने के कारण बड़ी संख्या में लोग घायल हो जाते हैं, कई तो जान से भी हाथ धो बैठते हैं। पटाखों के तेज धमाके से बेजुबान पशुओं-पक्षियों की शामत आ जाती है। अस्पतालों में भर्ती मरीजों की नींद और चैन में खलल पड़ता है।
- ❖ आतिशबाजी का जुनून एक तरफ आडम्बर को प्रदर्शित करता है, वहाँ गरीब और अमीर के बीच बढ़ती खाई के प्रति हमारी असंवेदनशीलता को भी दर्शाता है। इन परिस्थितियों को देखते हुए अणुव्रत विश्व भारती की ओर से 'ईको फ्रेंडली दीपावली' अभियान चलाया गया।
- ❖ अणुविभा के आह्वान पर देश भर में फैली अणुव्रत समितियों ने लोगों को आतिशबाजी और पटाखों से स्वास्थ्य तथा पर्यावरण को होने वाले नुकसानों की जानकारी देते हुए उनसे ईको फ्रेंडली दीपावली मनाने का आग्रह किया।
- ❖ सार्वजनिक स्थानों पर 'से नो टू क्रेकर्स' तथा 'ईको फ्रेंडली' दीपावली मनाने के संदेश के बैनर लगाने के साथ ही लोगों से संकल्प पत्र भरवाये गये। वहाँ, 870 लोगों ने आनेलाइन संकल्प पत्र भरकर इस अभियान का समर्थन किया। डूंगर कॉलेज, बीकानेर ने एक डॉक्यूमेंट्री तैयार कर इस अभियान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

मध्यांचल

- ❖ दिल्ली अणुव्रत समिति की ओर से कड़कड़हूमा कोर्ट परिसर, कस्तूरबा नगर चौक, बांके बिहारी पार्क, झिलमिल क्षेत्र में बैनर लोकार्पण, नुकड़ नाटक, पैफलेट वितरण, शपथ ग्रहण समारोह तथा संकल्प पत्र भरवाने के कार्यक्रम हुए। टोहाना अणुव्रत समिति की ओर से विधाता पब्लिक स्कूल में 'ईको फ्रेंडली दीपावली' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- ❖ अणुव्रत समिति सिरसा के आह्वान पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेर ने प्रदूषण रहित दीपावली के संदेश से प्रेरित आयोजन किया। अणुव्रत समिति हिसार ने अणुव्रत आंदोलन पर आधारित कार्यक्रम आयोजित किया। ज्योति स्कूल में साध्वीश्री तरुणयशा जी ने 'ईको फ्रेंडली दीपावली' का संकल्प दिलाया।
- ❖ अणुव्रत समिति इंदौर एवं कोठारी कॉलेज की ओर से तेरापंथ भवन में मुनिश्री कमलकुमार जी के सान्निध्य में 'ईको फ्रेंडली दीपावली' विषय पर संगोष्ठी हुई।



• दिल्ली •



• इंदौर •



अणुव्रत समाचार



• हिसार •



• सिरसा •



• तेहाना •

पूर्वाचल

- अणुव्रत समिति गुवाहाटी ने शहर के विभिन्न मार्गों से रैली निकाली। अणुव्रत समिति इस्लामपुर ने जागरूकता रैली निकाली, बैनर लगाये तथा लोगों से आतिशबाजी न करने के शपथ पत्र भरवाये। अणुव्रत समिति खारुपेटिया ने भी जागरूकता अभियान चलाया।



• सिलीगुड़ी •



• इस्लामपुर •



• गुवाहाटी •

- सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति ने वरिष्ठ नागरिक संघ और लॉयंस क्लब के साथ मिलकर कार्यक्रम किये। आतिशबाजी रहित दीपावली का संदेश देने वाले बैनर शहर में चर्चा का विषय बने रहे। फारबिसबंज अणुव्रत समिति ने तेरापंथ भवन में डॉ. साधीश्वरी पीयूष प्रभाजी के सान्निध्य में 'ईको फ्रेंडली दीपावली' विषय पर संगोष्ठी, लेख प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा लघु नाटिका का आयोजन किया। इसमें महिला मंडल की भी सहभागिता रही।





● फारबिसगंज ●



● मुम्बई ●



● खारखपेटिया ●



● बारडोली ●

पश्चिमांचल

- ❖ अणुव्रत समिति मुम्बई, महिला मंडल और कन्या मंडल ने भायंदर, दक्षिण मुम्बई, चेंबूर, पालघर, वापी, गोरेगांव, मलाड, जोगेश्वरी क्षेत्र में बैनर लोकार्पण, शपथ ग्रहण समारोह, प्रचार-प्रसार रैली, गोष्ठियों, नुककड़ नाटक, रंगोली बनाने के साथ ही लोगों से आतिशबाजी न करने के संकल्प पत्र भरवाये। अणुव्रत समिति बारडोली, बोइसर और ब्यारा ने भी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। अणुव्रत समिति हैदराबाद तथा अणुव्रत समिति वापी ने बैनर के जरिए 'ईको फ्रेंडली दीपावली' का संदेश पहुँचाया।
- ❖ अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत ने तेरापंथ भवन, उधना ज्ञानशाला एवं तेरापंथ भवन सिटीलाइट ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के साथ सुरक्षित एवं प्रदूषण मुक्त दीपावली मनाने का संदेश दिया। इसमें सैकड़ों बच्चों, युवाओं, पुरुषों और महिलाओं ने भाग लिया। अणुव्रत समिति अहमदाबाद की ओर से शासनश्री साधीश्री सरस्वती जी के सान्निध्य में 'ईको फ्रेंडली दीपावली' के बैनर के लोकार्पण के साथ ही विचार-गोष्ठी व अन्य गतिविधियां संचालित हुईं।



● पालघर ●



● वापी ●





● ब्यारा ●



● बोइसर ●

अणुव्रत समिति उदासर द्वारा शासनश्री कनकरेखा जी ने श्रावक-श्राविकाओं को 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' का संदेश दिया। अणुव्रत समिति बालोतरा ने चरित्र आत्माओं के सान्निध्य में 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' कार्यक्रम में बैनर का लोकार्पण किया। अणुव्रत समिति अजमेर, जसोल व सायरा की ओर से सार्वजनिक स्थानों पर बैनर लगाकर 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' का संदेश जन-जन तक पहुँचाया गया।



● जयपुर ●



● जोधपुर ●

उत्तरांचल

- अणुव्रत समिति जयपुर ने विभिन्न स्थानों पर बैनर लगाकर लोगों को 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' का संदेश दिया।
- अणुव्रत समिति जोधपुर की ओर से तातेड़ सभागार, मंगल योग केन्द्र, राजकीय प्राथमिक विद्यालय में जन शिक्षण संस्थान में आयोजित कार्यक्रमों में 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' के बैनरों का लोकार्पण किया गया। बाद में इन बैनरों को शहर के चुनिंदा स्थानों पर लगाया गया। समस्त वर्गों की ओर से शपथ ग्रहण समारोह भी हुए। सादुलपुर समिति ने दीपोत्सव, फूलों की रंगोली से 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' मनाने का संदेश दिया।
- अणुव्रत समिति कोटा की ओर से सार्वजनिक स्थानों पर वित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जगह-जगह 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' संदेश लिखे बैनर लगाये गये। अणुव्रत समिति, बाढ़मेर के तत्वावधान में लोगों ने 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' की शपथ ली। अणुव्रत समिति पीलीबंगा द्वारा 'ईको फ्रॅंडली दीपावली' थीम पर प्रतियोगिता करायी गयी और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।



● अजमेर ●





● पीलीबंगा ●



● बैंगलुरु ●



● कोटा ●



● मैसूर ●

दक्षिणांचल

❖ बैंगलुरु क्षेत्र में शासनश्री लावण्या श्री जी के सान्निध्य में आतिशबाजी छोड़ो अभियान का प्रचार-प्रसार किया गया। इस दौरान बैनर का लोकार्पण किया गया तथा विचार गोष्ठी भी हुई। राजा राजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में शासनश्री साधीश्री कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में बैनर का लोकार्पण हुआ। तत्पश्चात् बैनर को विशेष स्थानों पर प्रदर्शित किया गया। मैसूर में शासनश्री साधीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में छह स्थानों पर कार्यक्रम हुए।

❖ अणुव्रत समिति विजयवाडा की ओर से जगह-जगह बैनर लगाये गये। अणुव्रत समिति कटक की ओर से कटक नगर निगम तथा गुरुद्वारा गुरु नानक दाता साहब में बैनर लोकार्पण कार्यक्रम हुआ। इसमें बड़ी संख्या में गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया। केसिंगा अणुव्रत समिति ने चारित्रात्माओं के सान्निध्य में सैकड़ों विद्यार्थियों के साथ मिलकर 'ईको फ्रैंडली दीपावली' का संदेश जन-जन तक पहुँचाया।



● कटक ●



● केसिंगा ●



● विजयवाड़ा ●

ऑनलाइन संकल्प पत्र

- अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न समितियों द्वारा कुल 870 व्यक्तियों ने ऑनलाइन संकल्प पत्र भरते हुए 'ईको फ्रैंडली दीपावली' का समर्थन किया।

संकल्प-पत्र

मैं स्वर्ण धोषणा करता हूं कि इस बार निश्चित रूप से दीपावली ईको-फ्रैंडली रूप-रंग में मनाऊंगा। पर्यावरण प्रेमी की तरह पटाखों को कोई महत्व नहीं दूंगा। मैं पर्यावरण संरक्षण के इस महत्वपूर्ण कार्य को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाऊंगा।

आदर, आप भी हमारे साथ Eco Friendly Deepawali की मुहिम से जुड़ें और संकल्प से...

संकल्प लेने हेतु यहां पर Logon करें – www.Anuvibha.org/EcoFriendlyDeepawali

Name _____
Designation _____
City/State _____

नुककड़ नाटक का मंचन

- अणुव्रत समिति दिल्ली, मुम्बई और भुवनेश्वर की ओर से 'ईको फ्रैंडली दीपावली' पर आधारित नुककड़ नाटक का मंचन सार्वजनिक स्थलों पर किया गया।



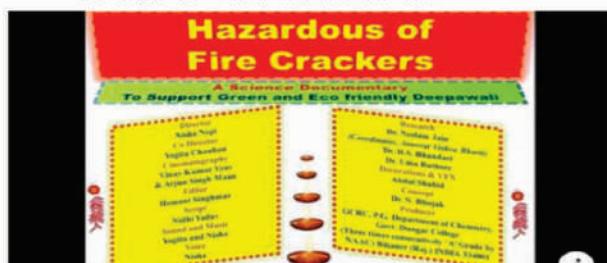
● दिल्ली ●



● मुम्बई ●

डॉक्यूमेंट्री बनायी

- 'ईको फ्रैंडली दीपावली' के विषय एवं भावों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री प्राप्त हुई। ढुंगर कॉलेज, बीकानेर ने एक डॉक्यूमेंट्री तैयार कर इस अभियान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।



● भुवनेश्वर ●





जयपुर

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन

अणुव्रत समिति की ओर से जवाहर सर्किल स्थित प्रेम निकेतन आश्रम में 28 अक्टूबर को अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन किया गया। समिति के निर्वत्मान अध्यक्ष श्री प्रदीप नाहटा ने कार्यक्रम में उपस्थित 20 सिलाई प्रशिक्षणार्थियों को सिलाई कोर्स के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को कार्यकुशलता के आधार पर नौकरी पर रखने का आश्वासन भी दिया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री विमल गोलछा ने आश्वासन दिया कि प्रशिक्षणार्थियों की आजीविका के लिए अणुव्रत समिति पूरा सहयोग करेगी ताकि समाज का हर वर्ग बेहतर जीवन जी सके। उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र हेतु स्थान उपलब्ध कराने के लिए प्रेम निकेतन आश्रम का आभार ज्ञापित किया। आश्रम की ओर से श्रीमती आशा नीलू टाक ने अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।



लाडनूँ

अणुव्रत जल मन्दिर का शिलान्यास

अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंगलपुरा में विद्यार्थियों के लिए अणुव्रत जल मन्दिर का शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मंगलपुरा सरपंच चम्पालाल मेघवाल ने ग्राम पंचायत द्वारा पानी का टैंक बनवाने की घोषणा की। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बैद ने बताया कि अणुव्रत के श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. नथमल बैद एवं स्व. हनुमानी देवी बैद की स्मृति में हनुमानी देवी

नथमल बैद सेवा समिति के सौजन्य से जल मन्दिर का निर्माण करवाया जा रहा है। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री जयपाल शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर मंगलपुरा के उपसरपंच तोलाराम मारोठिया, पूर्व सरपंच दुलीचंद सांखला, बाबूलाल टाक, बंशीधर सूईवाल, राय बहादुर इंदोरिया, डॉ. शिल्पी जैन, रमेश टेलर, अणुव्रत समिति के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अब्दुल हमीद मोयल, उपाध्यक्ष श्रीमती रेणु कोचर, सह-मंत्री कंचन चौरडिया, जीवन विज्ञान प्रभारी श्रीमती अंजना शर्मा, श्रीमती प्रेम बैद सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

वापी

नौनिहालों को बच्चों का देश पत्रिका वितरित

साध्वीश्री चरितार्थ प्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला शिविर के अन्तर्गत अणुव्रत समिति द्वारा बच्चों को मासिक पत्रिका 'बच्चों का देश' वितरित की गयी। इस अवसर पर पत्रिका के वर्ष भर के प्रायोजक श्रीमती सीमा पीयूष कच्छारा एवं श्रीमती सुमन दिनेश कच्छारा का सम्मान सभा अध्यक्ष श्री संपतलाल कोठारी, निर्वत्मान अध्यक्ष श्री रमेश कोठारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री विमल झाबक, तेयुप मंत्री श्री कुलदीप कोठारी, महिला मंडल मंत्री श्रीमती सुनीता गुलगुलिया, ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती हेमा मेहता, जीवन विज्ञान प्रभारी श्रीमती चंदा दुग्गड़ ने किया।

हिसार

जीवन विज्ञान सिखाता है जीने की कला

अणुव्रत समिति की ओर से तेरापंथ भवन मॉडल टाउन में जीवन विज्ञान विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी श्री तरुणयशा जी ने अणुव्रत ज्योति स्कूल के बच्चों को ताड़ासन, पद्मासन, महाप्राण ध्वनि, ज्ञान मुद्रा जैसे अनेक आसन करवाये तथा इनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। शासन श्री साध्वी श्री यशोधरा जी ने कहा कि जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाता है तथा बच्चों को संस्कारी बनाता है। अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री कुंदनलाल गोयल ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री सत्यपाल शर्मा ने किया। इस अवसर पर टीपीएफ की अध्यक्ष श्रीमती प्रीति जैन, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती योगिता जैन समेत कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अंत में बच्चों को ज्ञानवर्धक पुस्तकें व मिठाइयां वितरित की गयीं।

हैदराबाद

चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

अणुव्रत समिति की ओर से रा.उ.मा. विद्यालय, बोलारम में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री काव्यलता जी ने



अणुव्रत समाचार



विद्यार्थियों को पर्यावरण सुरक्षा के लिए विशेष जागरूकता रखने तथा अपने जीवन को उज्ज्वल व संस्कारित करने का आह्वान किया। समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश एच भंडारी ने आगंतुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर गवर्नरमेंट हाई स्कूल बोलारम के विजेता विद्यार्थियों को समिति के उपाध्यक्ष श्री अनिल कातरेला के सौजन्य से पुरस्कृत किया गया।

इसके साथ ही ऑनलाइन चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें करीब 61 प्रतियोगियों ने भाग लिया। सभी वर्ग के विजेताओं को नीरज जी जयसिंह जी सुराणा हैदराबाद के सौजन्य से पुरस्कृत किया गया। प्रख्यात चित्रकार श्री पी श्रीनिवास ने प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका निभायी।



बैंगलुरु चिल्ड्रन'स पीस पैलेस का अवलोकन

अणुव्रत समिति बैंगलुरु के 12 सदस्यीय दल ने 10 नवम्बर को अणुविभा मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस का अवलोकन किया। सभी सदस्यों ने बालोदय दीर्घाओं को देखकर बड़े प्रभावित हुए और बालोदय शिविर में बंगलुरु से बच्चों के ग्रुप को लाने की इच्छा प्रकट की। अणुव्रत समिति बैंगलुरु के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पोरवाल ने सम्मति पुस्तिका में लिखा— इसकी जितनी तारीफ करें, कम है। दल में समिति के मंत्री श्री माणकचन्द संचेती, उपाध्यक्ष श्री देवराज राइसोनी, संगठन मंत्री श्री निर्मल कुमार पोकरणा, प्रचार प्रसार मंत्री श्री चंद्रशेखरराया, सदस्य श्री धर्मेन्द्र बरलोटा, श्री रूपचंद देसरला, श्री जवरीलाल दुगड़ एवं महिला सदस्य श्रीमती शर्माला बरलोटा, श्रीमती वंदना दुगड़, श्रीमती शांति देहरला एवं कुमारी दिया बरलोटा शामिल थे।



6 नवम्बर को महासभा अध्यक्ष श्री सुरेश गोयल का अणुविभा मुख्यालय में आगमन हुआ। अणुविभा न्यासी श्री गणेश कच्छारा एवं सहमंत्री श्री जगजीवन चोरडिया ने श्री गोयल का अणुव्रत साहित्य भेंट कर स्वागत किया और बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन कराया। सम्मति पुस्तिका में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री गोयल ने लिखा— अति सुन्दर, मनोरम, ज्ञान स्थान।



गुवाहाटी से एक विशिष्ट दल 23 अक्टूबर को अणुविभा का बालोदय केन्द्र देखने राजसमंद पहुंचा। इस दल में अणुव्रत समिति गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री बजरंग डोसी, पूर्व अध्यक्ष श्री निर्मल सामसुखा, सदस्य भ्राताद्वय श्री मानमल और नरेन्द्र लोढ़ा, गुवाहाटी सभा के अध्यक्ष श्री झंकारमल दुधोड़ीया, उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल कुंडलिया आदि 25 व्यक्ति शामिल थे। सभी ने बालोदय दीर्घाओं और यहां से संचालित होने वाली बाल केंद्रित प्रवृत्तियों को देख समझ कर उनकी खुले दिल से सराहना की।

शोक संवेदना



मिलनसार एवं संघनिष्ठ, अणुव्रत समिति जालना के मंत्री श्री अजीत कुमार जी सेठिया का आकस्मिक निधन परिजनों व अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए बहुत बड़ी क्षति है। अणुव्रत विश्व भारती परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि व उनके आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

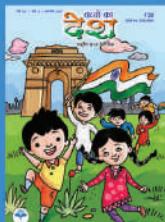


अणुविभा की दो राष्ट्रीय पत्रिकाओं



आहिसक - नेतृत्व चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत



बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

के सदस्य बनिए और पाइए...

12 माह पर

13 अंक

36 माह पर

39 अंक

60 माह पर

65 अंक

120 माह पर

130 अंक

अणुव्रत समितियों के लिए

10 सदस्यता पर 20 ग्राम चाँदी का
सिक्का ('अणुव्रत' के लिए) एवं

10 ग्राम ('बच्चों का देश' के लिए)

★ सदस्यता शुल्क की कुल राशि 10 हजार ('अणुव्रत'
के लिए) एवं 5 हजार ('बच्चों का देश' के लिए) या
इससे अधिक होने पर 10% की छूट।

★ सर्वाधिक सदस्य बनाने वाली 10 अणुव्रत समितियों
को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

बैंक विवरण

ANUVRAT VISHWA
BHARATI SOCIETY

बच्चों का देश

IDBI BANK
Rajsamand
A/c - 104104000046914
IFS Code - IBKL0000104

अणुव्रत पत्रिका

CANARA BANK
DDU Marg, New Delhi
A/c - 0158101120312
IFS Code - CNRB0000158

सदस्यता शुल्क

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	600	300
3 वर्ष	1500	800
5 वर्ष	2500	1200
10 वर्ष	5000	2400
15 वर्ष *	11000	7000

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	600	300
3 वर्ष	1500	800
5 वर्ष	2500	1200
10 वर्ष	5000	2400
15 वर्ष *	11000	7000

*15 वर्ष 'योगक्षेत्री' – सदस्य का नाम एवं पता फोटो सहित
'अणुव्रत' पत्रिका में। बार प्रकाशित किया जाएगा।



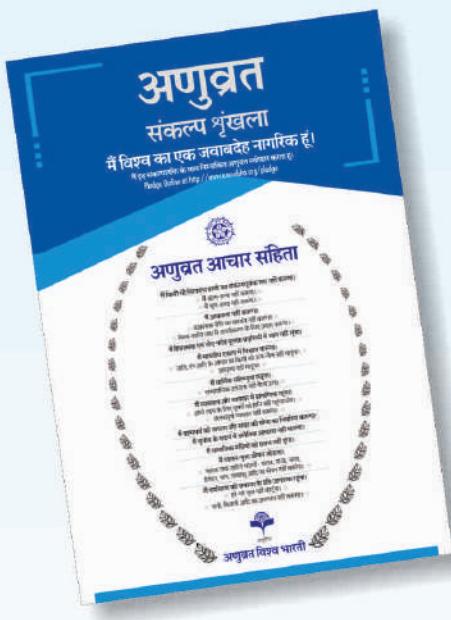
अणुव्रत विष्व भारती सोसायटी

सम्पर्क : +91 98112 42365, +91 91166 34512, +91 91166 34515

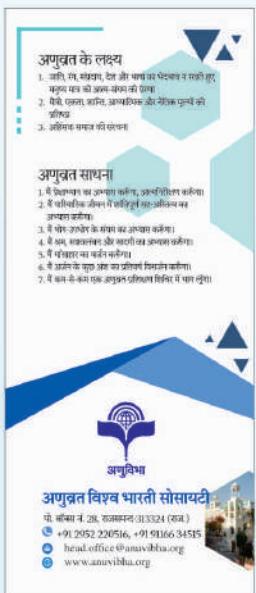
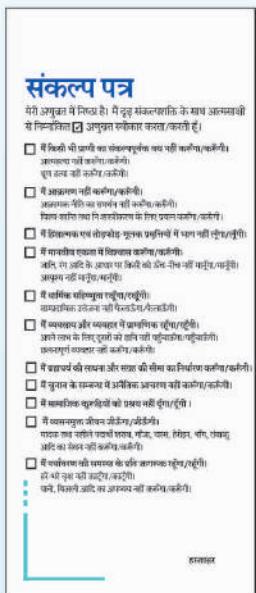
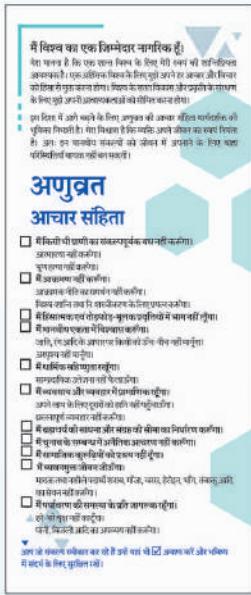
सौजन्य : श्री कन्हैयालाल राजेश मयुर चिप्पड़, बंगलुरु



अणुव्रत संकल्प शृंखला



अणुव्रत दिवस के अवसर पर भीलवाड़ा में अणुव्रत अनुशास्ता के सानिध्य में इस अभियान का शुभारंभ किया गया।



अणुव्रत आचार संहिता अणुव्रत दर्शन की आत्मा है। सात दशक लम्बे इस आंदोलन में लाखों व्यक्तियों ने अणुव्रत नियमों को स्वीकार कर इन्हें अपने जीवन में उतारा है। अणुविभा द्वारा 'अणुव्रत संकल्प शृंखला' के रूप में एक अभियान प्रारंभ किया गया है। इसके माध्यम से शांति व अहिंसा की इस संहिता से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

ये संकल्प ऑनलाइन माध्यम से भी लिये जा सकते हैं -

<https://www.anuvibha.org/pledge>

अथवा क्यूआर कोड स्कैन करें...



अणुव्रत समितियाँ इस अभियान को गति देने के लिए एवं अणुव्रत का ब्रोशर मंगवाने के लिए 'अणुव्रत संकल्प शृंखला' के राष्ट्रीय संयोजक श्री राकेश नौलखा (9414820022) से सम्पर्क करें।

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
December, 2021

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/11/2021
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month



Architectural marvels across 46 countries worldwide have used our stones.
We are proud to have contributed to the architectural world with these concept stores and outlets in Jaipur:



India's first concept store
for stone display



Finest Selection of
Premium Tiles



Rajasthan's Largest Decorative
Lights Display



India's best collection of
Landscape Artefacts

The experience of three decades has helped us translate our vision for providing unparalleled lifestyle into -

The Urban Village by Galaxy Enclave, a fully integrated township next to Jaipur's business hub.

राजस्थान की राजधानी जयपुर की विश्व स्तरीय टाउनशिप में
बनाये अपने सपनों का आशियाना



RERA No: RAJ/P/2017/448; RAJ/P/2020/1364



Modern Day Luxuries In Harmony With Nature

250 feet SEZ Road, Kalwara, Ajmer Road, Jaipur

TO KNOW MORE, CALL US ON

+91-90791-23572/ 88755-84455/ 88754-08875 or write to info@urban-village.co.in

www.urban-village.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुब्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन